

उठो, अब भी सवेरा है

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

सत्र : 2006 - 2007

आराध्या



हे हंसवाहिनी ! ज्ञानदायिनी, अम्ब, विमल, मति दे ।

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : 2006-2007



संरक्षक

श्री ओमशंकर त्रिपाठी

मुख्य संपादक

श्री दुर्गेश वाजपेयी (हिन्दी)

श्रीमती शारदा राव (अंग्रेजी)

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,
प्रबल आत्मविश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता

एवं

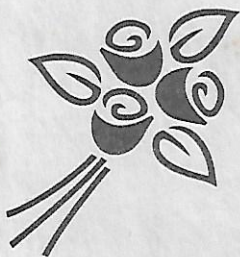
निश्चीम भाव संपन्ना मनः शक्ति का

अर्जन कर,

अपने जीवन को निस्पृह भाव से

भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही

हमारा परम साध्य है।



अनुक्रम

1.	अपनी बात (संपादकीय)	- श्री दुर्गेश वाजपेयी	7
2.	फिर से देश गुलाम हो गया (कविता)	- श्री ओमशंकर त्रिपाठी	8
3.	वार्षिक आख्या	-	11
4.	यज्ञोपवीत एवं गायत्री	- डॉ० मनोज शुक्ल	17
5.	मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है। (कविता)	- उज्ज्वल दीप	21
6.	क्या आप जानते हैं	- इलेश शुक्ल	22
7.	नेता का रासायनिक विश्लेषण	- अमृत राज पाठक	23
8.	मच्छर की वीरता (कविता)	- अमृत राज पाठक	24
9.	अंतरिक्ष में प्रथम	- अभय प्रताप सिंह	25
10.	हमारा विद्यालय (कविता)	- आकाश सचान	26
11.	दुनिया की अनोखी झीलें	-	26
12.	सकारात्मक विचारों का जादू	- अमित पाल	27
13.	हमारा देश भारत (कविता)	- अभिनंदन कुमार	30
14.	राष्ट्रभाषा हिन्दी की दुर्दशा (कविता)	- अमृत राज पाठक	31
15.	बोध वाक्य	- गणेश जी ओमर	32
16.	चुटकुले	- रोहित सिंह	33
17.	ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति (कविता)	- अभय प्रताप सिंह	34
18.	नेता वेदना (कविता)	- अभय प्रताप सिंह	35
19.	समय का महत्त्व (कविता)	- अभिषेक रंजन	35
20.	कहाँ गया हिटलर का खजाना	- आदित्य प्रताप	36
21.	यदि ऐसा होता (कविता)	- मयंक मिश्र	37
22.	सामान्य ज्ञान	- मयंक मिश्र	38
23.	अद्भुत आश्चर्य	- आदित्य प्रताप	39
24.	ऐसा क्यों होता है	- आदित्य प्रताप	40
25.	प्रेम ही ईश्वर है	- सनी रंजन	41
26.	वाणी	- संजीव कुमार शुक्ल	41
27.	मानव जीवन का लक्ष्य	- अंकुर दीक्षित	42
28.	आरक्षण	- अंकुर दीक्षित	43
29.	महँगाई (कविता)	- कुलदीप पाल	44
30.	आधुनिक छात्र	- अंकुर पटेल	45
31.	जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना	- अभिनव शुक्ल	46
32.	भडक उठेगा भारत देश	- प्रांजुल तिवारी	48
33.	ऐसा क्यों होता है	- आदित्य जाह्नवी	49
34.	बापू से कह देना (कविता)	- अभिषेक रंजन	49
35.	परीक्षा (कविता)	- रोहित सिंह	50
36.	ऊपरी चमक का भ्रम	- रोहित सिंह	51
37.	डॉ० चन्द्रशेखर वेंकटरमन	- प्रणव त्रिपाठी	52
38.	तीन बातें	- अखिल गंगवार	52
39.	हँसना मना है	- अखिल गंगवार	53
40.	कर्म का आनन्द	- विकास मिश्र	54
41.	बिल्ली का सपना (कविता)	- आदित्य शेखर	54
42.	ज्ञान की ग्यारह बातें	- मयंक वाजपेयी	55
43.	मंजिल	- यश अवस्थी	56
44.	व्यक्तित्व निर्माण में नैतिकता	- यश अवस्थी	56
45.	सफलता के सात सूत्र	- अभय प्रताप सिंह	57
46.	अमूल्य है माँ	- अभय प्रताप सिंह	59
47.	गाँव की याद	- संकल्प त्रिवेदी	60
48.	पानी रे पानी	- पीयूष त्रिवेदी	60
49.	मंजिल की ओर (कविता)	- पीयूष त्रिवेदी	60
50.	माँ	- शिवम त्रिपाठी	62
51.	क्रिकेट दुनिया	- रोहित पाण्डेय	63

52.	हिन्दुत्व में सुधार की चुनौती	—	पीयूष त्रिवेदी	64
53.	कलाम से सात सवाल	—	दिव्यांशु त्रिपाठी	65
54.	भास्वर भारत	—	अर्पण श्रीवास्तव	67
55.	पं० दीनदयाल निबंध प्रतियोगिता — परिणाम	—	अर्पण श्रीवास्तव	68
56.	ब्रेन मैपिंग	—	आशीष बुन्देला	68
57.	स्वतंत्र भारत का स्वप्न (कविता)	—	शशांक मोहन दुबे	69
58.	दया-भाव	—	अजय सिंह रावत	70
59.	पहेलियाँ	—	रोहित सिंह	71
60.	ब्रह्ममुहूर्त में जागरण का महत्त्व	—	रोहित सिंह	71
61.	चार का पहाड़ा (कविता)	—	—	72
62.	रक्त बना सिंदूर	—	अभय प्रताप सिंह	73
63.	अंकों का खेल	—	पीयूष दीक्षित	73
64.	फिल्म रोल के आविष्कारक जार्ज ईब्टमैन	—	विमलेश कुमार	74
65.	जीवन एक गणित है	—	विमलेश कुमार	75
66.	भवित की महिमा	—	विमलेश कुमार	75
67.	विश्व की चौथी बड़ी सेना हमारी	—	शुभंकर	76
68.	ऐसी बातें कभी न भूल	—	प्रेमराज	77
69.	सफलता की सही उपाय	—	शिवम त्रिपाठी	77
70.	भिखारी की आत्मकथा	—	शिवम त्रिपाठी	78
71.	तीन बंदर सिंकन्दर	—	आशीष सिंह बुन्देला	79
72.	एंथोनी के जीवन में सात अंक का प्रभाव	—	आशीष सिंह बुन्देला	80
73.	जीव विज्ञान में महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले भारतीय	—	रोहित पाण्डेय	80
74.	भ्रष्टाचार (कविता)	—	मोहित मिश्र	81
75.	ओजोन परत का क्षरण व उसके दुष्परिणाम	—	अर्जुन सिंह	83
76.	सूरज की दुकान (कविता)	—	अविनाश कुमार	85
77.	जाड़ों के दिन (कविता)	—	अविनाश कुमार	86
78.	आने वाली पीढ़ी में (कविता)	—	कृष्ण राज रंजन	87
79.	बेटी की व्यथा (कविता)	—	रोहित सिंह	88
80.	गणतंत्र दिवस (कविता)	—	सुभाष यादव	89
81.	जीवन का लक्ष्य	—	पीयूष दीक्षित	90
82.	मूरख हृदय न चेत	—	शुभम गुप्त	91
83.	आप कौन सी पुतली के साथी हैं	—	अनिरुद्ध कुमार	92
84.	विचित्र संसार	—	शशांक कुमार	93
85.	विज्ञान की शाखाएँ	—	गणेश जी ओमर	94
86.	कम्प्यूटर महिमा (कविता)	—	संजय सिंह राठौर	95
87.	क्रिकेट का जुनून (कविता)	—	पवन सिंह राठौर	96
88.	आने वाले दिन बदलेंगे (कविता)	—	अनुज सिंह राठौर	96
89.	दो और दो पाँच (कविता)	—	आकाश सचान	97
90.	पर्यावरण (कविता)	—	आकाश सचान	97
91.	देखो हँस न जाना	—	आकाश सचान	98
92.	अचरज	—	गोविन्द सिंह	99
93.	वृक्ष के उद्गार (कविता)	—	रवि कुमार कुँवर	100
94.	काश! हवा में हम भी उड़ते (कविता)	—	देवव्रत सिंह	100
95.	जनता नेता की गुलाम (कविता)	—	अमित कुमार	101
96.	मेरी लेखनी (कविता)	—	शूरवीर	101
97.	जानकारी (कविता)	—	आलोक कुशावाहा	102
98.	हिन्दी महिमा (कविता)	—	मोहित मिश्र	102
99.	रात के अंधेरे में कैसे उड़ते हैं पक्षी	—	अविनाश कुमार	103
100.	यमराज से मुलाकात (कविता)	—	शिवम अग्रवाल	103
101.	मैं स्वाति बूँद हूँ (कविता)	—	आलोक कुशावाहा	105
102.	चिन्ता	—	अतिन पाण्डेय	106
103.	आधुनिक राजनीति	—	पीयूष दीक्षित	107
104.	हाईस्कूल परीक्षा-2007 में प्रविष्ट छात्रों की सूची	—	—	108
105.	इण्टरमीडिएट परीक्षा-2007 में प्रविष्ट छात्रों की सूची	—	—	110
106.	आचार्य कुल	—	—	112

English Section

1. Editorial	- Sharda Rao	1
2. Year 2006 - A saga of events	- Prafulla Shukla	2
3. Is Honesty the best policy	- Shivam Tripathi	3
4. The place of women in modern India	- Vikas Mishra	4
5. Swami Vivekanand's Mission to India	- Madhukar Tiwari	5-7
6. Grammar family	- Ganesh Jee Omar	8
7. Brain Drain	- Abhay Pratap Singh	8
8. May I	- Raj Gaurav Katiyar	9
9. Laloo Prasad joins Microsoft	- Raj Gaurav Katiyar	10
10. Never look down upon others	- Ashish Yadav	11
11. God can do every thing	- Ankur Katiyar	11
12. Failure is the pillar of success	- Ankur Katiyar	12
13. Build self - confidence	- Shubham Gupta	12
14. Dream come true	- Raj Gaurav Katiyar	13
15. Those who do not know how to fight worries, die young	- Nishant	13
16. Aesthetics	- Sameer Dubey	14
17. The legacy of my school	- Nishit Kumar	14
18. Tips for charismatic communication	- Piyush Trivedi	15
19. My best friend	- Shivam Tripathi	16
20. Companionship of Books	- Pranav Tripathi	16
21. The problem of Unemployment in India	- Shobhit Awasthi	17
22. The Moon	- Padam Ji Omar	18
23. My Memories	- Priyam Sachan	19
24. The role of youth in shaping India	- Alok Yadav	20
25. Peace	- Yash Awasthi	20
26. Parents - God's Gift	- Abhishek Ranjan	21
27. The value of sports	- Abhishek Ranjan	21
28. As you dream it	- Sujeet Ranjan	22
29. The biological effect of music	- Suraj Patel	22

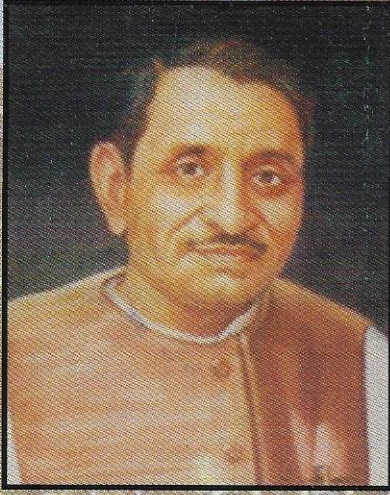
30. India in the past and present	-	Arpan Shrivastava	23
31. Tulsi Jayanti Celebration	-	Shivam Tripathi	23
32. The Only Option	-	Suraj Patel	24
33. Money	-	Shubham Singh	24
34. Importance of books	-	Vishal Pandey	25
35. The New Microsoft Vista	-	Abhay P.S. Sengar	25
36. Extra - Knowledge	-	Nishant	27
37. How to call a winner from a loser	-	Rohan Kumar	27
38. Hanuman the scholar	-	Shashank Tiwari	28
39. The Mango	-	Shashank Tiwari	29
40. Distribution of our nature and culture	-	Ajay Singh Rawat	30
41. School	-	Ankur Patel	30
42. Corruption a great problem in India	-	Ankur Dixit	31
43. A little knowledge is dangerous	-	Ankur Dixit	31
44. Superstition	-		32
45. Faith is life	-	Shivam Agarwal	33
46. Contemplation	-	Sanjeev Kumar	33
47. A Motivation	-	Vivek Joshi	34

हिन्दी वर्ग

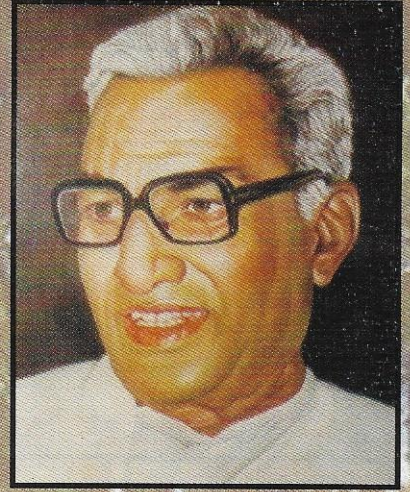


पुस्तक

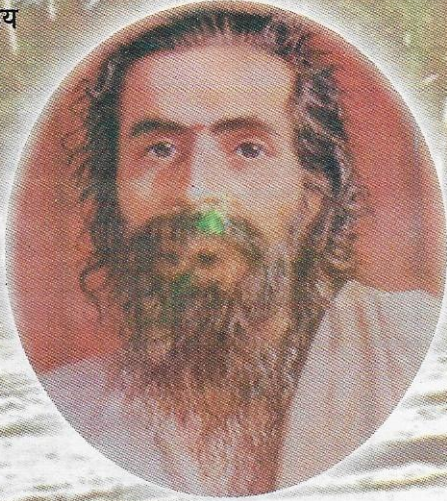
हमारी - प्रेरणा



पं० दीनदयाल उपाध्याय



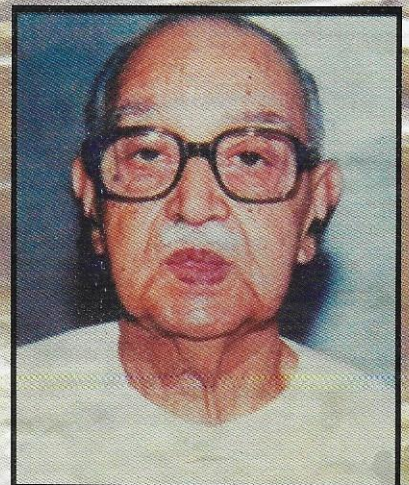
श्री भाउराव देवरस



पूज्य गुरुजी

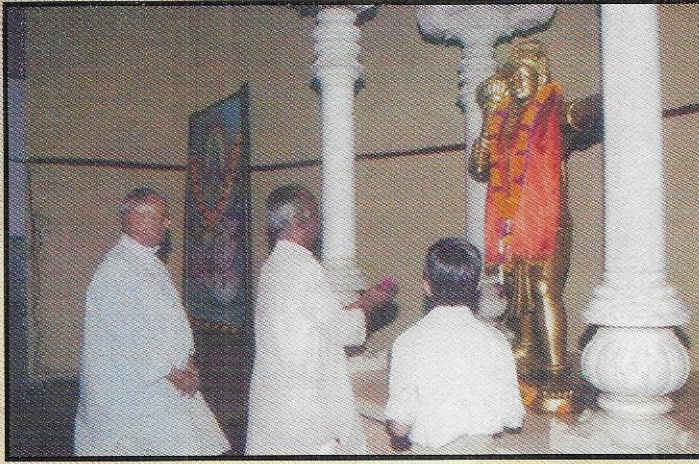


ममतामयी बूजी



श्रद्धेय बैरिस्टर साहब

हमारा वार्षिकोत्सव



'जय जय जय हनुमंत हठीले'
आंजनेय का वन्दन करते हुए
मुख्य अतिथि
श्री के० एन० गोविन्दाचार्य जी



'भारति जय-विजय करे !'
भारत माता के चरणों में पुष्पार्पण
करते हुए श्री गोविन्दाचार्य जी



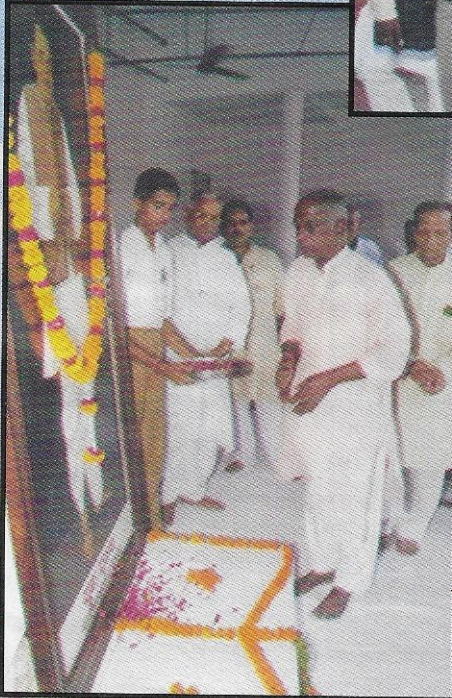
'वरदे वीणा वादिनि वर दे !'
सरस्वती जी के चित्र पर पुष्पार्पण
करते हुए श्री गोविन्दाचार्य जी



‘तप कर चन्दन करें धरा को’

प्रेरणा-पुरुष पं० दीनदयाल
उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्पार्पण
करते हुए श्री गोविन्दाचार्य जी, साथ
में प्रधानाचार्य जी व तरुण भारती
के मंत्री चि० सौरभ दुबे ।

**‘खबरनवीसों से धिर जाते
उत्तर सहज सरल दे जाते’
पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर
देते हुए श्री गोविन्दाचार्य जी**



‘युग-दधिचि को नमन करें हम’

वार्षिकोत्सव के मंच पर पंडित जी के चित्र को नमन

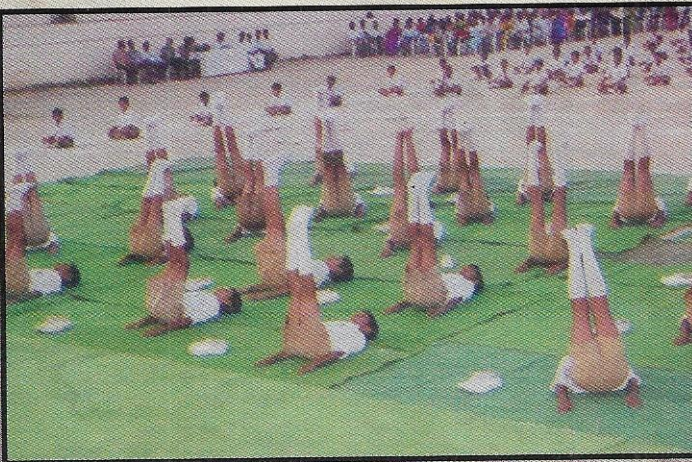
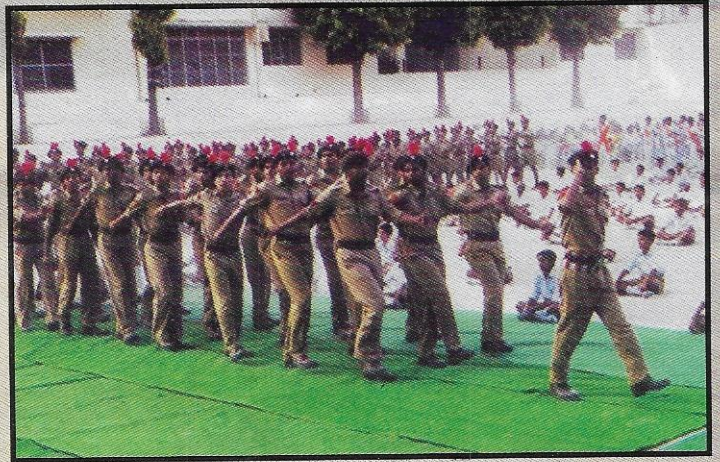


‘स्वागत है आपका !’

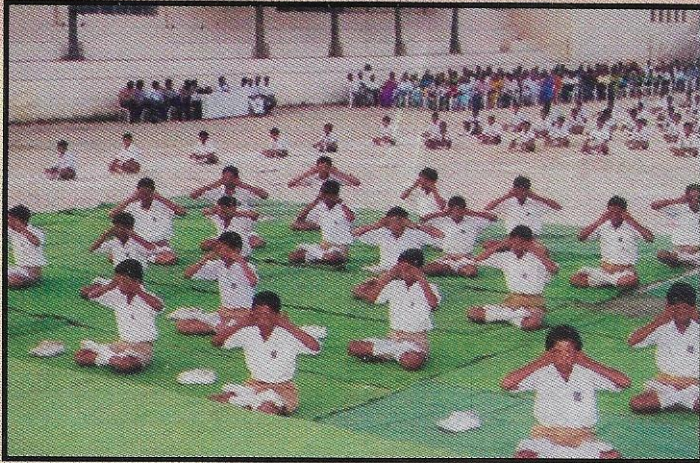
प्रबंध समिति के अध्यक्ष
डॉ ज्ञानचन्द्र अग्रवाल का
स्वागत करते हुए
प्रधानाचार्य
श्री ओमशंकर त्रिपाठी ।

‘वीर तुम बढे चलो!’

एन० सी० सी० छात्रों
का सुन्दर पथ-संचलन

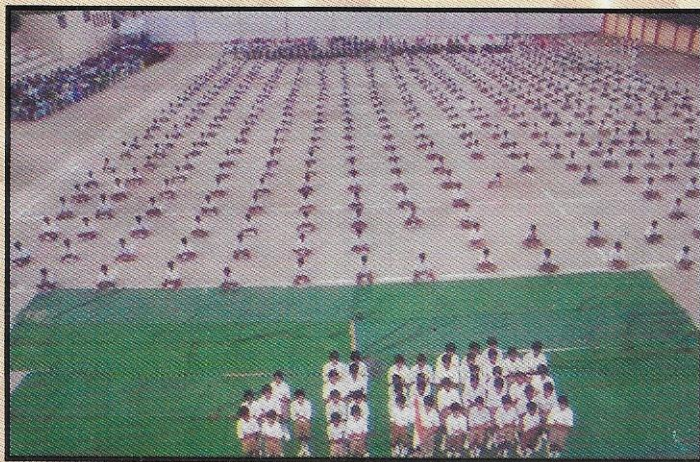
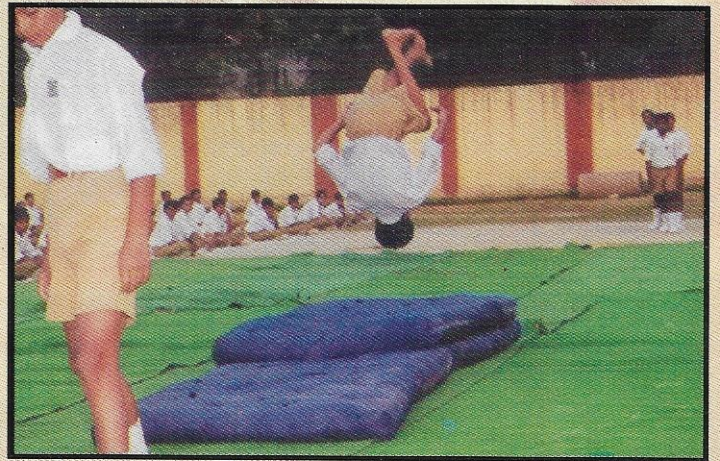


वार्षिकोत्सव के अवसर
पर योगासन करते छात्र

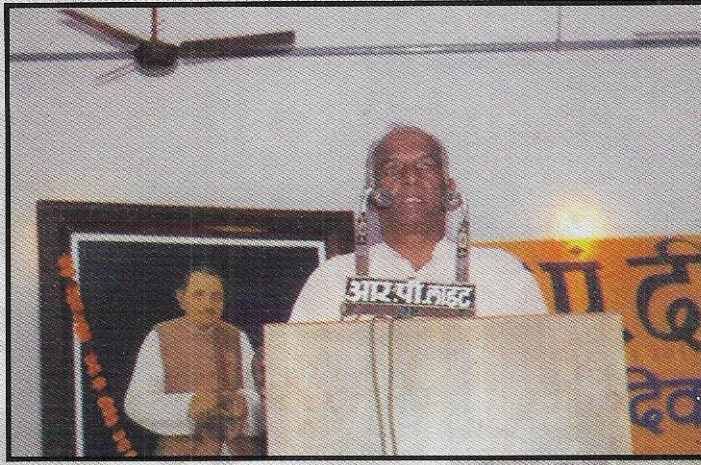


वार्षिकोत्सव के अवसर पर
योगासन करते छात्र

जिमनास्टिक का प्रदर्शन करते
हुए छोटी कक्षाओं के छात्र



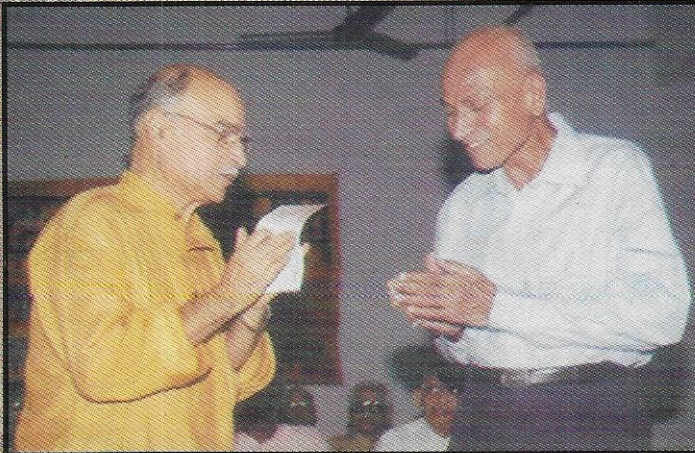
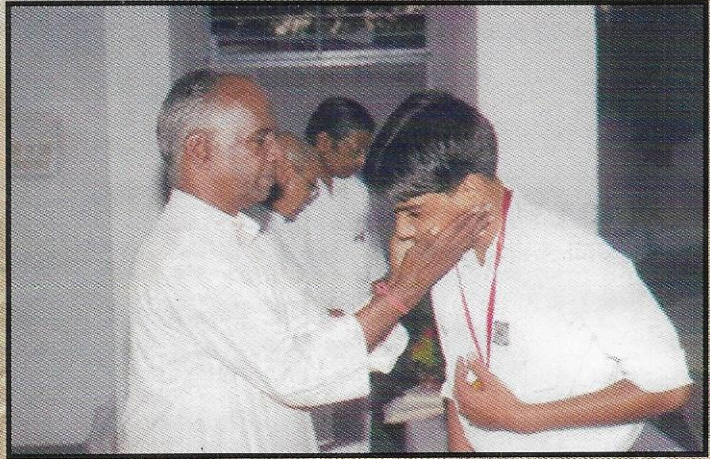
अट्टलिका से लिया गया
प्रांगण का विहंगम दृश्य :-
पंक्तिबद्ध बैठे छात्र



वार्षिकोत्सव के अवसर पर
श्री गोविन्दाचार्य जी का
सारगर्भित उद्बोधन

सरनेह पुरस्कार -

हाईस्कूल परीक्षा - २००६ में
विद्यालय में सर्वोच्च अंक
प्राप्तकर्ता चि० मृत्युंजय कटियार
को पुरस्कृत करते हुए
श्री गोविन्दाचार्य जी



श्री ओमप्रकाश जी भार्गव से
विद्यालय के निर्धन छात्रों
की सहायतार्थ
धनराशि का चेक प्राप्त
करते हुए मा० श्री वीरेन्द्र जी



दीक्षान्त समारोह

द्वादश कक्षा के दीक्षान्त समारोह
कार्यक्रम में
मा० श्री रवि कुमार जी,
डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल
डा० ईश्वर चन्द्र गुप्त
मा० श्री वीरेन्द्र जीत सिंह
व अन्य अतिथि गण

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विदेश
विभाग के सह संयोजक
मा० श्री रविकुमार जी
का स्वागत करते हुए विद्यालय
प्रबंध समिति के
सचिव मा० श्री वीरेन्द्र जी



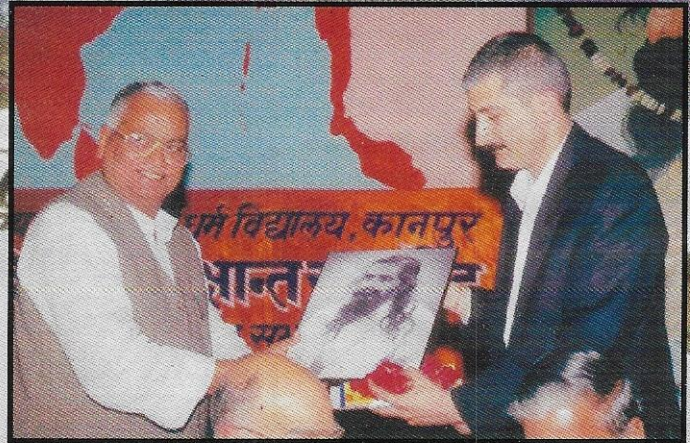
स्थापना दिवस पर
मा० श्री रविकुमार जी का
अभिनन्दन करते हुए
प्रधानाचार्य जी



दीक्षान्त समारोह में छात्रों को सम्बोधित करते हुए मा० श्री रविकुमार जी

दीक्षान्त समारोह

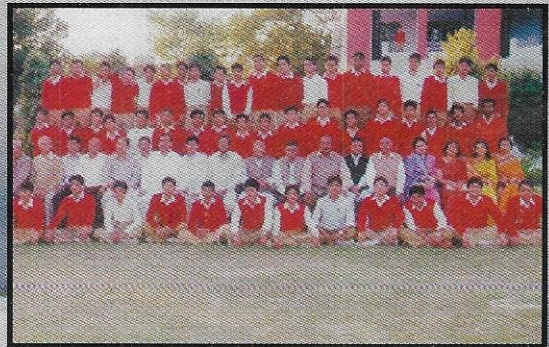
कैरियर काउंसलर श्री विशाल खरे को सम्मानित करते हुए प्रधानाचार्य जी



विदाई की बेला



विदाई समारोह में द्वादश 'क' कक्षा के छात्रों का समूह छायांकन



विदाई समारोह में द्वादश 'ख' कक्षा के छात्रों व अध्यापकों का समूह छायांकन

अपनी-बात

नीराजन के आवरण पृष्ठ का शीर्षक है - "उठो, अब भी सवेरा है।" परमार्थ के विचारों से युक्त उदात्त भावों का सवेरा, ज्ञान का सवेरा, भक्ति का सवेरा, प्रगति का सवेरा। इस प्रभात काल में जागो तो जीवन का सार्थक्य अनुभव होगा। अज्ञान का अंधकार समाप्त होता जा रहा होगा, तृष्णा-तमिस्रा मोह की चादर ओढ़े मुँह छिपाये भागी चली जा रही होगी। ऋग्वेद के अग्निसूक्त गुनगुनाते हुए खग-वृन्द सभी को अन्तः वाह्य विशुद्ध कर देंगे। इस प्रभातकाल में प्रेम और शान्ति की शीतल स्रोतस्विनी होगी जो दुनिया के नाना प्रपंचों से विरक्त हुए वीतरागियों को आप्यायित करेगी। यहीं ज्ञान का विभाकर उदयाचल से उदित होगा और योगियों को मुदित कर देगा।

यह प्रभातकाल ऐसा है जो कभी भी घटित हो सकता है। जब जागो तब सवेरा, परन्तु ध्यान रहे यह सवेरा बहिर्जगत में न होगा, न ही चर्म चक्षुओं से दिखाई देगा। यह प्रभात अन्तःकरण में होगा और रोम-रोम झंकृत कर देगा। इस प्रभातकाल में जागने के लिये साहस चाहिये, त्याग चाहिये। कबीर में वह साहस था, वे कहते हैं -

"सुखिया सब संसार है, खावै अरु सोवै।

दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।"

इसलिये जागरण की वेला में जागो। और जागरण की वेला हमेशा है। ऐसा कोई क्षण नहीं जब तुम जाग न सको। ऐसा कोई पल नहीं जब तुम पलक न खोल सको। आँखें बन्द किये हो यह तुम्हारा निर्णय है। आँख खोलना चाहो तो इसी क्षण क्रांति घट सकती है।

एक और जरूरी बात जो छूटी जा रही है, वह है कबीर की बात। उन्होंने कहा है "दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।" वे कहाँ जाग रहे हैं और क्यों रो रहे हैं? कबीर को संसार की असारता का ज्ञान हो गया था। वे देखते थे कि लोग काल के गाल में समाते जा रहे हैं लेकिन मोह, माया, हिंसा, द्वेष और अहंकार को अंतिम समय तक नहीं छोड़ते हैं इसलिये वे रोते हैं और जागते हैं ज्ञान के प्रभात में।

ईश्वर हमें ऐसे ही प्रभातकाल में जाग जाने के लिये प्रेरित करें।

- दुर्गेश वाजपेयी

फिर से देश गुलाम हो गया

सभ्यता, विकास और सम्मान के शिखर पर समासीन हमारा देश भारत आज अपनी चमक को धूमिल कर बैठा है। देश की चमक-स्फुलिंग पर चढ़ी रज को हटाने वाली इस सुंदर कविता में अतीत का गौरव गान भी है और वर्तमान के प्रति विक्षोभ भी।

— संपादक

मेरा देश गुलाम हो गया।

मैं सपनों के स्वर्ग देखता हुआ सुबह से शाम हो गया

मेरा देश गुलाम हो गया

फिर से देश गुलाम हो गया

अपना देश गुलाम हो गया।

आजादी की बजी नफीरी तन से हटा लिबास फकीरी

पोर-पोर भर गया हौसला रोम-रोम पर सजी अमीरी

जाने किसकी नजर लग गयी सबका काम तमाम हो गया।1।

मेरा देश गुलाम हो गया।

यह भारत मेरा भारत है इस पर मैंने जनम लिया है।

खाकर जिसका अन्न सुधा सम नीर समीरण सोम पिया है।

ऋषियों का चिन्तन मुनियों का मनन साधना-संकुल जीवन।

प्रणव-घोष की आहुतियों सा पावन जन-जन का तन मन धन

भौतिक तम का भटका हारा मन आकर उपराम हो गया।2।

फिर क्यों देश गुलाम हो गया।

जिस भारत की नित्य नियम से करें आरती चन्दा-सूरज।

धन्य हो गये देव जहाँ की धारण करके पावन भू-रज।

स्वर्ण-किरीट सजाए हिमनग सागर चरण परखार रहा है।

गंगा यमुना के आँचल पर अम्बर मोती वार रहा है।

धरती का हर कंकर शंकर रोम-रोम श्री राम हो गया।3।

फिर भी देश गुलाम हो गया।

विश्वंभरा वसुमती मेरी धरती माता सबकी त्राता

जिसको अभिसिंचित करता है अमरित रस से विश्व विधाता

पौरुष के प्रतीक पर्वत ममता-पूरित सरवर सरिताएँ

गुंजित रहतीं जिनके तट पर सामगान की वेद-ऋचाएँ

धरती का हर रूप यहाँ पर मंगलमय अभिराम हो गया।4।

कैसे देश गुलाम हो गया।

जहाँ भगीरथ के तप ने गंगा को भागीरथी बनाया।
और कपिल ने प्रकृति नटी को ही जग का सर्वस्व बताया।
उद्दालक का सेवा-पथ जीवन का शिव संकल्प हो गया।
गाधि-सुवन का उग्र तपोव्रत विधि का एक विकल्प हो गया
देवलोक का सहज अवतरण भरत-भूमि के नाम हो गया।5।

फिर भी देश गुलाम हो गया!

जिस भारत के जन-मानस ने आत्मा की ऊर्जा पहचानी
अणु-अणु जिसको दिखा ब्रह्ममय जिसने जीवन की गति जानी
विश्व और विश्वास अखंडित सम्बंधों का ताना-बाना
सृष्टि रहस्य समझकर जिसने विधि-विधान को जाना-माना
दुनिया के प्रपंच में खोकर वह कैसे गुमनाम हो गया।

अपना देश गुलाम हो गया!

हम रहस्यवित् ज्ञानी-पंडित तत्त्व सत्यमय के अधिकारी
वसुधा ही परिवार हमारा हम अखण्ड चिन्तन अविकारी।
हमने अपने रक्त स्वेद से जग जीवन में कमल खिलवाया।
सबको अपना अंश मानकर नागों को भी दूध पिलाया।
मंगल चिन्तन देवलोक का धरती पर बदनाम हो गया।6।

इससे देश गुलाम हो गया।

अपने पौरुष से हमने अनुपम प्रेरक इतिहास रचा है
परहित में अपने रग-रग में कालकूट का गरल पचा है।
फिर भी दुनिया के छल बल को हम उतना पहचान न पाए
वे रणभेरी रहे फूँकते हमने मंगल गान सुनाए
इसीलिये अपने आँगन में उनका धृष्ट मुकाम हो गया।7।

इससे देश गुलाम हो गया।

स्वाभिमान राणा प्रताप का और शिवा जी का रण-कौशल।
त्याग प्रमंडित शौर्य गुरु गोविन्द सिंह का क्षात्र तपोबल।
बन्दा बैरागी का अनुपम अपरिमेय बलिदानी तेवर।
विस्मयकारी विजय पेशवा को देने वाली असि खरतर।
लगता था मानो भारत का जीवन ही संग्राम हो गया।9।

फिर भी देश गुलाम हो गया?

तिथि चक्रों का फेर कि फिर से काल-व्याल ने करवट बदली
प्राची के अरुणिम विहान पर घिरने लगी समय की बदली
व्यापारी बन घुसे प्रपंची इन्द्रजाल की पोटलियाँ लें
पुष्पहार हाथों में झोली के भीतर विष की कलियाँ ले
जब तक हम छल को पहचानें भारत उनके नाम हो गया।10।

ऐसे देश गुलाम हो गया।

खुले पिटारे फ़ैला जादू सम्मोहन में झूम उठे हम
सीधी राह भूलकर अपने कदन-कदम पर घूम उठे हम
बड़े अजूबा करतब उनकी भाषा-भाव प्रभाव अजूबा
भले सयाने हम न मगर कुछ भौंप सके उनका मंसूबा
हुआ करिश्मा वही भिखारी सत्ताधीश निजाम हो गया ।

अपना देश गुलाम हो गया ।

हमने फिर से कमर कसी संघर्षों की राहें पहचानी
कौन साथ चलने वाला है आह वाह की भाषा जानी
धधक उठी लपटें वेदी की अन्तर के अंगार जग उठे
ऋषि पुत्रों के एक साथ बलिदानी पथ की की ओर पग उठे
काम-दाम के इन्द्रजाल का फिर से काम तमाम हो गया ।12 ।

क्यों फिर देश गुलाम हो गया ।

चले गये जादू वाले दर छोड़, मगर रह गये जमूरे
बाहर से अपने लगते ये भीतर उनके रँग से पूरे
मानस-पुत्र यही उनके अब सत्ता-रथ के कुशल सारथी
महारथी हो कर्ण भले रथ हॉक रहा है शल्य स्वारथी
इसीलिये अपना गौरव भी गुप चुप उनके नाम हो गया ।13 ।

ऐसे देश गुलाम हो गया ।

उनकी या उनके इन सबकी दुनिया केवल यह शरीर है
प्रेत योनि सा मँड़राया करता इस पर उनका जमीर है
वे क्या जानें इस दुनिया के पार अभी विस्तार बहुत है
उसमें ही इस तन का मन का जीवन का निस्तार निहित है
क्योंकि अधूरा जीवन उनका केवल 'काम-मुकाम' हो गया ।14 ।

इनके कर्मों से ही मेरा अपना देश गुलाम हो गया ।

अब न समझ पाता हूँ अपनी भाषा-भूषा जीवन शैली
आँखों में तिरती रहती है दौलत की दुनिया मटमैली
अब न ब्रह्म वेला में पावन प्रणव मंत्र गूँजते गगन में
यज्ञ-धूम 'स्वाहा' के स्वर अब नहीं उमगते किसी सदन में
मानव का दुर्लमतम जीवन केवल घटकर दाम हो गया ।15 ।

फिर से देश गुलाम हो गया ।

श्री ओमशंकर त्रिपाठी
प्रधानाचार्य



(2562766)

(श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल, कानपुर द्वारा संचालित)

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

कानपुर 208002

E-mail:pddusdv@yahoo.com

वार्षिक आख्या — 2005—2006

युगद्रष्टा पं० दीन दयाल उपाध्याय के 91वें जन्मोत्सव पर आज हम उनका पुनः स्मरण कर रहे हैं। साधना के पर्याय इस युग के ऋषि के द्वारा हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रदान की गई प्रेरणा अनंत काल तक आदर्श उद्धारण रहेगी और उनका बलिदान हर संवेदनशील देशभक्त के लिये एक चुनौती। वास्तव में हमारे विद्यालय की मूल भावना उस युग दधीचि के मर्मघाती बलिदान से ही प्रेरित है।

यह विद्यालय जिस भावना-भित्ति पर आधारित है उसके निर्माण की मूल सामग्री है, सात्विक भाव, सद्विचार और सदाचार। विद्यालय का उद्देश्य है शक्ति, शौर्य तथा साधना संकल्प के साथ भारत माता की आजीवन आराधना। इस उदात्त उद्देश्य-प्रेरित विद्यालय के निर्माण में जिन महनीय महापुरुषों ने अपना अनिर्वचनीय योगदान दिया है उनमें विद्यालय की कल्पना मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी **पूज्य भाऊराव**, इसकी आधार शिला रखने वाले युग पुरुष **परम पूज्य श्री गुरु जी**, भव्य भवन को मूर्त-रूप देने वाली **ममतामयी माँ श्रद्धेया बूजी**, और इसकी कंचन-काया में प्राण संचरित करने वाले **श्रद्धास्पद बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरण किये जायेंगे। विद्यालय के पूर्व अध्यक्ष **बहमलीन प्राचार्य श्री शिवशरण शर्मा** का व्रती जीवन और संकल्पसिद्ध अध्यवसाय जहाँ हमारे लिये पाथेय है वहीं गोलोकवासी श्री **इन्द्रजीत जैन जी** की उदारता हमारा संबल।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना छत्तीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं. दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्श प्राण पीढी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है।

अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय **भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजाद्वीप्त और प्रभावी उपक्रम है** तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिग शैल-शृंग।

कलेवर :

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त

है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्घरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान-वीथी, भाऊराव-भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव-स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार, आचार्य-कर्मचारी आवास तथा 7500 वर्ग फीट क्षेत्रफल का 'पंडित दीनदयाल सभागार'।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक 7 कक्षाओं के 16 अनुभागों में छात्रों की संख्या 773 है। इनमें से 193 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाऊराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तरांचल, बिहार, झारखंड, बंगाल, मध्यप्रदेश तथा अरुणांचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय-परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यों द्वारा की जाती है।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में 29 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक है।

विद्यालय के पास लगभग एक लाख रू० से अधिक मूल्य की 15000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय भी है। वाचनालय में 7 दैनिक, 2 साप्ताहिक तथा 11 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है। इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम तल 1975 में तथा द्वादश का 1981 में उत्तर-प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है।

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (32 वर्षों का)		द्वादश (26 वर्षों का)	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
कुल छात्र	2964		2449	
उत्तीर्ण	2948	99.46	2432	99.38
ससम्मान	1111	37.69	620	25.32
प्रथम श्रेणी	1487	50.44	1472	60.52
द्वितीय श्रेणी	0340	11.53	367	15.09
तृतीय श्रेणी	0010	00.34	05	00.20
प्रदेश में स्थान	105 (लगभग 4%)		85 (लगभग 4%)	

वर्ष 2006 का परीक्षा परिणाम निम्नांकित है :

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	141	111
उत्तीर्ण	141	111
ससम्मान	55	63
प्रथम श्रेणी	80	48
द्वितीय श्रेणी	06	00
तृतीय श्रेणी	00	00
प्रदेश में स्थान	00	01

अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ :

1. द्वादश कक्षा के छात्र चि० रोहित कटियार ने 2006 की JEE(IIT) प्रवेश परीक्षा में पूरे देश में 17 वें तथा कानपुर क्षेत्र में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया है।
2. राष्ट्रीय विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित विज्ञान संगोष्ठी 2006 में विद्यालय की दशम कक्षा के छात्र चि० रणविजय ने पूरे प्रदेश में द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। चि० रणविजय छात्रावास में ही निवास कर रहे हैं।
3. अब प्रतिवर्ष अपने पूर्व छात्र भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चयनित होने लगे हैं। इस वर्ष भी चि० रुद्र प्रताप सिंह आई.पी.एस. में चयनित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। चार अन्य छात्र चि० रमाकान्त सिंगरौल, चि० सौरभ उमराव, चि० उपेन्द्र अवस्थी तथा चि० रामेन्द्र सिंह प्रारम्भिक परीक्षा उत्तीर्ण कर चयनित होने के प्रयास में हैं।
4. चि० विपिन गुप्त ने देश के कुल छः में से पाँच प्रबन्धन संस्थानों में चयनित होकर एक यशस्वी कीर्तिमान स्थापित किया है। वर्तमान समय में वह आई.आई. एम. अहमदाबाद में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।
5. चि० चावली रमेश ने रक्षा-क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिये इसी वर्ष जून 2006 में रक्षामंत्री द्वारा विशेष सम्मान प्राप्त किया है।
6. चि० प्रवीण भागवत ने युवा वैज्ञानिकों के लिये निर्धारित विश्व स्तरीय एम०ई०टी० इण्टरनेशनल पुरस्कार प्राप्त कर सम्पूर्ण देश का गौरव बढ़ाया है।

ज्ञातव्य है कि चि० चावली रमेश और प्रवीण भागवत एक ही बैच के छात्र रहे हैं।

प्रतियोगी परीक्षाएँ :

इंजीनियरिंग, मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। प्रतियोगी परीक्षाओं के अद्यावधि समेकित परिणाम की एक झलक निम्नांकित है।

प्रतियोगी परीक्षाओं का अद्यावधि परिणाम

कुल छात्रों की संख्या	वर्गशः	चयनित संस्था	सफल छात्रों की संख्या	प्रतिशत
2449	गणित 2149	आई.आई.टी.	249	11%
		अन्य इंजीनियरिंग संस्थान	1320	61%
	जीवविज्ञान 300	मेडिकल परीक्षाएँ	80	26%

गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

जे.ई.ई./संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई.आई.टी., मर्चेण्ट नेवी तथा धनबाद खनन महाविद्यालय हेतु) तथा (सी.बी.एस.ई.)	20
यू.पी.टी.यू./क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी विद्यालय)	95
अन्य (AMEETY चैन्नई, NIFT, आदि)	15
कुल (इंजीनियरिंग) में चयनित	130
सी.पी.एम.टी./संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेजों हेतु) चयनित	05
अन्य	03

NDA और CDS के माध्यम से सेना में पहुँचे हुए लगभग 36 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 20 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सब के विद्यालय से सतत जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रतिवर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले कुल 73 छात्र विद्यालय में अध्ययनरत हैं।

हमारे अनेक छात्र अन्य स्त्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति

श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट

श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति

श्रीमती सावित्री अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल

श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति

श्री प्रेम नारायण जी सोमानी

आई. जे. एस. ट्रस्ट कानपुर

श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति

श्रीमती भाग्यवती त्रिपाठी द्वारा श्री रवीन्द्र नाथ त्रिपाठी, पाण्डुनगर, कानपुर

श्रीमती संजना मित्तल

श्री खैराती लाल चावला

पूर्व छात्र चि. प्रवीण भागवत,

पूर्व छात्र चि. संदीप मेहरोत्रा

पूर्व छात्र चि० हृदयेश गुप्त

पूर्व छात्र चि० अजय गुप्त

कुल मिलाकर 40 छात्र इन सभी न्यासों और संस्थाओं के द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व. गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ. सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येतर गतिविधियाँ :

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अपने सीमित साधनों में यथासंभव खेलों में भी कौशल प्राप्त करने का हमारा प्रयास रहता है। विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन. सी. सी.) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही हैं। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अंतर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं। दीपावली अवकाश में इस वर्ष भी देश-दर्शन की योजना है।

नैतिक शिक्षा

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रंथों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदंडों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय-रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास :

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं – अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती – जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर-विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित सॉफ्टवेयर द्वारा अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

छात्रों के तकनीकी विकास हेतु विद्यालय अवधि के पश्चात् इण्टरनेट की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके द्वारा छात्र अपने Subject, Career, Current issues की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

विद्यालय की गृह परीक्षाओं एवं Student Database को Computerised करने हेतु Software बनाने के लिए विभाग कार्यरत है। जिसके द्वारा हम अपने विद्यालय की Attendance एवं Result को Computerised कर सकेंगे।

युग-भारती :

बाल, किशोर और तरुण-भारती की शृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ

सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग-भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-संपर्क-योजनाओं एवं संचार-साधनों के प्रसार आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 24 सितम्बर (रविवार) को प्रातः 10 बजे से युग-भारती का वार्षिक अधिवेशन सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुका है।

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर :

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित शिशुओं को जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिए विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी. एस. एस. डी. महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्मित हो चुका है। विद्यालय की प्रबंध समिति के सह-सचिव श्री यतीन्द्र जीत सिंह के द्वारा इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मंदिर के द्वारा पालित-पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिये भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय का यह पावन प्रकल्प 23 सितम्बर 2004 से कार्यरत है। वर्तमान समय में 24 शिशु शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त कर रहे हैं। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

भारतीय चिंतन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए इस जीवन-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग-भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्त है।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज-बंधुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे।

धन्यवाद!

श्री ओमशंकर त्रिपाठी
प्रधानाचार्य

यज्ञोपवीत एवं गायत्री

संस्कार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। संस्कार के अभाव में वह पशु हो जाता है। इस न्याय से हमारे मनीषियों ने मानव जीवन को संस्कारों में बाँधा है। मनुष्य के जन्म के पूर्व गर्भाधान संस्कार से लेकर मृत्यु के पश्चात् अन्त्येष्टि संस्कार पर्यन्त सोलह संस्कार की व्यवस्था की गई है। यज्ञोपवीत उन सभी संस्कारों में इसलिए महत्वपूर्ण है कि वेदारम्भ संस्कार उसके बाद ही सम्पन्न होता है। वेदाध्ययन के बिना सारा अध्ययन अधूरा है।

यज्ञोपवीत का सम्बन्ध यज्ञ से है, यज्ञ का सम्बन्ध वेद से है जैसा कि न्यायदर्शन में कहा है – 'यज्ञोमन्त्र ब्राह्मणस्य (वेदस्य) विषयः' वेद का सम्बन्ध वेदाधिकारी द्विजों से है। बिना यज्ञोपवीत हुए द्विज वंशोत्पन्न भी वेदाध्ययनाधिकारी नहीं हो सकता, तब उसके अनधिकारी भला वेदाध्ययन में कैसे अधिकृत हो सकते हैं?

यज्ञोपवीत से पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एकज होते हैं, फिर उस समय गायत्री के उपदेश से 'द्विर्बद्धं सुबद्धं भवति इस न्याय से उन्हीं को आचार्य द्विज कर देता है। उन तीनों प्रकार के एकजों को वह तीन दिन गर्भ में रखता है। तीन दिन के अनन्तर उन तीनों का द्वितीय बार जन्म होने से वे द्विज कहलाते हैं। इसीलिए 'अथर्ववेद' में कहा गया है – आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।

तं रात्रीस्तिष्ठ उदरे विभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः ॥

यज्ञोपवीत किस प्रकार पुरुष पर वेद का भार रखता है, यज्ञोपवीतियों को कितना वेद आवश्यक है, यज्ञोपवीत त्रैवर्णिक पुरुषों का क्यों होता है – इत्यादि बातों का उत्तर यज्ञोपवीत सूत्र स्वयं ही देता है, यह हाथ की चार अँगुलियों (चव्वा) पर छियानबे बार लपेटा जाता है। वेद 1131. शाखाओं में विभक्ति है, उसमें कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड, ज्ञानकाण्ड – ये तीन विभाग होते हैं इनके सब मन्त्र एक लाख हैं। यथा – आद्यो वेदश्चतुष्पादः शतसाहस्र संमितः।

(वायु पुराण 60/7)

चरण व्यूह में भी कहा गया है –

लक्षं तु वेदाश्चत्वारो लक्षं भारतमेव च।

इनमें कर्मकाण्ड के मन्त्र 80 हजार कहे जाते हैं, उपासना काण्ड के 16 हजार एवं 4 हजार ज्ञानकाण्ड के मन्त्र माने जाते हैं। यही बात निरुक्तकार भी स्वीकार करते हैं – तास्त्रिविधा ऋचः- परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृता आध्यात्मिक्यश्च। परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृताश्च मन्त्रा भूयिष्ठाः, अल्पश आध्यात्मिक्यश्च।

'परोक्ष' शब्द से 'कर्मकाण्ड' इष्ट है क्योंकि कर्मकाण्ड परोक्ष कर्मफल का प्रतिपादक होता है। 'प्रत्यक्ष' शब्द से उपासना काण्ड इष्ट है, वह प्रत्यक्ष फल का निदर्शक है। 'आध्यात्मिक' शब्द से ज्ञानकाण्ड इष्ट है, क्योंकि आत्मसाक्षात्मकार ही ज्ञान होता है। ज्ञान काण्ड की अल्पता से ज्ञानकाण्ड को कर्मकाण्ड से हीन न समझ लेना चाहिए, क्योंकि हीनता

या उत्कृष्टता संख्या पर निर्भर नहीं करता। एक ही सूर्य लाखों तारों से उत्कृष्ट ही होता है। ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड की अपेक्षा होना भी अल्प ही चाहिए। युद्ध में सेनापति 'ज्ञान' होता है, सेना 'कर्म'। पर जितनी संख्या सैनिकों की होती है उतनी सेनापतियों की नहीं। यदि सभी सेनापति बन जायें तो विजय कभी होगी ही नहीं। संसार में जैसे ज्ञानी या नेता थोड़े ही होते हैं, परन्तु उनकी आज्ञा में चलने वाले कर्मिष्ठ—जो उनकी आज्ञा बिना विचारे ही मान लें बहुत अपेक्षित होते हैं, वैसे ही वेद में भी ज्ञानकाण्ड थोड़ा होता है, कर्मकाण्ड की संख्या उनकी अपेक्षा बहुत अधिक होती है। यदि कर्मकाण्ड न हो तो ज्ञान निराधार हो जाये जैसे नेता व्यर्थ हो जाता है यदि कर्मनिष्ठ जनता न हो।

यह यज्ञोपवीत चव्वे पर छियानबे बार लपेटा जाता है। ये 1131 शाखात्मक चार वेदों में स्थित कर्मकाण्ड एवं उपासना काण्ड के $80+16 = 96$ सहस्र मन्त्रों का यह अधिकार सूत्र द्विज को अर्पण किया जाता है। शास्त्र ने केवल कर्मकाण्ड उपासनाकाण्ड के अधिकार तक ही यज्ञोपवीत नियत किया है। ये छियानबे हजार मन्त्र चारों वेदों के हैं, इसीलिए चार अँगुलियों पर उतनी संख्या में सूत्र लपेटा जाता है, उससे इसमें ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य—इन तीन वर्णों का अधिकार बताया जाता है। फिर इस तीन लड़ी वाले सूत्र को तिगुना करके पुनः दाहिने से नीचे लपेटा जाता है, उससे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ—इन तीन आश्रमों को इसमें अधिकृत किया जाता है।

फिर इस नव सूत्र डोरे को इस प्रकार तिगुना किया जाता है कि जिससे तीनों सूत्रों की योजना सिर में एक हो जाये। इस समय की त्रिगुणता ऋषि ऋण, देव ऋण एवं पितृऋण को सूचित करती है। इस यज्ञोपवीत सूत्र से सनातन धर्म का परमार्थक अद्वैतवाद भी सिद्ध हो रहा है। इसमें एक ही सूत्र से यज्ञोपवीत की रचना का प्रारम्भ होता है, एक ही सूत्र से तीन सूत्र बन जाते हैं, अन्त में एक ही ब्रह्मग्रन्थि में उसकी समाप्ति हो जाती है। मध्य में ही केवल एक त्रिगुण चक्र होता है।

संन्यासाश्रम में मोक्ष प्राप्त्यर्थ केवल ज्ञान काण्ड का उपयोग करना पड़ता है, इस कारण उस समय छियानबे सहस्र कर्म उपासना के मन्त्रों के इस अधिकार पट्ट को छोड़कर शेष चार सहस्र मन्त्रों के मनन का क्रम प्राप्त होने से यज्ञोपवीत सूत्र को छोड़ना पड़ जाता है। अभीष्ट स्थान को प्राप्त हो जाने पर यात्री अपना टिकट देकर स्टेशन पार हो जाता है। गृहस्थाश्रमी को श्रौत—स्मार्त दोनों कर्म करने पड़ते हैं अतः 'वैखानस धर्मसूत्र', 'वृद्धहारीत स्मृति' तथा 'यज्ञोपवीते द्वेधार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि' इस हेमाद्रि के अनुसार दो सूत्र धारण करने पड़ते हैं।

कान पर यज्ञोपवीत रखने का रहस्य

यज्ञोपवीत को शौचादि के समय कान पर रखने के कुछ प्रमाण ये हैं — 'निवीती दक्षिणे कर्णे यज्ञोपवीतं कृत्वा.....मूत्र पुरीषे विसृजेत्' (वैखानस धर्म प्रश्न 2/9/1 शौचविधि),

‘यज्ञोपवीतं शिरसि दक्षिण कर्णे वा कृत्वा’ (बोधायन गृह्यशेषसूत्र 4/6/1), ‘कर्णस्थ ब्रह्मसूत्र उदङ्मुखः। कुर्यान्मूत्र पुरीषे.....’ (याज्ञवल्क्य स्मृति, आचाराध्याय, ब्रह्मचारि प्रकरण 16 पद्य) ‘कर्णस्थ ब्रह्म सूत्रों मूमपुरीषं विसृजति’ (अग्निवेश्यगृह्य सूत्र 2/6/8) इत्यादि। शौच के समय यज्ञोपवीत सूत्र को दाहिने कान पर रखने में यह कारण है –

ऊर्ध्वं नाभेर्मध्यतरः पुरुषः परिकीर्तितः :

(मनुस्मृति 1/92)

‘पुरुष नाभि से ऊपर पवित्र है, नाभि के नीचे अपवित्र है। इस प्रमाण से नाभि का निचला भाग मलमूत्र धारक होने से विशेषतः शौच के समय अपवित्र होता है। इसलिए उस समय पवित्र यज्ञोपवीत को वहां न रखकर –

तस्मान्मध्यतमं त्वस्य मुखमुक्तं स्वयम्भुवा ।

(मनुस्मृति 1/92)

इस प्रमाण से अत्यन्त पवित्र तथा ज्ञान का भण्डार होने से बोधायन के अनुसार सिर पर तथा अन्यो के अनुसार सिर के भाग कान पर रखा जाता है। दाहिने कान की पवित्रता उसमें दीक्षा के समय आचार्य द्वारा गुप्त मन्त्रोपदेश होने से तथा –

मरुतः सोम इन्द्रगनी भित्रावरुणौ तथैव च ।

एते सर्वे च विप्रस्य श्रोत्रे तिष्ठन्ति दक्षिणे ॥

(गोभिलगृह्य सूत्र 2/90)

‘वायु, चन्द्रमा, इन्द्र, अग्नि, मित्र तथा वरुण – ये सब देवता ब्राह्मण के दाहिने कान में रहते हैं। इत्यादि प्रमाणों से देव निवास के कारण सूचित होती है।

क्षुते निष्ठीवने चैव दन्तोच्छिष्टे तथानृते ।

पतितानां च सम्भाषे दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ॥

(गृह्यसंग्रह 2/89)

छींकने, थूकने, दाँत के जूटे होने, मुँह से झूठी बात निकालने तथा पतितों से बातचीत करने पर अपने दाहिने कान का स्पर्श करना चाहिए। इसी कारण अपराधी लोग भी अपनी शुद्धि के लिए दाहिने कान को पकड़ते हैं या छूते हैं।

अन्य बात यह है कि हमारे शरीर में पार्थिवइन्द्रिय नासिका, जलीय इन्द्रिय जिह्वा, तैजस इन्द्रिय आँख, वायव्यइन्द्रिय त्वचा तथा आकाशीय इन्द्रिय कान है। देश कालादि अनुसार श्मशानादिरूप में पृथ्वी, गद्यादियोग से गंगाजलादि रूप में जल, श्मशानाग्नि रूप में तेज, पुरीशालयादि रूप में वायु ये भूत अशुद्ध हो जाते हैं पर आकाश किसी दशा में अपवित्र नहीं होता है। हमारे शरीर में उसकी शौचादि के समय यज्ञोपवीत का सम्बन्ध कर देने से वह अशुद्ध नहीं होता। यही यज्ञोपवीत सम्बन्धी वैज्ञानिक रहस्य जान लेना चाहिए।

गायत्री की महत्ता

इस देश में द्विजातियों द्वारा गायत्री की गरिमा का गान अनादिकाल से होता आ रहा

है। यह मन्त्रत्रयी में प्रतिष्ठित है। ऋग्वेद के 3/62/10 वें मन्त्र में ऋक् रूप से, यजुर्वेद के 3/35 वें 30/2 एवं 36/3 मन्त्र में यजुः रूप से तथा सामवेद के उत्तरार्चिक के 13 वें अध्याय के तृतीय खण्ड के तीसरे मन्त्र में सामरूप से उपलब्ध है। इस मन्त्र प्रवर के ऋषि विश्वामित्र हैं और देवता सविता हैं। अन्यान्य वैदिक मन्त्रों के समान यह भी एक मन्त्र है किन्तु गायत्री छन्द में ग्रथित होने के कारण यह 'गायत्री' नाम से ही लोक में विश्रुत हुआ है, एवं सविता से सम्बद्ध होने के कारण यह सावित्री भी कहलाता है। इस मन्त्र में तीन पद हैं। अक्षर चौबीस होने चाहिए, किन्तु एक कम होने से इसकी संज्ञा निचृद्गायत्री है। तथापि 'वरेण्यम्' शब्द को 'वरेणियम्' पढ़कर इसमें चौबीस अक्षर मानने की विद्वानों की सम्मति रही है।

गायत्री मन्त्र का सुगम अर्थ यह है कि 'हम सब जगत्स्रष्टा उस देवता के वरण करने योग्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रेरित करे।'

प्रकृति के साम्राज्य में बुद्धि की सत्ता सर्वशिरोमणि है। प्रवृत्तिमार्गियों को इसी की कृशाग्रता से त्रिवर्ग की प्राप्ति सुलभ प्राप्त हो जाती है। निवृत्ति मार्ग वाले लोगों को इसी की निर्मलता से मुक्ति-पदवी भी अनायास मिल जाती है। दोनों मार्ग वाले अपने-अपने भावनानुसार परमात्मा से प्रेरित बुद्धि होकर यथेष्ट सुख लाभ करते हैं।

इस मन्त्र की अधिष्ठात्री देवी पंचमुखी और दशभुजा वाली हैं। वे आराधकों की सकल मनोकामनाओं की पूरिका हैं।

शतपथ ब्राह्मण और तैत्तिरीयारण्यक में भी गायत्री की चर्चा है। उपनिषद् में भी इसकी उपासना है। छान्दोग्य (3/12/1) का वचन है कि यह जो कुछ है, सब गायत्री ही है। गायत्री के चमत्कार से प्रभावित होकर ऋषि मुनियों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। आदिकवि बाल्मीकि ने अपनी रामायण के चौबीस सहस्र श्लोकों की रचना गायत्री के चौबीस वर्णों को लेकर की, वेदव्यास कृष्ण द्वैपायन ने अपने पुराण मुकुटमणि श्रीमद्भागवत महापुराण में गायत्री का वर्णन किया तथा दर्शन शिरोमणि वेदान्त दर्शन ने गायत्री द्वारा परब्रह्म के ही प्रतिपादन को सिद्ध किया है। मनु महाराज की सम्मति है कि तीन वर्षों तक सावधान होकर गायत्री का जप करते रहने से जापक को परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

योऽधीतेऽहन्येता स्त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः।

स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान्॥

(मनुस्मृति 2/82)

इस मन्त्र को जपते समय प्रणव और तीन व्याहृतियों को भी मन्त्र से पूर्व बोलने का सनातन प्राविधान है। प्रणव परमात्मा का आदिम नाम है। जिसका अर्थ है 'रक्षा करने वाला'। तीनों व्याहृतियों का अर्थात् भूः भुवः स्वः का क्रमशः अर्थ है सत्, चित्, आनन्द। प्रपन्न रक्षा विचक्षण सच्चिदानन्द जगदुदयशील परमात्मा का ध्यान करते हुए गायत्री का जप करने वाले साधक विधूत कल्मष होकर सनातन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

डॉ. मनोज शुक्ल

आचार्य

मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है

मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है।
अपनी हथेली में मुझको छिपा लेता है
माँ की ममता से भी बढ़कर उसकी ममता है।
मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है

माँ के गर्भ में रचने से पहले मुझे जाना,
अपने पंखों की छाया में मुझे छिपा लिया
मेरी आत्मा उस प्रभु में आनंदित है।
ये आत्मा भी उस प्रभु से आलोकित है।
मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है।

आँसुओं की घाटियों से जब गुजरता हूँ,
उस प्रभु के हाथ मुझको है सँभालते
वो ही मेरा जीवन साथी और मेरा नाथ
उसकी छाया में सदा ही मेरा जीवन है।
मेरा ईश्वर मुझे कितना प्यार करता है।

उज्ज्वल दीप
सप्तम 'क'

क्या आप जानते हैं?

सबसे पहले पोस्टकार्ड की सुविधा कहाँ चलाई गई?

उत्तर - हेगरी।

किस वेद की रचना गद्य-पद्य दोनों में की गई है?

उत्तर - यजुर्वेद

किस देश में रिक्शा चलना सबसे पहले प्रारम्भ हुआ था?

उत्तर - जापान

संसार का सर्वप्रथम चक्कर लगाने वाला यात्री कौन था?

उत्तर - मेगेलन (पुर्तगाल)

मोनाजाइट किसका अयस्क है?

उत्तर - थोरियम

संविधान के 61 वें संशोधन में क्या किया गया था?

उत्तर - मताधिकार की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी।

विश्व का सबसे छोटा देश कौन सा है।?

उत्तर - वैटिकन सिटी

किस ग्रह को भोर का तारा कहा जाता है?

उत्तर - शुक्र ग्रह

कौन सा प्रसिद्ध कवि भारत के संसद का सदस्य था?

उत्तर - सुमित्रा नंदन पन्त

संयुक्त राज्य अमेरिका के विधानमण्डल को क्या कहते हैं?

उत्तर - कांग्रेस

भारत में सहकारिता समिति अधिनियम सर्वप्रथम कब पारित हुआ?

उत्तर - सन् 1920 ई0 में।

दिल्ली में विजय घाट में किसकी समाधि है?

उत्तर - लाल बहादुर शास्त्री।

भारत का पहला बोलने वाला चलचित्र कौन था?

उत्तर - आलमआरा।

भारत में किसी भी प्रदेश में सबसे अधिक समय तक कार्यरत मुख्यमंत्री कौन हैं?

उत्तर - ज्योति बसु।

इलेश शुक्ल

अष्टम 'क'

नेता का रासायनिक विश्लेषण

प्राप्ति - ये अत्याधिक सक्रिय होने के कारण मुक्त अवस्था में नहीं पाये जाते हैं। ये अधिकांशतः चापलूसों से घिरे रहते हैं। साधारणतः संयुक्त अवस्था में अर्थात् दल बना कर चलते हैं। प्रजातान्त्रिक देशों में अत्यधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

भौतिक गुण :

1. **अवस्था** : चुनाव के समय नरम अथवा द्रव रूप में किन्तु चुनाव जीतने के पश्चात कठोर अर्थात् ठोस रूप में पाये जाते हैं।
2. **रंग** : कोई निश्चित रंग नहीं होता है आवश्यकतानुसार गिरगिट की तरह रंग बदल देते हैं।
3. **विलेयता** : किसी भी विलायक (दल) में विलेय हैं।
4. **गलनांक** : रिश्वत व सिफारिश उत्प्रेरक की उपस्थिति में सामान्य ताप पर पिघलने के कारण इनका गलनांक अत्यन्त कम होता है।
5. **क्वथनांक** : विरोध किये जाने पर उबलने लगते हैं।

रासायनिक गुण :

1. **हवा का प्रभाव** : हवा के रूखानुसार कार्य करते हैं। जिस दल की हवा होती है उसे ही सहयोग करते हैं।
2. **जल से क्रिया** : प्रायः जनता की आशाओं पर जल (पानी) फेर देते हैं।
3. **अणुभार** : अत्यधिक मेवे-मिष्ठान्न आदि खाने के कारण इनका भार अत्यधिक होता है।
4. **कुर्सी से क्रिया** : कुर्सी के प्रति अत्यधिक क्रियाशील होते हैं। कुर्सी मिलने पर उससे चिपकने की प्रवृत्ति दिखाते हैं।
5. **चुम्बकीय गुण** : चुनाव के समय जनता के प्रति आकर्षण व बाद में प्रतिकर्षण का गुण रखते हैं।

उपयोगिता -

1. सिफारिश के अत्यन्त उपयोगी माध्यम है।
 2. धरनों व घेराव में उपयोगी होते हैं।
 3. स्वयं के व परिवारी जनों के आर्थिक विकास में इनका अधिक उपयोग है।
- निष्कर्ष** - अजीबो गरीब जटिल संरचना वाला तत्त्व है।

अमृतराज पाठक

नवम 'ग'

मच्छर की वीरता

घर बीच चौकड़ी भर-भर कर
मच्छर बन गया निराला था।
ऐसे छोटे से मच्छर से,
पड़ गया हमारा पाला था।
कौशल दिखलाता चालों में,
आ गया हमारे बालों में।
फिर काटा उसने गालों में,
खुजलाहट भर दी खालों में।
निर्भीक भाव से काट रहा,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।
थक गये हाथ मलते-मलते,
सूजा है सारा अंग-अंग।
वैरी समाज रह गया दंग,
मच्छर का ऐसा देखा रंग।

अमृत राज पाठक
नवम 'ग'

अंतरिक्ष में प्रथम

1. वह प्रथम मानव रहित अंतरिक्ष यान, जो स्वतः चन्द्रतल पर उतरा और स्वतः ही उठकर पृथ्वी पर वापस आया — लूना-16 (रूस-1970)
2. वह प्रथम स्पेस प्रोव जिसे शनि के उपग्रह टाइटन पर उतारा गया — ह्यूजिंस
3. प्रथम मानव रहित बग्गी जिसे चन्द्रतल पर चलने का गौरव प्राप्त है — लूनाखोद-1(रूस-1969)
4. सोवियत अंतरिक्ष यात्री जिसने अंतरिक्ष में 366 दिन बिताए — व्लादीमिर तीतोव व मूसा मानारा (सोवियत संघ 21 दिसम्बर 1987-21 दिसम्बर 1988)
5. अंतरिक्ष में विचरण करने वाले प्रथम पुरुष-महिला अंतरिक्ष यात्रियों की जोड़ी — व्लादीमिर दूजानीविकोव व स्वेतलाना सावित्सकाया (रूस-1984)
6. रॉकेट से अंतरिक्ष में गया पहला जानवर — अलवर्ट नामक बन्दर
7. सर्वाधिक समय तक अंतरिक्ष प्रवास का रिकार्ड — डेनियल बुर्श
8. सर्वाधिक सात बार अंतरिक्ष यात्रा करने वाला व्यक्ति — जेरी रॉस (अमेरिका)
9. अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यान बदलने वाला प्रथम यात्री — अलेक्सी येलेसेयेव
10. विभिन्न यात्राओं को मिलाकर सबसे अधिक समय तक अंतरिक्ष में रहने वाला अंतरिक्ष यात्री —यूरीरोमाने-को (रूस 430 दिन 18 घंटे,20 मिनट)
11. अंतरिक्ष में एक अन्य अंतरिक्ष यान को छूने वाला प्रथम व्यक्ति — माइक कालिंस (अमरीका, 1966)
12. अंतरिक्ष में सबसे अधिक दिनों तक लगातार रहने वाला अंतरिक्ष यात्री — वेलेरी पोलियाकोव (रूस, 439 दिन, 1994-95)
13. अंतरिक्ष में सबसे अधिक दिनों तक लगातार रहने वाली महिला अंतरिक्ष यात्री — येलेना कोंदाकोवा (रूस, 170 दिन, 1994-95)
14. अमेरिका व सोवियत संघ के मानव सहित अंतरिक्ष यानों का अंतरिक्ष में प्रथम सम्मेलन — ओपोलो - सोयुज सम्मेलन (17 जुलाई, 1975)

अभय प्रताप सिंह

नवम 'ग'

हमारा विद्यालय

पं० दीनदयाल विद्यालय, यह कानपुर की शान है।

शिक्षण संस्थानों में इसका ऊँचा अपना स्थान है।

पुण्य गंगा जी सरिता का पावन तट शृंगार है।

सबके मन को मोह रहा है, बनकर सुन्दर हार है।

वाणी का यह महल मनोहर विद्या का आगार है।

मानों भू की साक्षरता का स्वप्न हुआ साकार है।

अध्यापक सब कुशल यहाँ पर निज विषयों में दक्ष है।

अध्यापन में चतुर हितैषी छात्रों के निष्पक्ष है।

अनुशासन है श्रेष्ठ यहाँ का चारों ओर सुकाल है।

कभी न कोई झगड़ा दंगा कभी नहीं हड़ताल है।

रहता पूरे वर्ष यहाँ पर शिक्षण का माहौल है।

सब निर्भय स्वच्छन्द यहाँ पर नहीं कहीं पर हौल है।

आकाश सचान

नवम 'ग'

दुनिया की अनोखी झीलें

1. **स्याही वाली झील** : यह झील अल्जीरिया में है। इसका पानी गाढ़े नीले रंग का है और हमेशा ही रहता है, परीक्षण करने पर पाया गया कि इसमें लौह लवण व लैण्ड आक्साइड मिले हैं।
2. **पत्थर की झील** : यह झील आयरलैण्ड में है। इसकी विशेषता यह है कि इसमें जो चीज डाली जाती है वह पत्थर की हो जाती है।
3. **आग की झील** : यह हवाई द्वीप में है। इसमें हमेशा लपटें उठती रहती हैं, तथा धुआँ निकलता है।
4. **गायब होने वाली झील** : यह झील आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ में है, इस झील का नाम जार्ज लेक है, इसका आश्चर्यजनक गुण यह है, कि इसका पानी स्वयं ही सूख जाता है एवं तत्पश्चात् स्वयं आ जाता है।

सकारात्मक विचारों का जादू

‘जड़ यदि शक्तिशाली है तो विचार सर्वशक्तिमान है। इस विचार को अपने जीवन में उतारो और अपने आपको सर्वशक्ति मान, महिमान्वित और गौरव सम्पन्न अनुभव करो। ईश्वर करे, तुम्हारे मस्तिष्क में किसी कुसंस्कार को ध्यान मिले। ईश्वर करे कि हम जन्म से ही कुसंस्कार डालने वाले वातावरण में न रहें और कमजोरी तथा बुराई के विचारों से बचें।’

— महर्षि अरविन्द

एक महान विचारक ने कहा है —

‘आपका प्रत्येक विचार आपके मस्तिष्क का निर्माता है, फिर वह विचार शुभ हो या अशुभ।’

जैसे हमारे विचार होते हैं, हमारा भविष्य भी वैसा ही बनता है। हमारी हर एक योजना, हमारा प्रत्येक कार्य हमारे विचारों से प्रभावित होता है। सफलता के विचार तथा उत्साह के विचार हमें विजयी बना डालते हैं। जब कि निराश, असफलता और भयभीत करने वाले विचार हमें गर्त में ले जाते हैं। विचारों का दूसरा नाम भाग्य है।

अतः हम अपना भाग्य स्वयं लिखते हैं, अपने विचारों से। जैसा विचार, वैसा कार्य और जैसा कार्य वैसा फल। विचारों का प्रभाव इतना प्रबल होता है कि मुँह से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती, वे आपकी आँखों में इतने साफ लिखे होते हैं कि अविवेकी प्राणी भी उन्हें फौरन समझ लेता है।

‘कल्पना का रूप ही आगे चलकर सत्य बनता है, इसलिए पहले कल्पना को रूप दें।’

विचारों को समृद्ध बनाएँ : व्यक्ति को चाहिए कि वह कल्पना की ऊँची उड़ान भरे और निरन्तर आगे बढ़ने और उत्साह बढ़ाने वाले विचारों को प्रोत्साहन दें। आपके हृदय में चाहे कोई भी विचार आए, आप कोई भी संकल्प क्यों न करें, आपकी वृत्ति कौसी भी क्यों न हो, उस विचार का उस संकल्प या वृत्ति का प्रभाव आपके पूरे शरीर पर पड़ता है।

- ◆ आपकी सफलता और जीत इसी में है कि आप अपने विचारों को भटकने न दें। उनमें निराशा के बीज बोकर उन्हें कमजोर न करें।
- ◆ हममें ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि अपने मानसिक मनोरंजन के लिए समानतापूर्ण विचार,

महान उद्देश्य तथा भव्य कल्पनाएँ रख सकें। सुन्दर, कल्याणकारी और सच्ची वस्तुओं पर चिंतन—मनन करने और उनके विषय में सोचने से हमारी मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है।

स्वतन्त्र विचारशक्ति का प्रभाव : स्वतन्त्र विचार शक्ति वाला व्यक्ति कहता है — “मैं कर सकता हूँ।” पराधीन और अनिश्चित विचार वाला व्यक्ति कहता है — “मैं नहीं कर सकता।” या “यह मैं कैसे कर सकता हूँ?”

- ◆ ऐसे लोग जीवन भर उधार के विचार और उधार की योजनाओं पर काम करते हैं।
- ◆ क्या आपने कभी अपने मन की पतवार को, अपने जीवन की पतवार को अपने हाथ में थामने का प्रयत्न किया है?
- ◆ क्या आपने कभी अपने मन को वश में करके अपनी इच्छानुसार चलाने की चेष्टा की है?
- ◆ क्या आपने मन के मनचलेपन पर कभी कोई रोक लगाई या यूँ ही इधर—उधर भटकने के लिए खुला छोड़ बैठे हैं?
- ◆ कहीं आपका मन आवेगों के तत्त्व से दिग्भ्रमित तो नहीं?
- ◆ क्या आप जानते हैं, आप अपने जीवन रूपी जहाज को उस तट की ओर ले जा रहे हैं जहाँ सफलता, सुख और शान्ति है या किसी ऐसे भँवर की ओर जहाँ एक गर्त आपका इन्तजार कर रही है?
- ◆ यदि आप उपरोक्त परिस्थिति में फँसे हुए हैं तो स्पष्ट है कि आप कुविचारों के जाल में फँसे हैं।

सबसे पहले आपको इस जाल को काटकर स्वयं को आजाद करना होगा।

कैसे काटें कुविचारों का जाल : कुविचारों के जाल से बाहर आने के लिए आपको सर्वप्रथम जिस हथियार की आवश्यकता है, वह है — **दृढ़ इच्छाशक्ति।**

आपमें दृढ़ इच्छाशक्ति होनी चाहिए ताकि आप इच्छाओं अथवा परिस्थितियों के गुलाम बनने के बजाय उन्हें अपना गुलाम बनाएँ। इसके लिए आप कुछ बुनियादी सिद्धान्त जान लें। मसलन, कैसे आप जीवन रूपी जहाज को इच्छित दिशा की ओर मोड़े अथवा जीवन दिशा को किस प्रकार अपने वश में करें? बिना इन सवालों पर विचार किए जीवन का निर्माण करने वाले विचारों को प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

सच है – आप जैसा सोचेंगे, वैसे बनेंगे।

कुविचारों के जाल से बाहर निकलने के लिए आपको दृढ़तापूर्वक अपने विचारों में बदलाव लाना होगा।

- ◆ जो भी सोचें, पॉजिटिव सोचें।
- ◆ अच्छा सोचें, भय, निराशा, हतोत्साहित करने वाले विचारों को मन में न आने दें।
- ◆ ऐसे लोगों की संगति हरगिज न करें जिनके विचारों में निराशा हो। जो जब मिले, दुर्भाग्य, बदनसीबी और असफलता का रोना रोता रहता है, वह आपको भी अपने जैसा ही बनाने का प्रयास करता है। “सर्वप्रथम सार्थक कल्पना करें? फिर उसे साकार रूप दें। यह कल्पना ही है जो आगे चलकर सत्य रूप में परिवर्तित होती है।”

विचारों को करें नियन्त्रित : जब हम किसी कार्य को या किसी लक्ष्य का निर्धारण करते हैं और उस ओर बढ़ने की चेष्टा करते हैं तो सच बात है कि हमें शुरू में ही पता होता है कि हम सफल होंगे या असफल। इसका श्रेय हमारे विचारों को जाता है। विचारों में इतनी शक्ति है कि मुर्दे को जिन्दा कर दे तथा जिन्दे को मुर्दा कर दें।

- ◆ आकलन करें कि आपके विचार स्वतन्त्र हैं या परतन्त्र कहीं ऐसा तो नहीं, आप दूसरों के मस्तिष्क से सोचते हैं अथवा उधार के विचार लेकर आप अपने जीवन की गाड़ी धकेल रहे हों?
- ◆ सोचो, कहीं आप कुविचारों के जाल में फँसे छटपटा तो नहीं रहे हैं? यदि हाँ, तो उनसे फौरन निकलिए?
- ◆ आपके विचार क्या आपके नियन्त्रण में है या यूँ ही बेलगाम घोड़े की तरह इधर-उधर भागते रहते हैं।
- ◆ विचारों को अनियन्त्रित भी न होने दें। जैसे ही महसूस वैसे ही उन्हें नियन्त्रित करें। ‘विचारों में अपार शक्ति होती है, जैसे आपके विचार होते हैं, वैसे ही आप बन जाते हैं। आधे भरे गिलास को कोई आधा खाली कहता है तो कोई आधा भरा।’ यही सोच का अन्तर है।

अमित पाल
नवम 'ग'

हमारा देश भारत

हमारा देश भारत है, नदी गोदावरी गंगा ।
लिखा भूगोल परयुग ने, हमारा चित्र बहुरंगा ।।
हमारे देश का गौरव, शिखर ऊँचा हिमालय है
हृदय के हिंद सागर में, लहर संगीत की लय है ।
हमारी भूमि माता का, भरा आँचल सुनहला है,
जगत की वर्णमाला में, हमारा नाम पहला है ।
हमारे देश की माटी, अनोखी मूर्ति वह गढ़ती,
धरा क्या?स्वर्ग के भी जो, गगन सोपान पर चढ़ती ।
सदा संजीवनी बूटी, हवा हमको पिलाती है,
मलय की गंध से माटी, सरस हर साँस आती है ।
हमारे देश का बालक, हमें वह शक्ति है देता,
भरत सा एक बालक भी, पकड़ वनराज को लेता ।
जहाँ हर बाग है नंदन, जहाँ हर पेड़ है चंदन,
जहाँ देवत्व भी करता, मनुज के पुत्र का वंदन ।
जहाँ हर गोद में गाँधी, जवाहर लाल पलता है,
जहाँ हर खेत से सोना, कोयला, हीरा उगलता है ।
जहाँ राम जैसे वीर, जहाँ नारी सती सीता,
जहाँ चाणक्य से मंत्री, जहाँ गुरुग्रंथ है गीता ।
सिकंदर विश्वविजय की, जहाँ तलवार टूटी है,
जहाँ चंगेज की खूनी, रगी तकदीर फूटी है ।
यही वह देश है जिसके, सदा हम जय गीत गाते हैं,
समर्पण हम यही करते, नमन का गीत गाते हैं ।
उदय का फिर दिवस आया, अँधेरा दूर भागा है,
किसी मधुरात में सोकर, हमारा देश जागा है ।

प्रस्तुति - अभिनन्दन कुमार
षष्ठ 'क'

राष्ट्रभाषा हिन्दी की दुर्दशा

एक हिन्दी भक्त विदेशी विद्वान,
हिन्दी में पारंगत होने आया ।
भारतवर्ष में हिन्दी की दुर्दशा,
देखकर सुनकर समझकर चकराया ।
एयर पोर्ट से बाहर निकलते ही,
उसे टैक्सीवालों ने घेर लिया ।
गलत अंग्रेजी बोल-बोल कर,
उसे परेशान कर दिया ।
होटल के स्वागत कक्ष में बैठी,
अति आधुनिक कन्या नजर आई
अंग्रेजी में उठी बैठी बोली,
और अंग्रेजी में ही मुस्कराई ।
चौक बाजार घर दुकान हर जगह,
देखा अंग्रेजी का बोलबाला ।
राष्ट्र भाषा हिन्दी की जीभ पर,
लटक रहा था अंग्रेजी का ताला ।
हर ऐरे-गैरे नत्थू खैरे ने,
हिन्दी भाषा शूली पर टाँग दी ।
यहाँ तक कि भिखारी ने भी उससे,
अंग्रेजी में भीख माँग ली ।
यह सब देखकर सुनकर समझकर,
अत्यधिक होकर निराश ।
पहुँचा हिन्दी के वरिष्ठ अधिकारी के पास,
बोला यहाँ के लोग हिन्दी भाषा
अंग्रेजी तराजू में तोलते हैं ।
मैं हिन्दी बोलता हूँ और ये,
हिन्दी भी अंग्रेजी में बोलते हैं ।
आफ़ीसर बोला मैं जब भी अपना माउथ खोलता हूँ ।
मैं प्योर हिन्दी बोलता हूँ ।
सुनकर उसे लगा,
जितनी हिन्दी उसे आती है ।
उतनी हिन्दी भी भूल जायेगा,
उसका यहाँ का हिन्दी अनुभव था
कि वह हताश निराश बदहवास होकर
अपने प्रिय देश वापस लौट गया ।

अमृत राज पाठक
नवम 'ग'

बोध-वाक्य

1. "पाप से घृणा करो पापी से नहीं" — महात्मा गाँधी
2. "जिस शिक्षा का प्रभाव हमारे चरित्र पर नहीं पड़ता, वह शिक्षा किसी काम की नहीं।" — महात्मा गाँधी
3. "जहाँ पवित्रता है वहीं निर्भयता रह सकती है" — महात्मा गाँधी
4. "सत्य, गोपनीयता से घृणा करता है।" — महात्मा गाँधी
5. "गुनाह छुप नहीं सकता, वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है।" — प्रेमचन्द्र
6. "उत्साही मनुष्य के लिए कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है" — बाल्मीकि
7. "संयम और परिश्रम इंसान के दो सर्वोत्तम चिकित्सक है।" — रूसो
8. "आत्मा को बरबाद करने वाले तीन दरवाजे हैं — काम, क्रोध और लोभ" — गीता
9. "विद्या सभी का आभूषण होती है।" — भर्तृहरि
10. "सतसम्पर्क से लोहा सोना बन जाता है।" — वशिष्ठ
11. "मनुष्य का मानव होना ही उसकी जीत है।" — डा० राधाकृष्णन
12. "आनन्द का अत्यन्त आवश्यक सिद्धान्त स्वास्थ्य है।" — टॉमसन
13. "ज्ञानग्नि प्रज्वलित करो, एक क्षण में सब अशुभ चला जाएगा।" — स्वामी विवेकानन्द
14. "जिसने भगवान की शरण ली है उसके कदम कभी नहीं डगमगाते हैं।" — राम कृष्ण परमहंस
15. "शास्त्रार्थ एक अंधा कुँआ है जो उसमें गिरता है वह मरता है।" — कवि अखा
16. "प्रण को तोड़ने से पुण्य नष्ट हो जाते हैं।" — रामायण
17. "अन्तर्मुखता ही सच्चे शिक्षण की शुरुआत है।" — स्वामी रामतीर्थ
18. "तमाम पुण्यों और सद्गुणों की जड़ 'सत्य' है।" — रामायण
19. "आत्मा के लिए विवेक वैसा ही है जैसे शरीर के लिए स्वास्थ्य।" — रोची
20. "दर्जनों को निन्दा में ही आनन्द आता है, सारे रसों को चखकर कौआ गंदगी से ही तृप्त होता है।" — महाभारत
21. "मौन के वृक्ष पर शांति का फल लगता है।" — अरबी कहावत
22. "थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना, कम बोलना अधिक सुनना, यही बुद्धिमान बनने का उपाय है।" — टैगोर
23. "ज्ञानी विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, मूर्ख आवश्यकता से और पशु वृत्त से।" — सिसरों
24. "स्वास्थ्य सबसे अच्छा वरदान है, संतोष सबसे बढ़िया धन है, सच्चा मित्र सबसे बड़ा आत्मीय है, निर्वाण उच्चतम आनन्द है।" — गौतम बुद्ध
25. "विद्यालय वह मंदिर है जहाँ जीवन जागता है, भावनाएँ परिमार्जित होती है।" — अज्ञेय

संकलन — गणेश जी ओमर
नवम 'क'

चुटकुले

- (1) दो आदमी कम्बल ओढ़ कर सो रहे थे, तभी एक चोर आया और कम्बल लेकर भाग गया।
पहला आदमी - (लेटे-लेटे बोला) - पकड़ो-पकड़ो।
दूसरा आदमी - रहने दो, जब तकिया लेने आयेगा तब पकड़ लेंगे।
- (2) संदीप - यार आज मेरा वजन दो किलो कम हो गया।
देवेन्द्र - जरूर आज तुम नहाये होंगे।
- (3) ग्राहक - सेठ जी! चार अण्डे देना।
दुकानदार - बेवकूफ, क्या तुमने मुझे मुर्गी समझ रखा है।
- (4) मेहमान (बच्चे से) - बेटे, तुम्हारे पापा अन्दर क्या कर रहे हैं।
बच्चा - जी, वे आपके जोने का इन्तजार कर रहे हैं।
- (5) ग्राहक - केला क्या रेट है भैया?
व्यापारी - 10 रू0 के बारह
ग्राहक - कुछ कम करो।
व्यापारी - अच्छा 12 रू0 के 10 ले लो।

रोहित सिंह
(नवम 'ग')

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति

एक प्रश्न जो है रहस्य
ब्रह्माण्ड बनाया है किसने?
उत्पन्न किया यदि ईश्वर ने
यह महाशक्ति भी है किसमें?

हल हो न सका यह गूढ़ प्रश्न
अटकलबाजी सब करते हैं।
सिद्धांत बना है जो कुछ भी
सहमत न सभी हो पाते हैं।

मन्दाकिनियों के चित्रों से
एक तथ्य सामने आया है।
डॉप्लर - प्रभाव वाला विचलन
रक्त-प्रकाश में पाया है?

बाहर की तरफ को भाग रहे
प्रकाश उत्सर्जक तारागण।
ब्रह्माण्ड हमारा फँस रहा है
फँस रहे नभ के सब कण।

यह तथ्य ध्यान में रख करके
अनुमान लगाया है ऐसा
ब्रह्माण्ड रहा होगा पहले
एक अति विराट गोले जैसा।

खरबों बरसों पहले एक दिन
विस्फोट हुआ होगा इसमें
टुकड़े-टुकड़े होकर यह
फिर बिखर गया होगा नभ में।

दूसरा वाद भी प्रचलित है
ब्रह्माण्ड रहस्य बताने में
स्पंदन होता रहता है
ज्यों रूप-विकारी तारों में।

निश्चित सीमा तक जा करके
ये वापिस पुनः लौटते हैं।
कुछ घनीभूत हो जाने
पर पुनः फँसने लगते हैं।

कुछ लोगों का ऐसा मत भी है
ब्रह्माण्ड अनादि अनन्त रहा।
वैसा ही रहेगा हरदम यह
होगा न अन्त कभी इसका।

ऐसे - ब्रह्माण्ड में तारा-विश्व
तो दूर खिसकते रहते हैं।
होता न कभी स्थल खाली
नव-तारे बनते रहते हैं।

अभय प्रताप सिंह
नवम 'ग'

नेता वन्दना

कुर्सी चेष्टा वोट ध्यानं दाम दृष्टि तथैव च ।
चाराहारी पार्टी त्यागी नेता पंच लक्षणम् ॥
पार्टी पार्टी जपति नेता घोटालां करोति च ।
कुर्सी निष्ठा वोट दृष्टा नेतारं नमामि तम् ॥
झूठं करोति सत्यं, सत्यं करोति झूठं च ।
भाषणे रामस्यादर्शो रावणाय नमामि तम् ॥
यत् कृपा लव मात्रेण गुण्डा भवति मन्त्रिणः ।
लाइसेन्स दातारं चापलूसं नेतारं नमामि तम् ॥
यस्यैकेव समर्थनं बिना पत्रं भवति शासनम् ।
संसदे जूता चालकं नेतारं नमामि तम् ॥
कुर्सी माता कुर्सी पिता, कुर्सी भगिनी बन्धु च ।
कुर्सी धर्म कुर्सी कर्म नेतारं नमामि तम् ॥
योजना नां मक्खनं चाटुकार बर्धते सर्वदा ।
सर्वं योजनान् वकारयति नेतारं नमामि तम् ।
तावद् दले स्थास्यति यावत् भवति मन्त्रिणः ।
अपद दल विभाजकं नेतारं नमामि तम् ।
चुनाव समये प्राप्ते दादुरवत् टरटरायते ।
वोटान् नीत्वा भवति नेता नेतारं नमामि तम् ॥

अमृत राज पाठक
नवम 'ग'

समय का महत्त्व

बीता समय न लौट कर आता

बन्धु न इसे खरीदा जाता

भरसक कर लो तुम प्रयत्न
कोई नहीं फिर इत्नाको पाता ।

किया सदुपयोग इसका जिसने
हुई न उसके मन में पीर ।

किया है जिसने दुरुपयोग निरन्तर
बन्धु शर्म से हो गया है नीर ।

नष्ट न करो इस अमूल्य समय को
क्योंकि जाकर नहीं है आता ।

कर लो यदि सदुपयोग
तो बन जाओगे भाग्य-विधाता ।

अभिषेक रंजन
षष्ठ 'ख'

कहाँ गया हिटलर का खजाना

जर्मनी के नाजी शासक हिटलर के नाम और काम से पूरी दुनिया वाकिफ है। द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी सेनाओं की पराजय होती देखकर हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी। उसके बाद उसके खजाने का क्या हुआ, आज भी यह रहस्य है। हिटलर हीरों का बहुत शौकीन था। जब हिटलर के सामने हीरों का ढेर पेश किया गया तो वह बेहद खुश हुआ और उसने अपने फौजियों को कई इनाम भी दिए। हिटलर के खजाने में हीरों के अलावा कई तरह के रत्न, सोने की छड़े, बैंक नोट व नकली नोट बनाने का सामान भी था। सोने की कुल 750 छड़े थी, जिनका वजन था नौ टन। साथ ही थे हीरे— जवाहरातों से भरे 35 बड़े संदूक और नोटों से भरे 600 बोरे।

1945 में द्वितीय विश्व युद्ध का अंतिम दौर चल रहा था। बर्लिन शहर पर भीषण बमबारी हो रही थी। सारा शहर पर जल रहा था। हिटलर ने आत्मसमर्पण न करने का फैसला किया। बवेरिया के किले में हिटलर का पूरा खजाना रखा गया था। उसकी रक्षा के लिए भारी सेना तैनात थी। फिर भी हिटलर अपने खजाने की सुरक्षा को लेकर चिंतित था। बवेरिया उसे उतना सुरक्षित नहीं लग रहा था अतः उसने अपने सैनिक अधिकारियों को खजाना बवेरिया से बिटनबर्ड शहर पहुँचाने के आदेश दिए। जर्मनी के कोने-कोने से जर्मन सेनापति युद्ध से लौटकर बवेरिया के किले से सोना, जवाहरात, हीरे व धन आदि इकट्ठा करके सारे खजाने को जलपोतों में लदवाकर सुरक्षित रूप से बिटनबर्ड शहर पहुँचाने लगे खजाना वहाँ छिपा दिया गया।

उधर मित्र देशों की सेनाएँ लगातार आगे बढ़ रही थीं। खजाने को अलग-अलग जगहों पर छिपाया गया। अंत में उस खजाने को इंसीडियन नाम के गाँव में एक फौजी कप्तान मेटलर के घर में रखा गया। शायद यह सोचकर कि यहाँ किसी का ध्यान नहीं जाएगा। जिस समय खजाना छिपाया जा रहा था, मेटलर का रिश्तेदार कर्नल लर्व भी वहाँ मौजूद था। उसने खजाने को हड़पने की योजना बनाई। कर्नल लर्व ने जर्मनी के सेनापति को सुझाव दिया कि खजाने को जंगल में गाड़ दिए जाए, वही सबसे सुरक्षित जगह होगी। उसके इस सुझाव को मान लिया गया।

सादी वर्दी पहने 15 सैनिक अफसरों की देख-रेख में खजाने को गधों पर लादकर ले गया और जंगल में गाड़ दिया गया। कर्नल लर्व को यह सब मालूम था। किसी कारण से जब वह खुद यह खजाना पाने में असमर्थ रहा, तो उसने अमेरिकी सैन्य अधिकारियों को जाकर यह बता दिया कि जर्मन सेना ने खजाने को जंगल में गाड़ा है।

अमेरिकी सेना ने उसी समय अपने विशेष दस्ते बुलवाकर कर्नल लर्व द्वारा बताए गए

स्थान की खुदाई करवाई। काफी कोशिशों के बाद आखिर उन्हें वह खजाना मिल ही गया। खजाने को जीपों में लादा गया। खजाना इतना ज्यादा था कि जीपों में पूरी तरह समा नहीं पाया। जीपें आगे बढ़ रही थीं पीछे किसी ने ध्यान नहीं दिया कि खजाना लगातार नीचे गिर रहा था। कर्नल लर्व पीछे-पीछे अपने साथियों के साथ अमरीकी सेना के सैनिकों से नजरें बचाता हुआ सारा गिरा हुआ खजाना बटोरता गया।

अमेरिकी सेना जब अपने गंतव्य पर पहुँची तो हैरान रह गई। देखने में ही ऐसा लग रहा था कि काफी सामान कम है। इसके बाद जब अमेरिकी सेना ने सामान की सूची बनाई, तो वे दंग रह गए। कुल 1 हजार कैरेट हीरे व एक टन सोने की सलाखें ही जीपों में शेष बची थीं। बाकी 29 हजार कैरेट हीरे, 8 टन सोने और 600 नोटों के बोरे में कुछ भी पता नहीं चला। वह खजाना कहाँ गया, यह आज तक पता नहीं चल पाया।

आदित्य प्रताप

षष्ठ 'क'

यदि ऐसा होता

माचिस होती यदि जानकी के पास तो,

वह अशोक वाटिका में सशोक त्रास पाती क्यों ?

लाउडस्पीकर होता यदि चतुरानन के पास तो,

वह अपने चार-चार आनन बनाते क्यों ?

मोटर मटीज होती यदि शारदा के पास तो,

वह गदहे गरीब को अपना वाहन बनाती क्यों ?

टेलीफोन होता यदि द्वारिका से मथुरा लौ तो,

कृष्ण की याद में राधा बिलखाती क्यों ?

फाउन्टेन पैन होता यदि शकुन्तला के पास तो,

वह दुष्यन्त को नखों से पत्र लिखती क्यों ?

फायर ब्रिगेड होती यदि रावण के पास तो,

कपि के जलाये स्वर्ण लंका जल जाती क्यों ?

'मयंक मिश्र'

'नवम (ख)'

सामान्य ज्ञान

विश्व के प्रमुख चक्रवात

- | | | |
|---------------|---|---------------------------------------|
| (1) टाइफून | : | पश्चिम प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में |
| (2) हरीकेन | : | पश्चिम अटलांटिक महासागरीय क्षेत्र में |
| (3) विली-विली | : | आस्ट्रेलिया के उत्तर पश्चिम में |
| (4) साइक्लोन | : | हिन्द महासागरीय क्षेत्र में |
| (5) टारनेडो | : | कैरोबियन सागर क्षेत्र में |

विश्व में सबसे, बड़ा, ऊँचा व लंबा

- | | |
|--|--|
| (1) विश्व की सबसे लम्बी रेल सुरंग | — 'सीकेन' रेल सुरंग, जापान |
| (2) विश्व का सबसे लम्बा पुल
(समुद्र के ऊपर) | — 37.3 किमी० लंबा पुल, जापान के हेन्शु और शिकाकू को जोड़ने वाला |
| (3) विश्व की सबसे ऊँची इमारत | — पेट्रोनस टावर (मलेशिया) |
| (4) विश्व की सबसे बड़ी एयरलाइन | — बोइंग 747 |
| (5) विश्व का सबसे ऊँचा जानवर | — जिरॉफ (6.09 मी०) |
| (6) सबसे तेज रफ्तार वाला पशु | — चीता (120 किमी० / घण्टा) |
| (7) विश्व का सबसे बड़ा द्वीप समूह | — इण्डोनेशिया |
| (8) विश्व का सबसे बड़ा पक्षी | — ओस्टरिच (3 मीटर) |
| (9) विश्व की सबसे बड़ी नहर | — स्वेज (168 किलोमीटर) |
| (10) सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर | — मैक्सिको सिटी (लगभग 2 करोड़) |
| (11) सबसे बड़ा एवं भारी जन्तु | — ब्लू ह्वेल (वजन 200 टन) |
| (12) सबसे बड़ा अजायब घर | — अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री, न्यूयार्क (सं० रा० अमेरिका) |
| (13) सबसे अधिक विषैली मछली | — स्टोन मछली (प्रशान्त महासागर) |

प्रमुख जीव जन्तुओं का जीवन काल

जन्तु	आयु	जन्तु	आयु
(1) राइनोसिरिस	40 वर्ष	(6) खरगोश	15 वर्ष
(2) गोरिल्ला	39 वर्ष	(7) तिलचट्टा	45 वर्ष
(3) टोड मेढक	36 वर्ष	(8) केंचुआ	6 वर्ष
(4) जिरॉफ	33 वर्ष	(9) मक्खी	76 दिन
(5) बन्दर	30 वर्ष	(10) शतुरमुर्ग	30 वर्ष

'मयंक मिश्र'

'नवम (ख)'

अद्भुत आश्चर्य

झील जो गायब हो जाए

आयरलैण्ड में एन्ट्रिम प्रदेश की लोघारीमा झील समय-समय पर एक भूमिगत नहर से होकर अचानक गायब हो जाती है और फिर अचानक प्रकट हो जाती है।

समुद्री खरगोश

यह चार माह में 47 करोड़ 80 लाख अंडे देता है।

वर्षा करने वाला वृक्ष

गर्म क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला 'समानी समन' (SAMANEA SAMAN) नामक पेड़ दिन में फलियों (PODS) में पानी एकत्र कर लेता है और शाम को घनी वर्षा के रूप में उसे बरसा देता है।

ईरान का आर-पार रेल पथ

यह रेल पथ कैस्पियन सागर से फारस की खाड़ी तक 895 मील में फैला हुआ है। इसे 10 वर्षों में 15 करोड़ डॉलर खर्च करके बनाया गया था। मार्ग में 4102 पुल और 224 सुरंगें पड़ती हैं। एक स्थान पर तो 900 फीट की दूरी पार करने में 6 पुल और 4 सुरंगें पार करनी पड़ती हैं।

जनरल जो छः बार मरा

फ्रांसीसी सेना के जनरल बैपटिस्टे डि मॉन्टमॉरिन को युद्ध स्थल में पाँच बार मृत घोषित किया गया था और दफनाते समय प्रत्येक बार वह जिन्दा हो उठे थे। उन्होंने फ्रांसीसी सेना की कुल 55 वर्ष तक सेवा की और 75 वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हुए। (1704-1779)

जाको राखे साइयाँ

प्लोइरमेल फ्रांस का कैसिमिर पॉलेमस नामक व्यक्ति 3 बार समुद्र में जहाज दुर्घटनाओं में फँसा और हर बार वही अकेला बच सका। 'जीएन्ने कैथरीन' नामक जहाज 11 जुलाई 1875 को ब्रेस्ट के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ, ट्रॉयजफ्रेरीज 4 सितम्बर 1880 को बिस्के की खाड़ी में और 'एल ओडियन 1 जनवरी 1882 को न्यूफाउण्डलैण्ड के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ। तीनों दुर्घटनाओं में बचने वाला वह एकमात्र व्यक्ति था।

गीदड़ जो राजा बन गया

भारत में प्रतापगढ़ के राजा ने पराजित नरेश को अपमानित करने के लिए एक गीदड़ को राजमुकुट पहना कर गरवारा का शासक बना दिया और उस जानवर ने 12 वर्ष तक राज्य किया।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

रानी पाँच वर्ष की आयु में पढ़ना लिखना सीखकर भगवान राम के 1,100 विभिन्न नाम प्रत्येक दिन दो घंटे धार्मिक भावना से जीवन पर्यन्त लिखती रहीं।

एक शासक जिसने दोबारा एक वस्त्र नहीं पहना

हैदराबाद का छठवाँ निजाम और भारत का सबसे धनी शहजादा मीर महबूब अली ख़ाँ (1856-1911) ने अपने जीवन में एक वस्त्र कभी दूसरी बार नहीं पहना। बेशकीमती सफ़ेद, बारीक मलमल से बने कपड़े एक बार इस्तेमाल करने के बाद महल के नौकरों को दे दिए जाते थे।

आदित्य प्रताप
(षष्ठ 'क')

ऐसा क्यों होता है

पानी डाला और जमीन ठंडी :

गरम-गरम फर्श पर पानी डालते ही जमीन ठंडी हो जाती है। देखने में हमें यह बात सीधी सी लगती है कि पानी डाला और हो गई जमीन ठंडी। लेकिन इसके पीछे वैज्ञानिक कारण है। जब हम गरमों से तपती जमीन पर पानी डालते हैं तो पानी वाष्प के रूप में ऊपर उठता है साथ ही धरती की गरमी को भी ले जाता है, जिससे जमीन और आसपास की हवा के तापमान में कमी आ जाती है और हमें ठंडा-ठंडा महसूस होता है।

लाल-लाल चेहरा :

हम जब कभी घबराते हैं या जोर से हँसते हैं तो एकाएक हमारा चेहरा लाल हो जाता है। बहुत ज्यादा गोरे लोगों पर तो यह तुरंत नजर आ जाता है। होता यँ है कि जब भी ऐसी स्थिति आती है हमारी त्वचा के नीचे पाई जाने वाली छोटी-छोटी रक्त नलिकाएँ चौड़ी हो जाती है। ऐसे में उनमें रक्त ज्यादा मात्रा में प्रवाहित होने लगता है और चेहरा लाल हो जाता है।

मधुमक्खियों की भिन्न-भिन्न :

जब कोई मधुमक्खी हमारे पास से गुजरती है तो एक जूँ-जूँ घूँ-घूँ की सी आवाजे आती है। दरअसल जब भी कोई कीट उड़ता है तो अपने पंखों को फड़फड़ाता रहता है, इससे कंपन होता है। अगर कंपन एक सैकण्ड में 16 बार से अधिक होता है तो उससे एक अलग ही स्वर निकलता है। मधुमक्खियों से जो भिन्न-भिन्न की आवाज आती है वह उनके पंख फड़फड़ाने की आवाज ही होती है।

आदित्य प्रताप
(षष्ठ 'क')

प्रेम ही ईश्वर है

अगर भाई-भाई में प्रेम नहीं रहता, तो एक भाई दूसरे को देखना नहीं चाहते। माँ बेटे का प्रेम। बेटा कितना भी आवारा क्यों न हो माँ हमेशा उसे अपना प्यार देती रहती है।

प्रेम वह है जो कभी भी धुँधला नहीं पड़ता। प्रेम एक अदृश्य शक्ति है जो दो दिलों के बीच सेतु है। प्रेम एक ताकत और कमजोरी भी है। यह हरदम हीरे की भाँति चमकता रहता है। प्रेम यानि कि जमीन, प्रेम यानि आसमान, प्रेम सपनों का एक मंदिर है। प्रेम गुलाब की पंखुड़ियों पर ठहरी हुई वह नाजुक बूँद है जिसे सहेजकर रखने की ताकत हाथों में नहीं है। प्रेम एक अथाह सागर है, जिसमें व्यक्ति डूब कर दुनिया को भूल जाता है। ये इतनी बड़ी दुनिया प्रेम पर ही टिकी हुई है। अगर इस दुनिया में प्यार नहीं होता तो ये दुनिया कब की समाप्त हो चुकी होती इसलिए प्रेम ही ईश्वर है।

सनी रंजन
षष्ठ 'क'

वाणी

“मधुरिका वाणी में न होती,
तो विष बाण बन गया होता।
वेदना हृदय पाषाण बन गया होता।।
स्वार्थ प्रेम को न छलता,
तो प्रेम वरदान बन गया होता।
याचना भक्त में न होती,
तो भक्त भगवान बन गया होता।।”

संजीव कुमार शुक्ल
नवम 'ख'

मानव जीवन का लक्ष्य

ओ मेरे अहबाद क्या कारे-नुमायाँ कर गये।

बी.ए. हुए नौकर हुए, पेंशन मिली और मर गए॥

— अकबर इलाहाबादी

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है — यह बड़ी उलझन में डालने वाला प्रश्न है। रुचि, स्थिति, अवस्था आदि की भिन्नता से भी जीवन के लक्ष्य में पर्याप्त विभिन्नता हो सकती है। इसलिए इसे इदमित्थम् कहना संभव नहीं।

किसी के जीवन का लक्ष्य केवल धनार्जन हो सकता है। उस हेतु धनार्जन एकमात्र चातुर्य, एकमात्र पांडित्य हो सकता है —

न विद्यया केन चिदुद्धृतं कुलं

हिरण्यमेवार्जय निष्फलाः कलाः।

आज लोगों के मन में एक धारणा घर कर गयी है कि पैसे के द्वारा जीवन में सब कुछ खरीदा जा सकता है। उनके लिए भतृहरि ने लिखा है —

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।

स एव वक्ता स च दर्शनीयः, सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति।

ऐसा सोचने वाला अपना सारा जीवन कुबेर बनने में लगा देगा व ऐसी चेष्टा करेगा कि लक्ष्मी उसका पादपीडन करती रहे।

कुछ लोगों के लिए जीवनभर ज्ञान की पिपासा, विद्या की साधना ही जीवन का लक्ष्य हो सकता है। समस्त शास्त्रों का रहस्य भेद कर आने वाली अग्रिम संतति को ज्ञान का नया खजाना लुटा जाना ही उनके पांडित्य का उद्देश्य हो सकता है। कुछ अंधविश्वासी पद प्राप्ति को ही अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।

कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो वैज्ञानिक बनकर प्रकृति के रहस्यों के तहखानों का पता लगाने में अपने जीवन की बाजी लगा दें।

इस प्रकार जीवन के लक्ष्य भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। किसी को उत्तम या निकृष्ट कहना उचित नहीं है। हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि दृष्ट जीवन के लक्ष्य के साथ यदि अदृष्ट जीवन के लक्ष्य का तारतम्य बैठा लिया जाए तो यह अत्युत्तम है।

अंकुर दीक्षित
(अष्टम 'क')

आरक्षण

आरक्षण! 59 वर्षों की आजादी के बाद उद्भूत विलक्षण राजनैतिक मायावितान! यह मायावितान समसामायिक राजनीति व सामाजिक संकट का अवदान है। आरक्षण जातीय वर्गभेद की खाई को बृहत्तर बनाकर सिंहासन पर अखंड आसीन होने की साजिश का परिणाम हैं। यह एक ऐसा दुष्क्र है, जो किसी भी गतिमान व विकासशील समाज को पंगु बना देने के लिए पर्याप्त है। कार्लाइल ने एक बार कहा था कि "यदि तुम किसी समुदाय को निष्क्रिय बना देना चाहते हो, तो उसे अतिरिक्त सुविधाएँ दे दो, सुविधाओं के व्यामोह में वह समाज कर्मपथ से विरत हो जाएगा।" आज इसी निष्क्रियता का प्रभाव है, राष्ट्रीय चरित्र को धूमिल करने का सुनियोजित षडयंत्र व सामाजिक विकास का चक्का जाम कर देने वाला कदम है।

आरक्षण का मुद्दा भी अन्य मुद्दों की भाँति ही राजनीति विशारदों ने ही उठाया। आरक्षण उठाया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री वी०पी० सिंह जी व तत्कालीन केन्द्रीय विधिमंत्री शांति भूषण जी ने। देश की लगभग 47 प्रतिशत जनसंख्या गरीब है। इन गरीबों की विकास यात्रा की ओर ध्यान न देकर जिस देश के राजनीतिज्ञ जातीय भावनाओं को भड़काने में भशगूल हैं, उस देश का विकास भला कैसे संभव है जिस समाज में प्रतिभा की जगह जाति की पूजा होती है, वह समाज निरंतर कुण्ठा व निराशा की आग में जलता रहेगा। आरक्षण जैसी अंध साजिशें कुर्सी से चिपके रहने में कुछ लोगों की मदद तो कर सकती हैं, किन्तु इससे सामाजिक उन्नयन की आशा नहीं की जा सकती। होना तो यह चाहिए कि गरीबों को पढ़ने-लिखने एवं प्रगति करने के यथासंभव अवसर दिए जाएँ पर पद केवल योग्यतानुसार। लेकिन, आरक्षण के जरिए तो हम मेधाशून्य व्यक्तियों को शिक्षक, चिकित्सक, अभियंता इत्यादि-इत्यादि बनाकर देश का सत्यानाश करने जा रहे हैं। इस स्थिति को भलीभाँति परखकर ही जातिवाद का जहर फैलाने वाले आरक्षण की युक्ति युक्तता पर विचार करने की आवश्यकता है।

अंकुर दीक्षित
अष्टम 'क'

“मँहगाई”

चावल दाल अनाज चढ़ गए,
चढ़ गए सभी मसाले।
घी गुड़ की बात करो मत,
दर्शन के पड़ गए लाले॥
दूध दही इतना मँहगा है,
जितना मँहगा सोना।
पाँच रूपए का लोगे फिर भी,
नहीं भरेगा दोना॥
लौकी तोरड़, भिण्डी आलू,
इनके भाव निराले।
रोज खरीदें यदि इनको हम,
निकल जायें दीवालें॥
घड़िया कॉपी पेन किताबें,
इन पर भी मँहगाई।
खाली पॉकेट हो जाएगी,
जिसने यह मँगवाई॥
कोठी बँगला वाहन ये सब,
धनवानों के चरे।
है गरीब जनता पर केवल,
खाली तम्बू डेरे॥
बजट पेश करने से पहले,
नहीं दया है आई।
जिससे जियें उसी को मेंटे,
कैसी सत्ता आई॥

कुलदीप पाल
दशम 'ग'

आधुनिक छात्र

बचपन में मैंने जब शोधकर्ता शब्द का नाम सुना तो एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मैं भी किसी विषय पर शोधकार्य करूँगा। फिर विद्यालय में धीरे-धीरे अष्टम कक्षा तक मैंने शोध तो पूरा नहीं किया परन्तु लघु शोध अवश्य पूरा कर लिया।

इस शोध में आधुनिक छात्र के इतिहास, प्राप्ति स्थान, बनाने की विधि तथा गुणों के संबंध में आश्चर्यचकित तथ्य सामने आए हैं।

इतिहास : 19 वीं सदी के मध्यान्तर से आधुनिक छात्र के इतिहास का आरम्भ होता है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस छात्र व प्राचीन काल के छात्रों में किसी भी प्रकार की समानता नहीं पाई गई है।

प्राप्ति स्थान : इनकी विशेष उपस्थित की संभवनाएँ सिनेमागृहों, जलपान गृहों तथा नगरीय उद्यानों में रहती हैं। यदकदा स्कूलों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में मिल जाते हैं।

निर्माणविधि : इनकी निर्माण विधि अत्यन्त दुष्कर है क्योंकि ये स्वयं ही बन जाया करते हैं। फिर भी विद्यालय में प्रवेश के अभाव में इनका बनना सम्भव है।

भौतिक गुण :

1. लम्बे, पतले, मोटे, टिगने सभी रूपों में पाये जाते हैं।
2. आधुनिक फैशन के सुचालक व अच्छी आदतों के कुचालक होते हैं।
3. पुस्तकों के समीप लाने पर प्रायः दूर भागते हैं।

रासायनिक गुण :

1. जबान पर कुवाच्य शब्दों का संचरण रहता है।
2. सिनेमा गृहों के प्रति तीव्र आकर्षण युक्त होते हैं।
3. अध्यापक रूपी लिटमस पेपर के संपर्क में लाने पर लाल पीले होने लगते हैं।

पहचान : सिर पर घने रंग-बिरंगे बाल, सूखेगाल, आँखे धँसी, होठ सिगरेट से काले एवं आधुनिक वस्त्रों से युक्त सरलता से पहचाने जा सकते हैं।

उपयोग : चुनाव प्रचार हेतु, परीक्षा में नकल कराने हेतु, मारपीट एवं दंगों में प्रयुक्त होते हैं।

अंकुर पटेल
अष्टम 'क'

“जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना”

“वास्तव में वह देश वन्दनीय है, जहाँ के निवासियों को अपने देश पर गर्व हो, जिनमें स्वाभिमान हो और जो परस्पर बन्धुत्व की भावना से बँधे हुए हों। वह देश निः सन्देह उन्नति के चरमशिखर पर पहुँचेगा, वह शांति सम्पन्न राष्ट्र अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ होगा। एकता के सूत्र में बँधा देश कभी परतन्त्र और पराधीन नहीं हो सकता। उसमें शत्रु को धराशायी करने की शक्ति होती है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक सभी प्रकार की समृद्धियाँ उसे सहज ही प्राप्त हो जाती हैं और वह अन्य देशों में शिरोमणि देश गिना जाता है। परन्तु देश की सर्वांग उन्नति के लिए जनता में एकता चाहिए। वह एकता विचारों की एकता हो, भावों की एकता हो, भाषा की एकता हो अथवा धार्मिक एकता हो। एक धागे को आसानी से तोड़ा जा सकता है, परन्तु वे सभी धागे मिलकर जब एक मोटा रस्सा बन जाते हैं, तो उससे केवल कुएँ में से पानी ही नहीं निकाला जा सकता बल्कि हाथी भी बाँध लिये जाते हैं। इसलिए कहा गया है कि – “संघे शक्तिः कलौयुगे।”

“कलयुग में संघ समूह में ही शक्ति है। अकेला मनुष्य यदि कुछ करना चाहे, तो नहीं कर सकता, जब तक कि उनके पीछे एक सूत्रबद्ध सामूहिक शक्ति न हो। देश की स्थिति के समान ही घर की स्थिति समझनी चाहिए। जिस घर में सदैव कलह और झगड़े बने रहते हैं वहाँ सदैव दरिद्रता रहती है और जिस घर में सभी मेलजोल से हिल मिल कर रहते हैं, वह घर दिन पर दिन उन्नति करता है, वहाँ लक्ष्मी, सुख और शान्ति निवास करती है। जहाँ हृदय की एकता और विचारों का साम्य होगा वहाँ धन-धान्य सुख-सम्पति, यश, गौरव स्वयं खिंचे चले आयेंगे। इसलिए तुलसीदास जी ने लिखा है.....

“जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।

जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना।।”

“सुमति से मनुष्य में शक्ति आती है। अकेला व्यक्ति कितना ही परिश्रम करे उतना पैसा पैदा नहीं कर सकता है, जितना कि घर के चार-छः व्यक्ति मिलकर एक व्यापार को ऊपर उठा ले जाते हैं। कहावत भी है कि – “अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।” जिस घर में सुमति का साम्राज्य होता है उस घर की आर्थिक स्थिति बहुत जल्दी अच्छी हो जाती है और जहाँ कुमति होती है वहाँ सभी अपनी-अपनी जेब भरने की कोशिश करते हैं परिणाम यह होता है कि व्यापार में लगायी गयी असली पूँजी भी कुछ दिनों में साफ हो जाती है क्योंकि उन सभी के सामने अपने-अपने व्यक्तिगत स्वार्थ हैं और व्यक्तिगत लक्ष्य हैं। जहाँ सुमति होती है वहाँ अलग-अलग स्वार्थ और लक्ष्य नहीं होते सभी का एक लक्ष्य होता है कि हमारे घर, हमारे परिवार और हमारे पूर्वजों का नाम हो, यश फैले। घर के बड़े आदमी के इशारे पर सभी चलते हैं। परिणाम यह होता है कि चन्द दिनों में ही परिवार कहीं से कहीं पहुँच जाता है। यही स्थिति देश की है। जिसकी जनता में सुमति है, एकता है, वह देश धन-धान्य से सम्पन्न होता है। एक समय था जब कि भारत में सुमति थी, एकता थी तब भारत को “सोने की चिड़िया” कहा जाता था।

संसार में दो शक्तियाँ महान हैं — एक जन शक्ति, दूसरी धन शक्ति। जिसके पास दोनों हो उसका दूसरों पर स्वयं ही प्रभाव जम जाता है उसे स्वयं कहने की आवश्यकता नहीं होती कि आप मेरा मान कीजिए या प्रतिष्ठा कीजिए। उसका ऐश्वर्य और उसका गौरव सर्वत्र स्वयं ही छा जाता है। आज अमेरिका, इंग्लैंड या रूस को किसी से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ रही कि हम तुमसे बड़े हैं। बल्कि स्वयं ही विश्व के समस्त देशों पर उनका ऐश्वर्य छाया हुआ है यही स्थिति परिवार की है, जिस परिवार में धन-जन शक्ति पर्याप्त होती है उसका यश और ऐश्वर्य मुहल्ले में क्या सारे नगर में छा जाता है, और चारों ओर कीर्ति फैलने लगती है। जिस जाति, जिस समाज और जिस देश में लोग परस्पर मेल-जोल, बन्धुत्व की भावना, परस्पर सहयोग तथा सहानुभूति से कार्य करते हैं, पारस्परिक स्वार्थों और मतभेदों में नहीं उलझते, उस जाति, उस देश और समाज का उज्ज्वल यश संसार में फैलता है, वह एक सार्वभौम, प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र माना जाता है।

जहाँ सुख और शान्ति नहीं होती वह स्थान मनुष्य के लिए नर्क बन जाता है दिन-रात झगड़े होते हैं, कलह होती है, एक की बात दूसरे को सहन नहीं होती है। जहाँ कुमति का अन्धकार छाया हुआ है वहाँ स्वर्ग की कल्पना कैसे की जा सकती है, वह तो घोर नर्क है। मनुष्य अपने कर्मों से ही स्वर्ग की सृष्टि कर लेता है और अपने कर्मों से ही नर्क की। जहाँ सुमति है वहाँ स्वर्ग है, सुख है, शान्ति है और जहाँ कुमति है वहाँ नर्क है, कलह है, अशान्ति है। गुप्त जी ने लिखा है.....

“बना लो जहाँ, हाँ, वहीं स्वर्ग है,
स्वयं भू नहीं, कहीं स्वर्ग है।
खलों को कहीं भी नहीं स्वर्ग है,
मलों के लिए तो यहीं स्वर्ग है।”

जीवन में सफलता की कुंजी सुमति है। जहाँ सुमति है वहाँ धन धान्य, सम्पत्ति शक्ति, प्रतिष्ठा, यश, गौरव सभी कुछ है फिर भला मनुष्य को सुख और शान्ति कैसे नहीं मिलेगी? जीवन की असफलता मनुष्य को दुःखी, अशांत बना दिया करती है परन्तु सफलता तो सुमति की दासी है। जहाँ सुमति होगी, वहाँ सफलता अवश्य होगी और जहाँ सफलता होगी वहाँ सुख और शांति अवश्य होगी।

भारतवर्ष जैसे विशाल देश में अनेक जातियाँ हैं उनकी अनेक भाषाएँ हैं और वे भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बी हैं। भारतीय होने के नाते राष्ट्रीयता की भावना सभी में होनी चाहिए। मैं एक बार फिर से तुलसीदास जी द्वारा रचित यह चौपाई जो वास्तव में सत्य है, दोहरा रहा हूँ।

“जहाँ सुमति तहँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपत्ति निधाना।।”

अभिनव शुक्ल
दशम 'क'

भड़क उठेगा भारत देश

कश्मीर तो होगा लेकिन पाकिस्तान नहीं होगा।
अरे ऐटम बम बनाकर तुम फिर से मन में फूल गये,
सन् पैसठ और इकहत्तर के युद्धों को शायद भूल गये।
याद करो नब्बे हजार बन्दी
उन पाक जवानों को, याद करो
शिमला समझौता, इन्दिरा के एहसानों को।
अबकी जंग छिड़ी तो सुन लो नमोनिशाँ नहीं होगा
कश्मीर तो होगा

धन और लालच दिखलाकर तुम भेज रहे नादानों को,
खुला शस्त्र है खुला प्रशिक्षण खुली हुई शैतानी है।
सारी दुनिया जान चुकी ये हरकत पाकिस्तानी है,
समझा दो दुनिया वालों को वरना भड़क उठेगा भारत देश।
देश अगर हो गया खड़ा तो त्राहि-त्राहि मच जाएगी,
पाकिस्तान के हर कोने में महाप्रलय आ जाएगी।
फिर जन्मों-जन्मों तक जिन्ना जैसा शैतान नहीं होगा,
कश्मीर तो होगा.....

अबकी चिन्ता मत करो, चेहरे का खोल बदल देंगे,
इतिहास की क्या हस्ती, सारा भूगोल बदल देंगे।
हर मोड़ बदल करके लाहौर से गुजरेगी गंगा,
इस्लामाबाद की छाती पर फहरेगा भारत का झण्डा।
फिर कई जनमों तक परवेज मुशर्रफ जैसा शैतान न होगा,
कश्मीर तो होगा.....

प्रांजुल तिवारी
सप्तम 'क'

ऐसा क्यों होता है?

1. सूर्य की गर्मी में पत्तियाँ गर्म क्यों नहीं होती है?

कितनी भी तेज गर्मी क्यों न हो पेड़-पौधों की पत्तियाँ गर्म नहीं होती। दरअसल ये पत्तियाँ सूक्ष्म कोशिकाओं की अनेक परतों से मिलकर बनी होती है। प्रत्येक पत्ती की कोशिकाएँ ऊपर तथा नीचे वाह्य त्वचा से ढकी रहती हैं। इनमें छोटे-छोटे छिद्र होते हैं जिन्हें रंध्र कहते हैं। ये रंध्र वाल्व का कार्य करते हैं। साथ ही साथ पत्ती और वायुमण्डल के बीच गैसों के आदान प्रदान पर नियंत्रण करते हैं। इन्हीं रंध्रों से पत्ती के भीतर की ऑक्सीजन और जलवाष्प बाहर आती है। जब रंध्र बन्द हो जाते हैं तो गैसों का आदान-प्रदान रुक जाता है यही रंध्र पत्तियों के तापमान को सामान्य बनाए रखते हैं।

2. रोते समय आँसू क्यों आते हैं?

जब हम रोते हैं या ज्यादा खुश होते हैं तो उसी खुशी के कारण हमारी आँखों से आँसू निकल आते हैं। हमारी आँखों के बाहरी कोण के करीब तीन (लैक्राइमल) अश्रु ग्रंथियाँ पायी जाती हैं इनसे स्रावित जल, पलकों, कार्निया और कन्जंक्टिवा को नम बनाए रखते हैं और इनकी सफाई कर इन्हें हानिकारक जीवाणुओं से रक्षा करता है। चोट लगने या किसी बाहरी वस्तु के आँख में गिर जाने या दुख, सुख की भावनाओं में आँसू अधिक मात्रा में स्रावित होकर बहने लगते हैं।

आदित्य जाह्नवी
षष्ठ 'ख'

बापू से कह देना

मेरे बापू से कह देना, देश तुम्हारा रोता है।
तुम्हारी कल्पनाओं का, यहाँ पर खून होता है,
तुम्हारे त्याग का सबको, नहीं एहसास होता है।
मेरे बापू से कह देना, देश तुम्हारा रोता है।

सिसक कर रो रही देखो, अहिंसा और आजादी,
नैतिकता बेड़ी में जकड़ी, देश का सौभाग्य सोता है।
मेरे बापू से कह देना, देश तुम्हारा रोता है।

पहन कर वस्त्र खादी के, बने बहुरूपिये नेता,
अहिंसा, न्याय, प्रवचन का, मुखौटा हर कोई पहने
तुम्हारे नाम का बापू, यहाँ व्यापार होता है,
तुम्हारे सत्य-व्रत का, यहाँ उपहास होता है।
मेरे बापू से कह देना, देश तुम्हारा रोता है।

अभिषेक रंजन
षष्ठ 'ख'

परीक्षा

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन, चिन्ता से हृदय धड़कता था।
जब से जागा था सुबह तभी से बाँया नयन फड़कता था।
जो उत्तर मैंने याद किये, उनमें से आधे याद हुए।
वह भी विद्यालय जाने तक यादों में बर्बाद हुए।
जो सीट दिखायी दी खाली, उस पर ही जमकर जा बैठा।
था एक परीक्षक कमरे में, वह आया झल्लाया ऐंठा।
रे-रे तेरा ध्यान किधर है, क्यों करके है आया देरी।
तू यहाँ कहाँ पर आ बैठा, उठ जा! यह है कुर्सी मेरी।
मैं उचका एक उच्चके सा, मुझ में सीटों में मैच हुआ।
टकरा चकराकर वहीं कहीं, एक कुर्सी द्वारा कैच हुआ।
पेपर पर पड़ी नजर मेरी, तो सारा बदन पसीना था।
किसी भी पेपर से डरा नहीं, बस में मेरा सीना था।
कापी के बरगद पर मैंने, कलम कुल्हाड़ी दे मारा।
घण्टे भर अन्दर प्रश्नों का, कर डाला वारा न्यारा।
अकबर का बेटा था बाबर, जो वायुयान से आया था।
उसने हिन्द महासागर, अमेरिका से मँगवाया था।
गौतम जो बुद्ध हुए जाकर, गांधी जी के चले थे।
होटल का मालिक था अशोक टाटा टी बेचता था।
अंग्रेजो भारत छोड़ो, वह ग्राहकों से कहता था।
झाँसा दे जाती थी सबको, ऐसी थी झाँसी की रानी।
ऐसे ही प्रश्नों को चुन-चुनकर, मैंने प्रश्नों के पापड़ बेल दिये।
उत्तर के ऊँचे से पहाड़, मैंने टीचर की ओर धकेल दिये।
टीचर जी बेचारे इस, ऊँचाई तक कैसे चढ़ पाते।
लाचार पुराने चश्मे से, इतिहास नया क्या पढ़ पाते।
इनके दम से बाहर मेरा, इतिहास का भूगोल हुआ।
ऐसे में रिजल्ट होना था क्या, मेरा नम्बर तो गोल हुआ।

रोहित सिंह
नवम 'ग'

ऊपरी चमक का भ्रम

रूपम नगरी में एक राजा रहते थे। उनका एक लड़का था। वह बहुत सुन्दर था। इसीलिये सभी उसे प्यार से चाँद कहते थे। जब वह आठ वर्ष का था तब उसका मन महल में नहीं लगता था। वह चुपचाप महल से निकलकर गरीब बच्चों के बीच पहुँच जाया करता था। वह गरीब बच्चों में नये-नये वस्त्र और मिठाई इत्यादि बाँट दिया करता था। उसे गरीबों से बहुत हमदर्दी थी इसीलिये वह किसी न किसी रूप में उनकी समय-समय पर सहायता करता रहता था।

एक दिन पुत्र को गरीब बच्चों के साथ खेलता देख राजा ने उसे समझाया लेकिन उस बालक का मन नहीं बदला। राजा को बहुत क्रोध आया और उसने आदेश दिया, इस नालायक को फाँसी पर चढ़ा दो। यह सुनकर राजकुमार ने अपने पिता से कहा पिता श्री मुझे कुछ समय दे दो तत्पश्चात् आप मुझे फाँसी पर चढ़वा देना। राजा ने उसकी बात मान ली दूसरे दिन राजकुमार तीनों घोड़े लेकर जंगल में पहुँचा और पाँच दिन बाद वापस महल लौटा उसके पास तीन घोड़े थे और तीनों घोड़ों पर एक-एक और एक ही तरह के सन्दूक रखे थे। जब वह भर दरबार में तीनों सन्दूक लेकर पहुँचा तो उसने वहाँ उपस्थित दरबारियों से कहा कि यह तीन तरह के सन्दूक हैं। पहला सोने का, दूसरा चाँदी का और तीसरा लकड़ी का है तो बताओ इनमें से कौन सा सन्दूक अच्छा है। सभी दरबारियों ने एक साथ कहा सोने का, उसके बाद चाँदी का और खराब सन्दूक लकड़ी का है। जब राजकुमार ने तीनों सन्दूक खोले तो सोने के सन्दूक में जहरीले कीड़े, बिच्छू इत्यादि थे। चाँदी के सन्दूक में कंकड़, पत्थर व लकड़ी के सन्दूक में हीरे-जवाहरात भरे थे। यह तमाशा राजा अपने सिंहासन पर बैठे-बैठे देख रहा था। तभी राजकुमार ने कहा ऊपरी चमक देखकर भ्रम में न पड़ें उसने राजा से कहा यह न सोचिए धनी सभी अच्छे हैं और गरीब सभी बेकार व खराब हैं तभी राजा को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने अपने पुत्र को गले लगाते हुए कहा कि पुत्र तू बुद्धिमान है। मैंने बिना सोचे समझे बिना विचार किये गलत समझ लिया। तू हमारे कुल का दीपक है।

परहित बस जिनके मन माँही
तिन्हँ कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।

रोहित सिंह
नवम 'ग'

डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमन

आज विज्ञान अपनी चरम सीमा पर है। चंद्रशेखर वेंकटरमन पर भारत को गर्व है। विज्ञान में नोबेल पुरस्कार पाने वाले वेंकट रमन केवल भारत के ही नहीं अपितु एशिया के प्रथम व्यक्ति थे।

रमन का जन्म दक्षिण भारत के मद्रास नामक नगर में 7 नवम्बर सन् 1882 ई0 को एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ जो विद्या के क्षेत्र में विख्यात था। उनके पिता का नाम चंद्रशेखर अय्यर तथा माता का नाम पार्वती अम्मल था। विजयगापट्टम में रमन की प्रारंभिक शिक्षा हुई और 12 वर्ष की अल्पायु में मैट्रीकुलेशन परीक्षा सम्मान के साथ उत्तीर्ण कर ली। तत्पश्चात् उन्होंने स्नातक की परीक्षा विज्ञान के साथ उत्तीर्ण की। पूरे विश्व विद्यालय में डॉ. रमन को भौतिक विज्ञान में स्वर्ण पदक मिला।

रमन ने अपने आविष्कारों से यह सिद्ध किया कि अणु प्रकाश बिखेरते हैं तो मूल प्रकाश में परिवर्तन हो जाता है तथा नई किरणों के कारण परिवर्तन दिखता है।

डॉ. रमन का देहान्त 82 वर्ष की आयु में 21 नवंबर 1970 को बंगलौर में हुआ। इस प्रकार विज्ञान के क्षेत्र में सी0बी0 रमन का योगदान सदा अविस्मरणीय रहेगा।

प्रणव त्रिपाठी

अष्टम क'

तीन बातें

तीन चीजें किसी का इन्तजार नहीं करती।

समय, मौत और ग्राहक

इन तीनों का सदा सम्मान करें।

माता, पिता और गुरु

तीन चीजों से हमेशा बचने की कोशिश करें।

बरी संगति, स्वार्थ और निन्दा

तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता।

अक्ल, चरित्र और हुनर

तीन चीजों में मन लगाने में उन्नति होती है।

ईश्वर, परिश्रम और विद्या

तीन चीजें जीवन में एक बार मिलती हैं।

माँ, बाप और यौवन

अखिल गंगवार

सप्तम 'क'

हँसना मना है

डॉक्टर — आपको ये चोट कैसे लगी?

मरीज — जब मैं हैलीकॉप्टर उड़ा रहा था ऊँचाई पर पहुँचने के बाद मुझे ठंडी लगी तब मैंने उसका पंखा बंद कर दिया और मैं गिर गया।

* * *

जज — अच्छा तो इस युवक ने तुमको कौन-कौन सी गालियाँ दी?

युवक — महाशय, वह सब गालियाँ शरीफों के सामने देने वाली नहीं है?

वकील — हम सब यहाँ से चले जाते हैं तुम जज साहब को अकेले में सुना दो।

* * *

पिता — (बेटे को डाँटते हुए) "क्या तुम जानते हो कि नेहरू जी जब तुम्हारी उम्र के थे तो अपनी कक्षा के मॉनीटर थे"

पुत्र — (हँसते हुए बोला) "अच्छी तरह जानता हूँ, और क्या आप जानते हैं कि जब वह आपकी उम्र के थे तो भारत के प्रधानमंत्री थे?"

* * *

एक आदमी की अर्धी कुछ लोग एम्बुलेंस यानी शववाहिनी में ले जा रहे थे, लेकिन मोटर चलाकर नहीं बल्कि धक्का देकर ले जा रहे थे।

एक आदमी ने पूछा — "मरने वाले की अन्तिम इच्छा क्या थी?"

दूसरे ने जवाब दिया — हर हाल में पेट्रोल की बचत।

* * *

दो पागल आपस में ही —

पहला पागल — तुझे पता है भारत और इंडिया में लड़ाई हो गयी है।

दूसरा पागल — छोड़ो यार, हम तो हिंदुस्तान में रहते हैं।

अखिल गंगवार

सप्तम 'क'

कर्म का आनन्द

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक थामस अल्वा एडीसन अपने कार्य में इतने तल्लीन रहा करते थे कि प्रयोगशाला से बाहर निकलने की फुरसत नहीं होती थी। इस आदत से उनकी पत्नी परेशान रहती थीं। एक दिन एडीसन प्रयोगशाला में प्रयोग कर रहे थे। उनकी पत्नी ने उन्हें बार-बार पुकारा, लेकिन वे अपने कार्य में इतने तल्लीन थे कि उन्होंने पत्नी की आवाज नहीं सुनी। कार्य समाप्त होने पर जब बाहर आये तो पत्नी बोली 'आप नित्य कार्य में लगे रहते हैं, कभी अवकाश भी कर लिया करो। एडीसन बोले 'अवकाश करके मुझे कहाँ जाना चाहिए?' 'कहीं भी जा सकते हो जहाँ मन चाहे। उनकी पत्नी बोली। 'ठीक है, मैं वहीं जाता हूँ' इतना कहकर वह फिर से प्रयोगशाला में चले गए।

विकास मिश्र
नवम 'ग'

बिल्ली का सपना

छत पर लेटी बिल्ली सोयी,
लगी देखने सपना।
एक महल था, जहाँ बर्थ डे
मना रही थी अपना।

ऊँट, बंदर, भालू
हिरण और सियार
चूहों को पैकेट में भरकर
लाये थे उपहार।

सबने उससे हाथ मिलाया
बढ़कर की आगवानी।
इतने चूहों को देखा तो,
आया मुँह में पानी।

मेहमानों से आँख बचाकर,
पैकेट पर जब झपटी।
मुँह के बल आ गिरी सड़क पर,
नाक हो गयी चपटी।

आदित्य शोखर
षष्ठ 'ख'

ज्ञान की ग्यारह बातें

(क) सदा रहने वाला कौन है ?	—	ईश्वर
(ख) सबसे सुन्दर वस्तु क्या है?	—	सृष्टि
(ग) सबसे बड़ी वस्तु क्या है?	—	आकाश
(घ) सबसे उत्तम वस्तु क्या है?	—	नेकी
(ङ) सबसे बलशाली वस्तु क्या है?	—	आवश्यकता
(च) सबसे सरल वस्तु क्या है?	—	सलाह
(छ) सबसे कठिन वस्तु क्या है?	—	स्वयं को जानना
(ज) सबसे स्थायी वस्तु क्या है?	—	आशा
(झ) सबसे शीघ्रगामी वस्तु क्या है?	—	मन
(ञ) मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु कौन है?	—	क्रोध
(ट) सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?	—	मनुष्य

मयंक बाजपेयी
नवम 'ख'

जिन्दगी

- जिन्दगी एक जुआ है — उसे खेलो।
जिन्दगी एक चुनौती है — उसका सामना करो।
जिन्दगी एक खुशी है — उसे खर्च करो।
जिन्दगी एक संघर्ष है — उसे स्वीकार करो।
जिन्दगी एक दर्द है — उस पर नियंत्रण करो।
जिन्दगी एक दुख है — उसे सहन करो।
जिन्दगी एक वरदान है — उसका आलिंगन करो।
जिन्दगी एक माला है — उसे हँसते हुए पूरा करो।
“जिन्दगी तो बस जिन्दगी है” — इसका उचित उपयोग करो।

मयंक बाजपेयी
नवम 'ख'

पुकार रही है मंजिलें मेरे पास आ जाओ
आ रही हैं जो भी मुश्किलें उन्हें भूलते जाओ ।
एक काँटे की चुभन से जो तुम रुक जाओगे
हौंसला वहीं दूट जायेगा आगे नहीं बढ़ पाओगे ।
मंजिलें तो तुम्हारे पास हैं इरादे तो पक्के करो
पहुँचना है मंजिल पर यह सोचकर आगे बढ़ो ।
अगर बढ़ रहे हो आगे, तो बढ़ते ही चले जाओ
आगे कठिनाइयों का समन्दर, यह सोचकर न घबराओ ।

यश अवस्थी
अष्टम 'क'

व्यक्तित्व निर्माण में नैतिकता

डॉ० राधाकृष्णन के शब्दों में – सही शिक्षा वही है जो शिक्षार्थी में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित कर सके। मनुष्य के व्यक्तित्व के सुगम विकास एवं चरित्र के निर्माण का आधार नैतिकता है। नैतिकता को तीन गुणों में समाहित किया जा सकता है – सत्य, शिव एवं सुन्दर। जो कुछ सत्य के अनुसार किया जाता है और उसका कारण सबका कल्याण होता है, वही सुन्दर है, अच्छा है, नैतिक है।

नैतिकता मानव जाति का ही विशेष गुण है, यह सभी समाजों में पायी जाती है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त नैतिक गुणों को सीखने की क्रिया सतत चलती रहती है। नैतिकता एक साधन है, साध्य नहीं। नैतिकता मनुष्य को अन्य व्यक्तियों या प्राणियों के साथ उत्तम तथा न्यायोचित व्यवहार करना सिखाती है। नैतिकता व्यवहारपरक है अर्थात् नैतिक वही है जिसकी विचारधार कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं है, नैतिकता सिखायी नहीं, सीखी जाती है। नैतिकता बहु आयामी है अर्थात् इसमें वचनबद्धता, समयबद्धता, प्रेम और सहयोग को आवश्यक माना जाता है। यह जीवन जीने की एक कला है।

सभी परिस्थितियों के उपयुक्त होते हुए भी आवश्यक है कि नैतिकता हेतु उपयुक्त वातावरण हो क्योंकि कुसंग के दलदल में नैतिकता के पुष्प नहीं विकसित हो सकते। इस

वातावरण में विद्यालय, परिवार, आस-पास का वातावरण जन संचार माध्यम और वृहत् समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है नैतिकता तो सत्संग की वसुन्धरा पर खिला वह प्रसून है जो खिलता है तो चारों ओर अपनी सुगन्ध बिखेर देता है।

वास्तव में नैतिकता के मार्ग में बाधक तत्त्वों पर भी विचार करना होगा क्योंकि उनके बिना हटाये मार्ग सुगम नहीं होगा। ये कुछ हैं व्यक्तिगत दोष जिनसे आज का समाज ग्रस्त है जैसे— क्रोध, लिप्सामयी वृत्तियाँ, मोह, काम, अहंकार तथा सामाजिक दोष एवं कुश्रितियाँ, परम्परागत सामाजिक संरचना, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, भौतिकवादी जीवन दर्शन, स्वकेन्द्रित व्यक्तिवाद एवं भ्रष्ट राजनीति। इन दोषपूर्ण तत्त्वों को समाज से निष्कासित कर नवनिर्माण करने की आवश्यकता है। इनका निष्कासन इन तत्त्वों के विरोध एवं अवमानना से होगा। वास्तव में हम सभी में प्रेम और करुणा का अंश होता है किन्तु वह अंश सभी में जाग्रत नहीं होता बीज रूप में सुप्तावस्था में विद्यमान है जिसे प्रस्फुटित करने के लिए अनथक प्रयास की आवश्यकता है क्योंकि नैतिकता मानव का अस्तित्व है यह व्यक्ति के चरित्र में सद्गुणों को उत्पन्न एवं उनका विकास कर व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह जीवन को सफल, श्रेष्ठ एवं समृद्ध बनाती है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी धरती पर स्वर्ग बने तो हमें नैतिक होना ही पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है।

यश अवस्थी

अष्टम 'क'

सफलता के सात सूत्र

सुसंस्कारः, सदाचारः, स्वच्छताया, सुरक्षोदभावः।

सद्गुणवत्ताया, सदुत्पादकता, सुसम्बन्धाः सर्वमूलकाः॥

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित उपरोक्त श्लोक में कहा गया है कि सफलता प्राप्त करने के लिए सात निम्न कारक महत्वपूर्ण हैं —

1. **सुसंस्कार** : बच्चों में अच्छे संस्कारों की नींव घर के वातावरण में माता-पिता द्वारा रखी जाती है, परन्तु संस्कारों का पालन-पोषण विद्यार्थी जीवन के अन्तर्गत विद्यालय के प्रांगण में होता है। राष्ट्र, प्रेम, श्रम एवं कर्म की महत्ता तथा जीवन के मूल्यों के प्रति विद्यार्थी के मस्तिष्क में सद्विचारों के रोपण में अध्यापकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः एक सामान्य विद्यार्थी को राष्ट्र का सजग, चिन्ताशील, अच्छा नागरिक बनाने में सुसंस्कारों का अधिक महत्व है।

2. **सदाचार** : प्रत्येक मनुष्य की पहचान उसके आचरण से होती है। प्राचीन काल में शिष्य, गुरुकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरु का आचरण उनके समक्ष एक उदाहरण के रूप में होता था। उसी को ग्रहण कर वे गुरु शिष्य की परंपरा का निर्वाह करते थे। आज के बदलते परिवेश में भी विद्यालय के अनुशासन को शिक्षकों का आचरण विद्यार्थियों में मानव स्फूर्ति व नवचेतना के रूप में जीवन को सफल व सार्थक बनाने में सहायक होता है।
3. **स्वच्छता** : स्वच्छता केवल तन की नहीं वरन् मन एवं कर्म की रुचि एवं जीवन में सुगन्ध प्रदान करती है। किसी भी व्यक्ति के सफल होने में स्वच्छता का विशेष महत्व है।
4. **सुरक्षा** : दुर्घटनाओं सर्वथा आकस्मिक होती हैं, परन्तु उनके कारण आकस्मिक नहीं होते। दुर्घटनाये होती हैं – रख-रखाव से, नियमों के पालन न करने से, या अत्यधिक जल्दबाजी से। विद्यार्थियों को सुरक्षा के प्रति जागरूकता का गुण शुरू में ही भर दिया जाना चाहिए। सर्वप्रथम 'सुरक्षा' का नियम एक सुनहरा नियम है जिसका प्रत्येक विद्यार्थी को पालन करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
5. **सदगुणवत्ता** : विद्यार्थियों में स्वच्छ एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को जन्म देना चाहिए ताकि आगे की स्पर्धा में वे श्रेष्ठता को ग्रहण करने के लिए अत्याधिक परिश्रम तथा लगन से कार्य कर सकें। कार्यों एवं विचारों में नयापन सर्वथा गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होता है। सफल विद्यार्थी को सदैव दोषरहित कार्य करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।
6. **सदुत्पादकता** : कम से कम समय में अधिक से अधिक गुणात्मक कार्य करना ही सदुत्पादकता है। कार्यकुशलता को बढ़ाना, समय को बिल्कुल भी नष्ट न करना तथा श्रेष्ठतम कार्य करना ही विद्यार्थी का लक्ष्य होना चाहिए। भगवान गौतम बुद्ध ने लिखा है – 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' उत्पादकता का सच्चा अर्थ तभी प्राप्त हो सकता है, जब हमारे कार्य सर्वगुण सम्पन्न तथा सभी के हित के लिए अग्रसर हों।
7. **सुसम्बन्ध** : परस्पर मधुर सम्बन्ध सफलता की कुंजी है। अच्छे सम्बन्ध से सभी कार्य निर्विघ्न पूरे हो जाते हैं। जो व्यक्ति प्रेम व लगन से कर्तव्य का पालन करते हैं, वे सफलता की ओर अवश्य बढ़ते रहेंगे, चाहे प्रतिकूल परिस्थितियाँ ही क्यों न हों। अच्छे सम्बन्ध, ईश्वर के प्रति आस्था व परोपकार सफलता के मूल मन्त्र हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

अभय प्रताप सिंह
नवम 'ग'

‘अमूल्य है माँ’

एक बार श्याम के पिताजी बीमार हो गये। माँ ने श्याम को डॉक्टर को बुला लाने के लिए कहा। डॉक्टर आया डॉक्टर ने दवाई दी व एक टीका लगाया। जब डॉक्टर जाने लगा तो माँ ने श्याम से कहा कि तो डॉक्टर की फीस दे दो। श्याम ने पूछा माँ ये फीस क्या होती है। उसकी माँ ने कहा बेटा जो कोई काम करता है, उसे फीस देनी ही पड़ती है। तब श्याम ने एक कागज पर लिखा :-

पिताजी के जूते पालिश करने की फीस	- 50 पैसे
दूधिए से दूध लाने की फीस	- 01 रूपया
बाजार से सामान लाने की फीस	- 01 रूपया

यह कागज श्याम ने अपनी माँ को दिया। उसकी माँ ने वह पढ़ा और उसकी दूसरी तरफ लिखा :

नौ मास तक तुम्हें अपने गर्भ में रखने की फीस	- कुछ नहीं
दो साल तक तुम्हें दूध पिलाने की फीस	- कुछ नहीं
तुम्हें भोजन कराने, पढ़ाने की फीस	- कुछ नहीं

वह कागज श्याम को दे दिया। श्याम ने वह कागज पढ़ा तो वह अपनी माँ से लिपट गया और रोकर कहने लगा -

“सच माँ, तुम्हारी फीस कभी चुकाई नहीं जा सकती।”
“माताएँ तो सब बन जाती हैं, परन्तु मातृत्व का अपना एक विशेष चेहरा होता है।”

अभय प्रताप सिंह
नवम ‘ग’

गाँव की याद

याद आती है,
उस गाँव की,
पेड़ों की उन छाँव की।
खेत-खलिहानों की,
वहाँ पर मस्ती के बहानों की।
बड़ों के प्यार की,
औरों के दुलार की।
याद आती है,
दिन-भर मौज मस्ती की,
आम की बौरों पर मचलती तितली की।
उस छोटे से तालाब की,
पक्षियों के प्रेम-प्रलाप की।
वहाँ के लोगों से परस्पर मेल की,
हम उम्रों के साथ खेले नये-नये खेल की।
यह याद तो हमेशा आयेगी
उस गाँव की याद दिलायेगी।

संकल्प त्रिवेदी
एकादश 'क'

पानी रे पानी तेरा रंग कैसा?

क्या आपने सोचा है कि पानी का रंग कैसा होता है? गंध कैसी है? स्वाद कैसा है? हम पानी क्यों पीते हैं? इससे क्या-क्या फायदा होता है?

यदि पानी न पीएँ तो क्या होगा?

खैर जितने सवाल उतने ही जवाब किंतु सौ सवालों का एक ही जवाब है – कि पानी जीवन है, अर्थात् पानी बिन सब सून, पानी में जीवनदायिनी शक्ति है।

जापान की संस्था 'जापान सिकनेस एसोशिएसन ने पानी के प्रयोग से निम्नलिखित बीमारियों

के इलाज का दावा किया है -

- (1) सरदर्द (माइग्रेन), ब्लड प्रेशर, एनीमिया, हृदयरोग व बेहोशी।
- (2) कफ, खाँसी, ब्रोन्काइटिस, टी.बी.।
- (3) मेनिनजाइटिस, मेनिन जाइटिस (मस्तिष्क का बुखार), लिवर के रोग।
- (4) हाइपर एसिडिटी।
- (5) आँखों के रोग।

पानी पीने की रीति : प्रातः उठकर बिना कुछ खाए पीए ताँबे के बर्तन में रखा पानी पीना चाहिए। ध्यान रखें पानी पीने के 45 मिनट तक आप कुछ भी न खाएँ न पीएँ, हाँ, भ्रमण, व्यायाम, आदि कर सकते हैं।

पानी के इस प्रकार प्रयोग से निम्नलिखित बीमारियाँ उनके आगे दी गई समयावधि के अंदर मिट जाती हैं -

1. हाइपो/हाइपरटेंशन (लोबीपी/हाई बीपी) - 1 महीना
2. गैस की तकलीफ - 10 दिन
3. डाइबिटीज - 1 महीना
4. कब्ज - 10 दिन
5. टी.बी (तपेदिक) - 3 महीना
6. कैंसर - 6 महीना

“हरा लगै न फिटकरी, रंग चोखा होइ जाए।” चोखा ही क्या, पूरा चोखा हो जाए, पानी का प्रयोग शुरू करिए, बीमारियों को दूर करिए।

पानी के अन्य अनुभूत प्रयोग :

सर्दी हो या जुकाम या फिर एसिडिटी ही हो, जमकर पानी पीजिए (पानी गर्मकर जब एक चौथाई शेष बचे)।

बीड़ी/सिगरेट के लिए पानी रामबाण दवा है - बस जब भी तलब लगे जलनेति (नाक से पानी निकालना) कर लें

भैया पानी पीजिए, बिन पानी सब सून।

ज्यों मंसूरी के बिना, व्यर्थ है देहरादून॥

**पीयूष त्रिवेदी
एकादश 'क'**

मंजिल की ओर

जब खुद
खुद से खिन्न हो बैठा,
सागर तट,
थके हारे राही की तरह,
और देखता रहा अपलक,
शांत सागर में अचानक,
उठी ऊँची लहर को,
और उसमें फँसे नाविकों को,
जिनमें उमंग थी अभी भी,
साहिल को छू लेने की,
तथा उसके ऊपर सुदूर से,
उड़ते आते पक्षियों को,
जिनमें अपने नीड़ तक,
जाने की उम्मीद थी,
कि सहसा जाग उठी,
अन्तः स्थल में,
एक आशा की ज्योत्सना,
फिर से जाने को,
मंजिल की ओर।

पीयूष त्रिवेदी
एकादश 'क'

“माँ”

तोड़ती अपनी दःमर,
जिन्दगी से करती समर।
अपने शिशु को वह पांलती,
माँ की उतारो आरती ॥1॥

लहू पिलाकर पाला उसने,
रखा ममता की छाया में।
निश्छल प्रेम है वारती
माँ की उतारो आरती ॥2॥

शिवम त्रिपाठी
अष्टम 'क'

क्रिकेट दुनिया

- 1 सर्वाधिक वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम — ऑस्ट्रेलिया
- 2 सर्वाधिक वन डे में शतक मारने वाला खिलाड़ी — सचिन तेन्दुलकर
- 3 सर्वाधिक टेस्ट शतक मारने वाला खिलाड़ी — सचिन तेन्दुलकर
- 4 सबसे तेज ओवर खत्म करने वाला गेंदबाज — शाहिद अफरीदी
- 5 एक टेस्ट में सर्वाधिक रन बनाने वाला खिलाड़ी — ब्रायन लारा(400 रन)
- 6 सबसे तेज गेंदबाज — ब्रेटली, अख्तर, बाँड, पठान
- 7 सबसे तेज आक्रमक बल्लेबाज — शाहिद अफरीदी, माइक हसी
- 8 सबसे तेज विकेट लेने वाले खिलाड़ी — ग्लेन मैग्राथ, शेन वार्न
- 9 सर्वाधिक विकेट लेने वाला खिलाड़ी — शेन वार्न
- 10 स्पिन का जादूगर — मुथैया मुरलीधरन
- 11 वर्ल्ड कप में सबसे ज्यादा रन — सचिन तेन्दुलकर
- 12 सबसे अच्छा फिल्डर — हर्शल गिब्स, जॉन्टी रोड्स
- 13 वन डे में सबसे बड़ा स्कोर — श्रीलंका (443 पर 4 विकेट)
- 14 वन डे में सर्वाधिक विजयी टीम — आस्ट्रेलिया
- 15 टेस्ट में सबसे बड़ा स्कोर — 986
- 16 टेस्ट में सर्वाधिक विजयी टीम — आस्ट्रेलिया
- 17 विश्व में सर्वाधिक रन (वन डे) — सचिन तेन्दुलकर (14456 रन)
- 18 भारत का सबसे अच्छा स्पिनर — अनिल कुम्बले
- 19 भारत का पहला खिलाड़ी जिसने 67 गेंदों में शतक जड़ा — महेन्द्र सिंह धोनी
- 20 भारत का सबसे आक्रमक बल्लेबाज — महेन्द्र सिंह धोनी

रोहित पाण्डेय
नवम 'ख'

हिंदुत्व में सुधार की चुनौती

काल प्रवाह में हिंदुत्व की वाटिका के विध्वंस के लिए कुछ हाथ उपजे। उत्कृष्ट विचारों की सुगंध पतन की दुर्गंध के आगे खोती गई। धीरे-धीरे हिंदुत्व ने एक वीरान और अवसादकारी पतझड़ का रूप ले लिया।

पतझड़ के इस लंबे दौर का ही परिणाम है कि हिंदुत्व आज खेदजनक स्थिति में है। उसका मूल तत्त्व कहीं खो गया है, दर्शन और विचारधारा पर धूल की मोटी परतें जम गई हैं। हिंदुत्व में नवचेतना जागृत करने का कार्य लम्बे समय से प्रतीक्षित है और अब वह समय आ गया है जब इस बहुप्रतीक्षित कार्य को आरंभ किया जाना चाहिए।

मैं हिन्दू दर्शन और विचारधारा को तीन स्तरों में विभाजित करूँगा

1. पहला स्तर हिंदुत्व के मूल तत्त्व का है अर्थात् परम ब्रह्म के एकाकार स्वरूप को आत्मसात् करने का।
2. दूसरे स्तर पर वे धार्मिक विश्वास एवं परंपराएँ हैं जो इसके मूल दर्शन की विरोधी नहीं हैं और जो इसलिए अस्तित्व में आईं क्योंकि आम हिंदू जनमानस के लिए हिंदुत्व के मूल तत्त्व के बौद्धिक पक्ष को ग्रहण करना कठिन साबित हुआ व उसे अपनी धार्मिक जरूरतों को पूरा करने के लिए किंचित सरल तौर-तरीकों की आवश्यकता हुई।
3. तृतीय स्तर बनावटी रस्मों-रिवाज पंथों अंधविश्वासों तथा छद्म मान्यताओं से संबंधित है।

हिंदुत्व में सुधार का संबंध इस तीसरे स्तर के पूर्ण उन्मूलन से है। जब तक यह तीसरा स्तर किसी न किसी रूप में हिंदू समाज में मौजूद रहेगा तब तक एक विचारधारा के रूप में हिंदुत्व को शक्ति प्राप्त न होगी।

अनेक अवसरों पर हिंदू धर्म में व्याप्त मूर्ति पूजा प्रथा का विरोध होता है परंतु एक सच्चा श्रद्धालु मानव मस्तिष्क से संबंधित मानसिक विचलन से सचेत होता है। वह जानता है कि ईश्वर सर्वव्यापी है निरंकार है और उसे किसी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं, लेकिन उसका अनुभव करने उसके समीप जाने और उस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक रूप प्रदान करता है। यह एकाग्रचित्तता स्थापित करने का एक यत्न है, देवत्व के साथ संपर्क स्थापित करने जैसा है — एक ऐसी लौकिक शक्ति के साथ खुद को संबद्ध करने का प्रयास है जो पूरे विश्व को नियंत्रित करती है व जीवन के कण-कण में व्याप्त है।

क्या हिंदुत्व को उन तत्वों से बचाया जा सकेगा जो सत्य के स्थान पर असत्य का, प्रकाश के स्थान पर अंधकार का व अमरत्व के स्थान पर मृत्यु का प्रसार करते रहे हैं? वस्तुतः इन प्रश्नों के उत्तर में ही हिंदुत्व के रूप में एक महान सभ्यता का भविष्य निर्भर है — एक ऐसी सभ्यता का भविष्य जिस पर अर्नाल्ड टॉयनबी ने मानव मात्र की उत्तरजीविता का भरोसा जताया था।

पीयूष त्रिवेदी
एकादश 'क'

कलाम से सात सवाल

डा० ए०पी० जे० अब्दुल कलाम के नाम से कौन परिचित नहीं होगा। उनका व्यक्तित्व, उनकी सादगी और उनकी निष्पक्षता ही उनकी पहचान है। वे अवश्य ही हमारे देश के वर्तमान राष्ट्रपति हैं, परन्तु बच्चों से मिलना उनकी पहली पसंद है। बच्चों से ही मिलने जब वे एक समारोह में गये तो उन पर प्रश्नों की बौछार सी होने लगी। उनमें से कुछ प्रश्न इस प्रकार हैं -

प्रश्न 1 विश्व का प्रथम वैज्ञानिक कौन है?

उत्तर : बच्चा 'विश्व का प्रथम वैज्ञानिक' है। वैज्ञानिक हर चीज में 'क्यों' जानने के लिए प्रश्न करता है। बच्चे भी प्रायः यही सवाल करते हैं। यदि हम अपने में ये गुण विकसित कर लें तो हम भी वैज्ञानिक बन सकते हैं।

प्रश्न 2 आपके जैसा वैज्ञानिक अपने बाहरी व्यक्तित्व में कोई दिलचस्पी क्यों नहीं दिखाता?

उत्तर : "1980 में जब मैं S.L.V. - 3 का परियोजना निर्देशक था तो हमने 'रोहिणी' नामक राकेट को सफलतापूर्वक लान्च किया था। इसरो के प्रमुख डॉ० सतीश धवन ने मुझे एक संदेश भेजा कि प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की उपस्थिति में एक बधाई समारोह आयोजित किया गया है जिसके लिए मुझे तुरन्त दिल्ली रवाना होना है। मैंने उनसे पूछा कि मैं बिना सूट पहने, चप्पलों में ऐसे समारोह में कैसे जाऊँ? उन्होंने मुस्कुराकर कहा, "कलाम, तुम्हें चिंता नहीं करनी चाहिए। तुमने विजय परिधान पहन रखा है।"

अब तो आप समझ ही गये होंगे कि वास्तविक सज्जा क्या है?

प्रश्न 3 क्या आपके दिल में कोई ऐसा घाव है जो भरा नहीं?

उत्तर : नहीं, किसी को भी अपने साथ ऐसे घाव नहीं ढोने चाहिए। क्षमा ही विकास को प्रेरित करती है। बस मन में एक गहरी वेदना है कि जब मुझे 'भारत रत्न' मिला तो मेरे माता-पिता और गुरु विक्रम साराभाई वहाँ नहीं थे।

प्रश्न 4 क्या बचपन में आप शरारतें करते थे?

उत्तर : जब मैं कक्षा सात में था, तो कक्षा का मॉनीटर था। एक दिन भूगोल की क्लास में मुझे बातें करते हुए शिक्षक ने पकड़ लिया। उन्होंने हमसे कहा, “आपको कक्षा में पाठ पर उतना ही ध्यान देना चाहिए जितना एक चलती रेलगाड़ी में चढ़ते समय होता है। मैंने डीठ होकर जवाब दिया कि “चलती रेलगाड़ी में चढ़ना खतरनाक होता है श्रीमान्।” पूरी कक्षा में ठहाके लगने लगे। कहना न होगा कि इसके लिए मुझे मार पड़ी थी।

प्रश्न 5 'आशा' शब्द को स्पष्ट करें।

उत्तर : 1857 में भारत की स्वतंत्रता की 'आशा' जन्मी कई कुर्बानियों के बाद हमें यह प्राप्त भी हुई अब भारत 2020 तक विकसित राष्ट्र बनने की 'आशा' कर रहा है। आपके माता-पिता की यही 'आशा' है कि आप पढ़-लिखकर उनका सम्मान बढ़ाएँ।

प्रश्न 6 देश से क्या चीज समाप्त कर देनी चाहिए?

उत्तर : यह पराजयवादी दृष्टिकोण कि 'हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि यह कठिन है' को समाप्त करना होगा। इसे माता-पिता के स्नेह, अच्छी शिक्षा तथा अच्छे लोगों के आशीर्वाद द्वारा किया जा सकता है।

प्रश्न 7 यदि ईश्वर एक वरदान दे तो क्या माँगेंगे?

उत्तर : “मेरे देश को एक विकसित राष्ट्र बना दो।”

दिव्यांशु त्रिपाठी
एकादश 'क'

भास्वर-भारत

सत्त्व तत्त्व से युक्त सर्वदा 'भा' में 'रत' भारतवासी हैं
वसुधा ही परिवार हमारा इस चिन्तन के विश्वासी हैं।

हमने अपने शोणित से ज्योतित की अपनी वह ज्योति प्रखर
जिससे दीपित दुनिया भर की मानवता का इतिहास अमर
यह विश्व सदा से जलता आया है प्रपंच की ज्वाला में
भीतर की शान्ति ढूँढ़ता फिरता है साकी की प्याला में
हम इस ज्वाला को सदा शमित करते अपनी आहुति देकर
औरों के हित अमरित झरते सुख पा जाते हैं विष पीकर ॥ 1 ॥

सत्त्व तत्त्व

यह भासमान भारत ही है अब विश्व क्षितिज का प्रखर सूर्य
है संघर्षण का स्त्रोत और उत्ताल उदधि का प्रबल सूर्य
इसके 'ख' इसके गर्जन से काँपी सदैव से दानवता
पंकिल गर्तों से उठ आयी सर्वोच्च शिखर पर मानवता
फिर से समग्र मानवता अब प्रारंभ करे भारत पूजन
भारत ही है विश्वास सुखद भारत ही है पौरुष गर्जन ॥ 2 ॥

सत्त्व तत्त्व

विश्वास और अपनत्व अगर है इस संस्कृति का सजग मूल
तब क्यों फिर-फिर मनुपुत्रों को चुभता अपना ही स्वार्थ शूल
प्रलयानल धधके, वसुधा अब यह हो ही जाये क्षार-क्षार
यदि दुनिया अपनी स्वार्थ सिद्धि के पीछे दौड़े बार-बार
इस दुनिया को भारत ने ही सर्वदा राह है दिखलाई
पर भारत की दिव्य मनीषा पर कैसी मदान्धता है छाई।

सत्त्व तत्त्व

अर्पण श्रीवास्तव 'साहित्यसाक्षी'

नवम 'ख'

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबंध प्रतियोगिता
2006 – परिणाम

बाल-वर्ग			
नाम	कक्षा	स्थान	अंक
1. अनुराग भदौरिया	8'ख'	प्रथम	85 / 100
2. यश अवस्थी	8'क'	द्वितीय	80 / 100
3. देवेश बाजपेई	8'ख'	तृतीय	78 / 100
किशोर वर्ग			
1. आदर्श कुमार	10'ख'	प्रथम	80 / 100
2. आशीष तिवारी	10'क'	द्वितीय	75 / 100
3. अभिषेक शुक्ल	10'ख'	तृतीय	70 / 100
तरुण वर्ग			
1. आशीष कुमार तिवारी	12'क'	प्रथम	90 / 100
2. रोहित ओमर	12'क'	द्वितीय	85 / 100
3. निखिल श्रीवास्तव	11'ख'	तृतीय	80 / 100

ब्रेन मैपिंग

गुनाह करने के लिए अपराधी नए तरीके खोजता है और फोरेंसिक साइंस अपराधी के उसी तेज दिमाग को पढ़ने के लिए नई विधियाँ खोज लेती है। अपराधियों से सच उगलवाने के लिए वर्तमान में एक नई फोरेंसिक जांच की भी खूब चर्चा है। यह जांच है इंसान के दिमाग को पढ़ते अर्थात् ब्रेन मैपिंग या ब्रेन फिंगर प्रिंट तैयार करने की। इंसान के दिमाग में क्या है, क्या सचमुच इसे पढ़ा जा सकता है? हमारे दिमाग में हजारों-लाखों दृश्य, समृतियाँ, आवाजे, चित्त तथा घटनाओं का ब्यौरा कैद होता है। जैसे ही उनमें से कोई हमें प्रत्यक्ष दिखता है तो दिमाग में तुरंत प्रक्रिया होती है। माना आप किसी अपरिचित शहर में सड़क पर जा रहे हैं। पीछे से आपको कोई आवाज देता है। आवाज सुनते ही बिना उसे देखे आपके जेहन में उस व्यक्ति की तस्वीर उभर आएगी और आपको एक विचित्र खुशी तथा आश्चर्य का आभास होगा। वह इसलिए कि आपके मस्तिष्क में उस व्यक्ति से जुड़ी स्मृतियाँ कैद हैं। जाहिर है, आपका मस्तिष्क आवाज पर एक विशेष प्रतिक्रिया पैदा करेगा। ब्रेन मैपिंग दिमाग की इसी प्रतिक्रिया के सिद्धांत पर आधारित है। इस तकनीक का अविष्कार अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ० लारेंस फारवेल ने किया था।

आशीष बुन्देला
नवम 'ख'

स्वतंत्र भारत का स्वप्न

कल मैंने एक सपना देखा,

स्वतंत्र भारत अपना देखा।

लोगों का मन हर्षित देखा

तिरंगे को फहरते देखा।

अंग्रेजों का कब्जा छूटा,

लोगों का डर-भय छूटा।

अब भारत का विकास होगा,

दरिद्रता का निकास होगा।

गद्दारों को दूर भगाना,

अपनों को है गले लगाना।

भारत का उत्थान करेंगे

वृद्धों का सम्मान करेंगे।

बिना क्रांति के शांति नहीं है

माँ के मुख पर कांति नहीं है

हम कुछ ऐसा काम करेंगे

भारत माँ का नाम करेंगे।

धर्म-ध्वजा फिर से फहराए

अम्बर में भगवा लहराए।

भारत माँ का भाग्य जगा दें।

कायरता को आग लगा दें।

शशांक मोहन दुबे

नवम 'ख'

दया-भाव

भीड़-भाड़ युक्त स्टेशन में एक व्यक्ति खड़ा था चिंता उसके मुँह से झलकती थी। वह बहुत देर से स्टेशन पर था। तभी एक बस आती है, वह कंडक्टर से कहता है कि चोर ने उसके सभी रूपए चोरी कर लिये हैं, वह इस शहर में नौकरी के लिए इंटरव्यू देने आया था, इस शहर में नया है, कोई उसकी जान-पहचान वाला नहीं है। अतः आप मुझे श्यामपुर तक छोड़ दे। उसने इतना कहा ही था कि परिचालक ने अपमानित करते हुए उस युवक से कहा कि तुम जैसे झूठे बहुत देखें हैं, हटो यहाँ से।

बहुत समय बीत गया दोपहर आ गई कई बसें चली गईं। अब उस युवक की किसी से कुछ कहने की हिम्मत न हुई। वह बहुत डरा-सहमा था। वहीं स्टेशन पर एक व्यक्ति का ढाबा था, वह उस युवक को बहुत देर से देख रहा था। अंत में उसने युवक से पूछा कि तुम सुबह से आये हो, परंतु किसी बस में नहीं बैठे आखिर तुम्हें जाना कहाँ है? अंत में फिर युवक ने अपने साथ घटित घटना के बारे में बताया। उस ढाबे वाले को उस युवक के ऊपर दया आ गई। उसने उस युवक को कुछ खाने को दिया तथा जो अंतिम बस वहाँ जा रही थी, उसमें बैठाया तथा उसका किराया दिया।

इस घटना से यह सिद्ध होता है कि इस संसार में वास्तव में सच्चाई, दयालुता खत्म हो रही है मगर कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्होंने इस संसार में दया-भाव को जीवित रखा है। आधुनिक युग में मानव स्वार्थी हो गया है, उसे केवल अपना सुख अच्छा लगता है, वह दूसरों के सुख नहीं देख सकता है। वह मानव ही क्या जो सिर्फ अपने लिए जिए। अपने लिए तो पशु भी जीता है, तो पशु व मनुष्य में अन्तर ही क्या? कहा भी गया है —

“अयं निजः परोवेतिगणनालघुचेतसाम्।”

अजय सिंह रावत

अष्टम 'क'

रोचक तथ्य

1. फ्लाइंग फिश एक ऐसी मछली है जो 365 मी० लम्बी उड़ान भर सकती है।
2. शुतुरमुर्ग एक ऐसा पक्षी है जो अपने मुख्य भोजन पौधे, बीज, बेरी आदि को खाकर उन्हें पेट में पीसने हेतु पत्थर लोहे के टुकड़े आदि को खाता है।
3. ईल मछली पानी के बिना जीवित रह सकती है। यह मछली म्यूकस के कारण सूख नहीं पाती है। यह अपनी त्वचा से साँस लेती है।
4. हारिल पक्षी एक ऐसा पक्षी है जो जमीन पर पैर नहीं रखता है।

पहेलियाँ

1. छोटे बड़े सभी की मित्र,
रोज बनाया करती चित्र।
खूब चलाओ उड़ती गरदन,
छीलों चल पड़ती हरदम। (पेन्सिल)
2. पाँच अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा सीधा एक समान। (मलयालम)

रोहित सिंह
नवम 'ग'

ब्रह्ममुहूर्त में जागरण का महत्त्व

विष्णु पुराण व भविष्य पुराण में इस बात का उल्लेख मिला है कि जो व्यक्ति सूर्योदय होने पर भी सोया रहता है वह पाप का भागी बनता है। इसी बात को बाल्मीकि रामायण में भरत जी ने माता कौशल्या को यह बात इस रूप में कही है – “यदि राम को वनवास भेजने में मेरा हाथ है तो मुझे वह पाप लगे जो सूर्योदय के पश्चात सोकर उठने से लगता है।”

हमारे मनीषियों ने सूर्योदय के पूर्व सोकर उठने के महत्त्व को और उसकी आवश्यकता को स्पष्ट रूप में रेखांकित किया है। शास्त्रों में ब्रह्म-मुहूर्त को अमृत बेला कहा गया है।

रोहित सिंह
नवम 'ग'

‘चार’ का पहाड़ा

धक्के से चलती हर बार,
चार टॉग की बुढ़िया कार।
पीकर लस्सी खाकर पान,
बैठे उसमें आठ जवान।
शुरू हो गया ठेलम ठेल,
डाला बारह लीटर तेल।
फिर भी बना न कोई काम,
सोलह घण्टे हुए तमाम।
थककर हुए सभी जब चूर,
लाये गये बीस मजदूर।
मजदूरों ने माँगी फीस,
नोट थमाए फिर चौबीस
पैसा करे कौन भुगतान,
लड़े अट्टईस बार जवान।
बात-बात पर बिगड़ी बात,
उखड़ गए बत्तीस दाँत।
गाल फुलाकर लेकर टीस,
पैदल गए मील छत्तीस।
गयी मिल डाक्टर की फीस,
खर्च हुए रूपये चालीस।

रक्त बना सिन्दूर

(संस्मरण)

एक बार सुभाषचन्द्र बोस अपनी माँ के साथ मंदिर में काली माँ की पूजा करने गये। उनकी माँ सिन्दूर घर में ही भूल गयी थीं। जब वह पूजा करने लगी, तो वहाँ सिन्दूर न मिला। वह अधीर हो उठी। उनका घर मंदिर से दूर था। उन्हें परेशान देख बालक सुभाष ने तुरन्त जेब से चाकू निकालकर अपनी उँगली काट ली और खून की बूँद टपकाते हुए बोले -

“माँ देवी की रक्त के सिन्दूर से पूजा कीजिए।” माँ उनकी साहस एवं कुशाग्र बुद्धि को देखकर चकित रह गयी। उन्होंने देवी से सुभाष के लिए आशीर्वाद माँगा। बड़े होकर सुभाष अद्वितीय नेता और देशभक्त हुए, जिनका नाम आज भी स्वर्णिम अक्षरों में हमारे भारतवर्ष के इतिहास में अंकित है।

अभय प्रताप सिंह
नवम 'ग'

अंकों का खेल

प्रत्येक स्थिति में सात बचेगा -

1. कोई भी अंक मन में सोचो। जैसे तुमने आठ ले लिया तत्पश्चात उस अंक को दो से गुणा करो $(8 \times 2) = 16$
 - (ii) 5 का योग करो : $(16 + 5 = 21)$
 - (iii) 12 का योग करो : $(21 + 12 = 33)$
 - (iv) 3 को घटाओ : $(33 - 3 = 30)$
 - (v) 2 का भाग करो : $(30 \div 2 = 15)$शेष प्राप्त अंक में सोचा हुआ अंक को घटाओ : $(15 - 8 = 7)$

अब इस खेल को अपने मित्र के साथ खेल सकते हो।
2. (i) कोई तीन अंक की संख्या ले ली (अपने मन में) जैसे- संख्या 233 ही ले ली।
 - (ii) उसका गुणा 11 से किया - $233 \times 11 = 2536$
 - (iii) उसका गुणा 91 से किया - $2536 \times 91 = 233233$जो संख्या मन में ली थी क्या वह दो बार आयी है यदि आयी है तो इसे अपने मित्र के साथ खेल सकते हो।

पीयूष दीक्षित
नवम 'ग'

फिल्म रोल के अविष्कारक जॉर्ज ईस्टमैन

18 जुलाई सन् 1854 का वाटर विले, न्यूयार्क में जन्में जॉर्ज ईस्टमैन बचपन से ही प्रतिभा के धनी थे। चौदह वर्ष की अल्प आयु में ही इन्होंने अच्छी शिक्षा ग्रहण कर ली थी। पिता जॉर्ज वाशिंगटन ईस्टमैन, जो एक व्यवसायी थे, की अकस्मात मृत्यु हो जाने के कारण इनका पालन पोषण माँ मारिया किलबार्न ने किया। पिता की मृत्यु के कारण ईस्टमैन को बचपन में काफी परेशानियाँ झेलनी पड़ी।

जॉर्ज ईस्टमैन एक सृजनात्मक व्यक्तित्व के साथ एक सहृदय व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में अमेरिका के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय यूनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर को 100 मिलियन की धन राशि दान की थी। इन्होंने ईस्टमैन स्कूल ऑफ म्यूजिक की भी स्थापना की, जो वर्तमान में अमेरिका के प्रसिद्ध स्कूलों में एक है। इस महान अविष्कारक की मृत्यु के पश्चात् अमेरिका ने इन्हें सम्मानित करते हुए सौवीं वर्षगांठ पर डाकटिकट जारी किया।

अमेरिकी यूनिवर्सिटी ऑफ रोचेस्टर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर फ्रैंक विक्स के अनुसार ईस्टमैन एक वैज्ञानिक, व्यवसायी और खोजकर्ता थे जो फोटोग्राफी के क्षेत्र में क्रांति लाए। वास्तव में कैमरे के आविष्कार से पहले हम अपने आप को सिर्फ शीशे में ही देख सकते थे। अपनी तस्वरी को एक सोप बॉक्स जैसे छोटे से डिब्बे में बंद कर पाना एक कल्पना मात्र थी, जिसे ईस्टमैन ने सच कर दिखाया। आज यह फिल्में हर इंसान की जिंदगी में झांकती सी दिखायी देती हैं और जिंदगी का इतना अहम हिस्सा बन चुकी है कि जन्म से मृत्यु तक हमारे साथ चलती है।

मुश्किलें सिर उठायेंगी, कदम भी लड़खड़ायेंगे

दोस्त-घर-अपने-पराए छूट जायेंगे

घड़ी में इन्तहानों की कदम जो भी बढ़ाएगा

मुश्किलें झुक ही जायेंगी, मुकद्दर वह बनाएगा।

विमलेश कुमार

षष्ठ 'क'

जीवन एक गणित है

जीवन एक गणित है,

इसमें अच्छाईयों को जोड़ो और बुराईयों को घटाओ

दोस्ती का गुणा करो और दुश्मनी का भाग दो

जीवन एक गणित है।

इसमें सच्चाई को जोड़ो और झूठ को घटाओ

प्रेम का गुणा करो और घृणा का भाग दो

जीवन एक गणित है।

इसमें आशाओं को जोड़ो और निराशाओं को घटाओ

विश्वास का गुणा करो और अंधविश्वास का भाग दो

जीवन एक गणित है,

इसमें परिश्रम को जोड़ो और आलस्य को घटाओ

साहस का गुणा करो और कमजोरियों का भाग दो

विमलेश कुमार

षष्ठ 'क'

भक्ति की महिमा

कन्नौज में एक दुराचारी ब्राह्मण था। भगवान के भक्तों को सताना, लोगों का सामान लूट लेना तथा चोरी करना इसका काम था, किन्तु इसकी पत्नी साहबी थी। उससे जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम उसने नारायण रखा। अजामिल ने जीवन भर भगवान की भक्ति नहीं की थी, किन्तु जब वह मृत्यु शैय्या पर पड़ा तो दुःख से कहराते हुए उसके मुख से बार-बार अपने पुत्र के लिए 'नारायण' शब्द ही निकलता था। अंतिम समय में जब यमदूत इसके पास पहुंचे तो नारायण शब्द सुनकर उन्होंने समझा कि यह अवश्य ही कोई बहुत बड़ा भक्त है। यमदूत लौट गए और उसे मोक्ष की प्राप्ति हुई।

प्रस्तुति : विमलेश कुमार

षष्ठ 'क'

विश्व की चौथी बड़ी सेना हमारी

भारतीय सेना विश्व की चौथी सबसे विशाल सेना है। भारत में हर साल 15 जनवरी को सेना दिवस मनाया जाता है। एक नजर भारतीय सेना से जुड़े कुछ रोचक पहलुओं पर –
के.एस. करिअप्पा स्वतंत्र भारत के पहले सेनाध्यक्ष थे। वर्तमान सेनाध्यक्ष जनरल जोगिन्दर जसवंत सिंह 14 वें सेनाध्यक्ष हैं।
भारतीय सेना छह कमानों में संगठित है –

1. पश्चिमी कमान (मुख्यालय : शिमला)
2. पूर्वी कमान (मुख्यालय : कोलकाता)
3. उत्तरी कमान (मुख्यालय : ऊधमपुर)
4. दक्षिणी कमान (मुख्यालय : पुणे)
5. मध्य कमान (मुख्यालय : लखनऊ)
6. दक्षिण-पश्चिम कमान (मुख्यालय : जयपुर)

प्रत्येक कमान लेफ्टिनेंट जनरल के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ के अधीन होती है। थल सेना में राष्ट्रपति अंगरक्षक (प्रेसीडेंशियल बॉडीगार्ड्स) भी होते हैं।

करीब 13 साल पूर्व 6 मार्च 1993 को पहली बार 25 युवतियों को बतौर अधिकारी सेना में शामिल किया गया। सेना में लड़कियों का अधिकतम कार्यकाल 10 वर्ष नियत किया गया है।

पुनीता अरोड़ा भारतीय सेना के इतिहास में लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर पहुँचने वाली पहली महिला हैं। वह सशस्त्र सैन्यबल मेडिकल कॉलेज पुणे की लेफ्टिनेंट जनरल पद को सुशोभित कर रही हैं।

परमवीर चक्र सेना का सर्वोच्च वीरता पुरस्कार है। 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रपति द्वारा यह वीरता पदक स्थापित किया गया।

अब तक 21 बहादुरों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। परमवीर चक्र को सैनिक अपनी कमीज के बायीं ओर बैंगनी रिबन से लगाते हैं।

इस पदक को एक सैन्य अधिकारी की पत्नी सावित्री खानोलंकर ने डिजाइन किया। संयोग से पहला परमवीर चक्र उनके दामाद मेजर सोमनाथ शर्मा को ही दिया गया। यह पदक ऋषि दधीचि के त्याग और शिवाजी की तलवार भवानी को प्रतिबिम्बित करता है।

अरुणाचल प्रदेश के त्वांग शहर में करीब 15,000 फुट की ऊँचाई पर पर्वत घाटक स्कूल स्थित है। यहाँ कमांडो प्रशिक्षण के साथ सैनिकों को इतनी ऊँचाई पर रह युद्ध के लिए तैयार रहने की भी ट्रेनिंग दी जाती है। इतनी ऊँचाई पर अपनी तरह का यह विश्व में इकलौता प्रशिक्षण स्कूल है।

शुभंकर

नवम 'क'

ऐसी बातें कभी न भूल

बापू कहते देखों भाई,
करते नहीं कभी लड़ाई,
प्रेम-प्यार से ऐसे रहते,
जैसे फूल और शूल।

ऐसी बातें कभी न भूल..... ॥

गीता का संदेश बताता
जैसा करता वैसा भरता,
सत्य-अहिंसा में ही देखो,
छिपा हुआ सब मूल।

ऐसी बातें कभी न भूल..... ॥

कर्म करें जो ईश ध्यानकर,
सच्चाई से प्रीति लगाकर,
ऐसी बातें कभी न भूल ॥
द्वेष घृणा या कपट भाव को
कभी न देना तूल।

प्रेम राज
षष्ठ 'क'

“सफलता का सही उपाय”

सोनपुर में दो मित्र रहते थे। एक का नाम था रोहन तो दूसरे का नाम सोहन था। दोनों पढ़ने में अब्बल थे पर प्रकृति से भिन्न थे। रोहन ईर्ष्यालु था परंतु सोहन दूसरों का भला चाहता था। रोहन हमेशा पढ़ा करता था परंतु सोहन पढ़ने के समय पढ़ता था व खेलने के समय खेलता था। इसीलिए सोहन हर परीक्षा में प्रथम स्थान पाता था। इस बात से रोहन सोहन से ईर्ष्या रखता था। इसी कारण एक बार उसने ऐसा उपाय सोचा जिससे वह खुद प्रथम स्थान पा सके। वह यह सोचता था कि मैं ईमानदारी से प्रथम स्थान नहीं ला सकता पर बेईमानी से ला सकता हूँ। यह सोचकर उसने विद्यालय से घर जाने के रास्ते में गढ़वा खोद दिया। जब वे दोनों घर वापस आ रहे थे तब रास्ते में पड़ा पत्थर सोहन के बजाय रोहन के लग गया और वह गढ़वे में गिर गया। जिससे उसकी पैर की हड्डी टूट गई। सोहन ने किसी तरह उसे घर पहुँचाया। पैर टूट जाने के कारण वह परीक्षा भी नहीं दे सका। सोहन सब कुछ समझा चुका

था। दोस्त होने के नाते से उसने रोहन की बहुत मदद की तथा समझाया कि वह पढ़ने के साथ-साथ थोड़ा खेला भी करे, जिससे उसका मनोरंजन भी होगा तथा वह जो कुछ भी पढ़ेगा जल्दी समझ में आएगा। सोहन की यह सलाह मानकर रोहन वार्षिक परीक्षा की तैयारी में जुट गया तथा वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अब रोहन को लगा कि उसे "सफलता का सही उपाय" मिल गया है।

शिवम त्रिपाठी
अष्टम 'क'

“भिखारी की आत्मकथा”

भिखारी का बेटा पैदा हुआ, समाज उसे भी उसी नजर से देखने लगा, जिस नजर से उसके माता-पिता को देखता है। उसके माता-पिता को भीख माँगने के लिए नया जुमला मिला। अब वे एक हाथ में बेटे को पकड़कर भीख माँगने के लिए दूसरों से कहते, “बच्चे का पेट भरना है वरना यह मर जाएगा।” लोगों को उस बच्चे के सुन्दर मुख तरस आ जाता, कोई फटे-पुराने कपड़े दे देता था तो कोई कुछ पैसे देकर ही टरका देता था।

धीरे-धीरे बच्चा बड़ा हुआ, नाम रखा गया 'भीखू'। माता-पिता को भीख माँगने के लिए पुनः एक नया जुमला मिला, कि “बच्चे को पढ़ाना है वरना हमारा बेटा, भी हमारी तरह भीख ही माँगेगा।” लोगों ने यह सोचकर कि बच्चे का भविष्य अच्छा बन जाएगा, किसी ने पुरानी किताबें तो किसी ने कलम देकर आगे बढ़ने के लिए कह दिया।

भीखू जब दस वर्ष का हुआ तो उसमें समझने की क्षमता आ गई थी। उसे माता-पिता का भीख माँगकर पेट भरना अच्छा नहीं लगता था। वह जहाँ भी जाता लोग उसे 'भीखू के बजाय' 'भिखारी का लड़का' कहकर सम्बोधित करते थे। भीखू को यह बहुत बुरा लगता था। एक दिन उसने अपने ऊपर से भिखारी का बेटा होने की पहचान हटाने की ठान ली।

यह सोचकर उसने विद्यालय जा कर पढ़ने की बात सोची कि तभी उसे याद आया कि उसके माता-पिता के पास इतना धन नहीं है। जो उसे विद्यालय में पढ़ा सकें। इसलिए दिन में जो कुछ विद्यालय में पढ़ाया जाता था उसे खिड़की से झाँक-झाँक कर ध्यान से देखता और सुनता था। शाम को जब सभी बच्चे खेलते थे तब वह एकांत में बैठकर जो कुछ विद्यालय में पढ़ाया जाता था वह भीख में मिली कॉपी पर लिख-लिख कर अभ्यास करता था। रात को सड़कों पर जलने वाले प्रकाश में बैठकर पढ़ता था। एक दिन उसे सड़क पर एक किताब गिरी मिली। भीखू ने उस किताब को रात-दिन जगकर पढ़ डाला। वह किताब विज्ञान की थी।

उसमें दिये प्रयोगों को करते करते भीखू ने उल्टी-सीधी तरह से एक सेल व बल्ब के बीच में तार जोड़ दिए। अचानक उस बल्ब से तीव्र प्रकाश उत्पन्न हुआ। तब से समझ में आया कि उसने एक ऐसी चीज बना डाली है जो अन्धकार में प्रकाश उत्पन्न करती है। उसने इसका नाम 'टार्च' रखा।

उसकी यह खोज पूरे विश्व में जल्दी ही प्रसिद्ध हो गई तथा वह 'भीखू' 'भिखारी का लड़का' कहलाने के बजाय पूरे विश्व में 'प्रो० भीखू' के नाम से जाना जाने लगा।

शिवम त्रिपाठी
अष्टम 'क'

तीन बन्दर सिकन्दर

हनुमान जी के मंदिर के सामने से एक चोर,
एक नेता जी तथा एक हवलदार साहब गुजरे।
सामने बजरंग बली को देखा हाथ जोड़ कर माथा टेका,
और बोले "वह शक्ति हमें दो दया निधे कर्तव्य मार्ग पर डट जाएँ।"
उतः चोर अपना कर्तव्य निभाते हुए स्टेशन पहुँचकर
एक अटैची का कर दिया सफाया हवलदार जी ने
अपना कर्तव्य निभाते हुए अटैची में से एक बटा दो हिस्सा पतलून में सरकाया।
और जब चोर पकड़ा गया हथकड़ियों में जकड़ा गया
तो नेता श्री ने उसको अपना मौसेरा भाई बताया।
इस तरह तीनों समाज सेवी अपने कर्तव्य मार्ग पर डट गए
और एक अटैची का माल तीन बराबर-बराबर हिस्सों में हड़प गए।
वास्तव में तीनों पूर्वजन्म के गाँधी जी के तीन बंदर हैं।
जो इस जन्म में मुकदर के सिकंदर हैं।
चोर बोलता नहीं,
नेता सुनता नहीं तथा
हवलदार देखता नहीं।

आशीष सिंह बुन्देला
नवम 'ख'

एंथोनी के जीवन में 'सात' अंक का प्रभाव

यों तो दुनिया में प्रायः हर व्यक्ति का जीवन संयोगों से भरा है मगर आयरलैण्ड के डब्लिन शहर का निवासी एंथोनी का तो सारा जीवन ही गणित के अंक 7 के अभूतपूर्व संयोगों से भरा हुआ है। इस अद्भुत व्यक्ति एंथोनी का जन्म पिछली शताब्दी के 7 वे वर्ष के 7 वें माह के 7 वें दिन 7 बजकर 7 मिनट पर हुआ था। उसके 7 भाई थे। वह अपने परिवार का 7 वाँ बच्चा था। उसका नाम भी 7 अक्षरों का था। उसने 27 वीं वर्षगांठ पर 7 वीं घुड़ दौड़ में 7 नम्बर के घोड़े पर 7 शिलिंग का दांव लगाया था। संयोग से उस घोड़े का नाम भी '7 वाँ स्वर्ग' अर्थात् 'सेवेन्थ हेवन' था जो बेचारा दौड़ में 7 वे नम्बर पर आया था। एंथोनी के मकान में 7 कमरे थे, उसके 7 बच्चे थे। उसकी मृत्यु भी 7 तारीख को हुई थी और मरते समय वह अपने बैंक में 7 लाख शिलिंग छोड़ गया था।

आशीष सिंह बुन्देला

नवम 'ख'

जीव विज्ञान में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले भारतीय

- | | |
|---------------------------------------|---------------------------------|
| डी०एन०ए०, आर०एन०ए० में संबंध | - डा० हरगोविन्द खुराना |
| पौधों में जीवन | - डा० जे० सी० बोस |
| श्वेत क्रान्ति के जनक | - डा० वी० कुरियन |
| कृपोषण की जानकारी | - डा० बुलीमुरी रामालिंगा स्वामी |
| भ्रूण विज्ञान में अनुसंधान | - डा० पंचानन |
| पक्षी विशेषज्ञ | - डा० सलीम अली |
| कैंसर अनुसंधान | - डा० बसन्तरामजी खानोलकर |
| फोटे केमिकल नाइट्राजन फिक्सेशन | - प्रो० नीलरत्न धर |
| भूगर्भ, वनस्पति पुरातत्व सम्बन्धी खोज | - डा० बीरबल सहानी |
| हरित क्रान्ति के जनक | - डा० एम० एस० स्वामीनाथन। |

रोहित पाण्डेय

नवम 'ख'

भ्रष्टाचार

स्कूटर पर सवार,
कल रात मुझे मिल गया भ्रष्टाचार
मैंने कहा भाई साहब नमस्कार
वह बोला फरमाइए
मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताइए?
मैंने कहा बंधु
इस देश को चालीस साल से चर रहे हो
कानून से बिल्कुल नहीं डर रहे हो
सच बताओ कब प्रस्थान कर रहे हो?
मेरा यह प्रश्न सुनकर
भ्रष्टाचार कुछ सोचने लगा
सोचते-सोचते अपने बालों को नोचने लगा
फिर धीरे से मुँह खोला
और बड़ी करुण भाषा में बोला
भाई साहब यदि हम यहाँ से प्रस्थान कर जाएँगे
आधे से ज्यादा पुलिस वाले भूखे मर जाएँगे
मेरे जाते ही इस देश के इंजीनियर तथा डाक्टर
टी0टी0 और कण्डक्टर
अभावों की नाली में पड़े मिलेंगे
अतः मैं इनकी रोजी रोटी में
टांग नहीं अड़ा सकता
और इस शस्य श्यामला भूमि को छोड़कर,
नहीं जा सकता।
मैंने कहा अबे भ्रष्टाचार, वापस कर मेरा नमस्कार
सोच ले जिस दिन आजाद और सुभाष के देश का
नया खून जागेगा।

उस दिन तू क्या तेरा बाप भी भागेगा
 और यदि किसी दिन, किसी आतंकवादी की
 नजर में आ जाओगे
 भगवान कसम गोली से उड़ा दिए जाओगे
 इतना सुनते ही भ्रष्टाचार भड़क उठा
 बोला भाई जी जबान को ताला लगाइए, बहुत हो चुका
 अब अपनी औकात पर आ जाइए,
 जानते नहीं मैं सर्वव्यापी हूँ
 परमात्मा की कार्बन कॉपी हूँ।
 कुर्सियों की नस-नस में बसा हूँ
 इसलिए यदि आप मुझ पर गोली चलाएँगे
 तो देश के बड़े-बड़े लोग ही मारे जाएँगे
 आप मेरा तो कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे
 क्योंकि जिस देश में आदमी, स्वार्थ की हवा से
 इतना फूल गया हो
 और कायरता का नाम जवानी हो गया हो
 उस देश को भला तुम कैसे जगा सकते हो
 लाख पन्द्रह अगस्त मनाओ, मुझे नहीं भगा सकते हो
 जब उसको भगाने का कोई तरीका काम न आया
 तो हमने लोकतांत्रिक तरीका अपनाया।
 और कहा भ्रष्टाचार जी, जब तक आप
 देश से बाहर नहीं जाते
 हम अपनी जगह से नहीं हिलेंगे
 वह बोले खड़े रहो
 अगले वर्ष फिर मिलेंगे।

मोहित मिश्र
 एकादश 'ख'

ओजोन परत का क्षरण व उसके दुष्परिणाम

ओजोन परत को पृथ्वी का रक्षा कवच या पृथ्वी का छाता कहते हैं। यह गैस सौर्यिक विकिरण की पराबैंगनी किरणों को अवशोषित कर लेती है और उन्हें पृथ्वी तल तक पहुँचने से रोकती है। ओजोन परत के आभाव में सौर्यिक विकिरण की सभी पराबैंगनी किरणें भूतल तक पहुँच जायेंगी, जिससे भूतल का तापमान इतना अधिक होगा कि जैव मण्डल धमन भट्टी में बदल जायेगा तथा समस्त जीव या प्राणी नष्ट हो जायेंगे।

ओजोन वायुमण्डल की हर ऊँचाई पर किसी मात्रा में अवश्य पाई जाती है परन्तु इसका वायुमण्डल में सान्द्रण 10 से 50 किमी० ऊँचाई के बीच पाया जाता है, तथा इस परत में ओजोन का अधिकतम सान्द्रण 12 से 35 किमी० ऊँचाई (सागर तल) के बीच पाया जाता है। इस परत को ओजोन परत ओजोन मण्डल या समतापमण्डलीय ओजोन परत कहते हैं।

हमारी धरती की सतह से दस से पन्द्रह किमी० के बीच में ओजोन गैस की एक परत है। इस परत में आक्सीजन भी है। हमारे वायुमण्डल में ओजोन बहुत कम मात्रा में विद्यमान रहती है। वायु के प्रत्येक एक करोड़ अणुओं में से लगभग 3 अणु ओजोन के होते हैं। इतनी कम मात्रा में होने के परिणाम स्वरूप ओजोन हमारे वायुमण्डल में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वायुमण्डलीय ओजोन अधिकतर अल्ट्रा वायलेट (पराबैंगनी) किरणों को अवशोषित कर अत्यन्त उपयोगी कार्य करती है जिसके कारण पृथ्वी के जीवधारी इन किरणों के घातक असर से बचे रहते हैं।

ओजोन परत के क्षरण में चेतावनी के लिये पहला ठोस प्रयास कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय (संयुक्त राज्य अमेरिका) ने किया। संयुक्त राष्ट्र सभा ने 1995 में अपने प्रस्ताव संख्या 49/114 के माध्यम से प्रतिवर्ष 16 सितम्बर की तिथि की घोषण की थी जिसमें दुनिया भर के लोगों में धरती के पर्यावरण के ऊपर स्थित ओजोन परत के क्षरण होने के संकटों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। धरती में जीवन रक्षक ओजोन परत के क्षरण से उत्पन्न संकटों को ध्यान में रखकर रेडएलर्ट यानी अधिकतम चौकसी रखना आवश्यक हो गया।

वर्ष 1990 के दशक में वैज्ञानिकों ने इस तथ्य के प्रमाण जुटाने शुरू किये कि ओजोन परत का क्षरण कैसे हो रहा है? धरती पर लगाये गये उपकरणों की सहायता से वायुमण्डलीय ओजोन के क्षरण की पुष्टि हुयी। अंटार्कटिक में कुछ इलाकों के ऊपर लगाये या विद्यमान कुल ओजोन में जिसे ओजोन स्तम्भ भी कहा जाता है, 60 प्रतिशत सितम्बर से नवम्बर तक (अंटार्कटिक बसंत) क्षरण होता है। इस प्रक्रिया को अंटार्कटिक ओजोन छिद्र कहा जाता है। अमेरिका अंतरिक्ष एजेंसी नासा (NASA) की हाल की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि अंटार्कटिक का ओजोन छिद्र बड़ा होता जा रहा है। दो वर्ष पूर्व इसकी तुलना में व वर्तमान में इस छिद्र में और अधिक विस्तार हुआ है। इस समय इसका आकार भारत के आकार से नौ सौ गुना ज्यादा है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पिछले दो दशकों में एकत्र किये गये वैज्ञानिक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि मनुष्य द्वारा उत्पादित कुछ रसायन ओजोन परत में छिद्र होने के कारण है। ओजोन को

नष्ट करने वाले यौगिकों में क्लोरीन, फ्लोरीन, ब्रोमीन, कार्बन, हाइड्रोजन आदि तत्वों के रासायनिक संयोग से बने अनेक पदार्थ शामिल हैं जिन्हें हेलोकार्बन कहा जाता है। जिन यौगिकों में केवल क्लोरीन, फ्लोरीन तथा कार्बन विद्यमान रहते हैं, उन्हें क्लोरो, फ्लोरो, कार्बन कहा जाता है, जिन्हें संक्षेप में सी०एफ०सी० के नाम से जाना जाता है। सी०एफ०सी० मानव द्वारा निर्मित ऐसी ओजोन नाशक गैस है जिनका उपयोग कई रेफ्रिजरेशन, एयरकंडीशनिंग, झाग पैदा करने वाले इलेक्ट्रॉनिक्स के समान की सफाई करने आदि के रूप में किया जाता है। मानव निर्मित एक अन्य महत्वपूर्ण हेलोकार्बन समूह हैं हेलोन्स का जिनमें कार्बन, ब्रोमीन और फ्लोरीन पाये जाते हैं और जिनका उपयोग अग्निशमन में किया जाता है। क्लोरीन का एक परमाणु एक लाख ओजोन अणुओं को नष्ट कर सकता है।

जीवन रक्षक ओजोन परत के नष्ट होने से मानव जीवन के लिये कई प्रकार के गम्भीर खतरे पैदा हो सकते हैं। पराबैंगनी किरणों में मामूली सी वृद्धि से ही समुद्र की सतह पर पाये जाने वाले फाइटो प्लैंक्टन नष्ट हो सकते हैं, जिससे सम्पूर्ण खाद्य शृंखला पर प्रभाव पड़ सकता है। अल्ट्रावायलेट विकिरण बढ़ने से फसलों के उत्पादन पर घातक प्रभाव हो सकता है और इस प्रकार अनाज का उत्पादन कम होने से मानव के लिये खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो सकता है।

अतः दुनियाभर के देशों ने ओजोन परत के क्षरण से उत्पन्न खतरे को महसूस किया है, और ओजोन को नुकसान पहुँचाने वाले पदार्थों के उत्पादन और प्रयोग को धीरे-धीरे कम करने के लिए मांट्रियल करार नामक एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। इस करार में इस बात की व्यवस्था की गई है कि समय-समय पर वैज्ञानिक और तकनीकी मूल्यांकन के आधार पर ओजोन-नाशक पदार्थों का उत्पादन और प्रयोग रोकने की समय सारिणी में संशोधन किया जा सके। इस मूल्यांकन के आधार पर 1990 में लंदन में, 1992 में कोपेनहेगन में, 1995 में विपना में, 1997 में मांट्रियल में और 1999 में बीजिंग में करार में संशोधन किये गये ताकि इस कार्य में तेजी लायी जा सके। इस समय मांट्रियल करार के अन्तर्गत ओजोन नष्ट करने वाले 96 पदार्थ आते हैं।

ओजोन परत के दुष्परिणाम निम्न है :-

1. त्वचा कैंसर की अधिकता।
2. आँखों में मोतिया बिन्द की अधिकता।
3. मानव शरीर की रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को नुकसान एवं कमी।
4. फसल उत्पादन में कमी तथा मानव को खाद्य आपूर्ति का खतरा।
5. समुद्र की सतह पर फाइटो प्लैंक्टन को नुकसान से सम्पूर्ण खाद्य शृंखला पर प्रभाव।

“प्रकृति की देन यह ओजोन परत जो धरती के लिये ढाल का काम कर रही है न होती तो शायद धरती पर पेड़-पौधे और प्राणी जीवित न रह पाते। अतः धरती की सुरक्षा के लिये हमें निश्चय ही ऐसे उपाय खोजने होंगे जिससे जीवधारियों की रक्षा हो सके।”

अर्जुन सिंह

नवम 'क'

सूरज की दुकान लगी

हर रस्ते हर गली-गली
सूरज की दूकान लगी।
उड़ती मिट्टी लू के चाँटे
जैसे फंसे गले में कांटे
हमें सुराही के ओठों की
बस!सच्ची मुस्कान लगी।
सूरज की दुकान लगी।।

सन्नाटे खोले दुपहर ने,
दरवाजे मारे हर घर ने।
धूप द्रौपदी की साड़ी सी
उस कपड़े की थान लगी।
सूरज की दूकान लगी।।

हवादार पेड़ों के साए
जैसे माँ इक लोरी गाए
गरमी बिना बुलाए कोई
अनचाहा मेहमान लगी।
हर रस्ते हर गली-गली
सूरज की दूकान लगी।।

अविनाश कुमार
नवम 'ग'

जाड़ों के दिन

बंद-बंद खिड़कियों, किवाड़ों के दिन।

लो फिर आ गए

जाड़ों के दिन!

बर्फ का बदन,

चेहरा धूप का,

वाह-वाह, जवाब नहीं

रूप का,

कंबलों, रजाई

की आड़ों के दिन।

लो फिर आ गए

जाड़ों के दिन!

सूरजमुखियों जैसे फूल लगे

कमरों के बाहर स्कूल लगे

धूप सेंकते, ठिठुरे ताड़ों के दिन!

लो फिर आ गए, जाड़ों के दिन।

बदल गया कुहरे का जायका

क्या कहिए, मजा गर्म चाय का

गर्म कोट, ऊन के पहाड़ों के दिन।

लो फिर आ गए जाड़ों के दिन।

अविनाश कुमार
(नवम 'ग')

“आने वाली पीढ़ी में”

सब कुछ डावाँ डोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी में,
ढोल के भीतर पोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी में,
दाने गिनकर दाल मिलेगी,
गेहूँ की बस छाल मिलेगी,
पानी के इन्जेक्शन होंगे,
घोषित राज्य इलेक्शन होंगे,
हलवाई हैरान मिलेंगे,
बिन चीनी मिष्ठान मिलेंगे,
जलने वाला खेल मिलेगा,
बस मिट्टी का तेल मिलेगा।

शीशी में पेट्रोल मिलेगा,
ढोल के भीतर पोल मिलेगा,
रोते हुए बाजार मिलेंगे,
धन्धे केवल काले होंगे,
ऊसर होंगे, बंजर होंगे,
सूखे हुए समन्दर होंगे,
पेड़ न होगा, हवा न होगी।
अस्पताल में दवा न होगी।

कटा-फटा भूगोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी में।
ढोल के भीतर पोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी में।

भारी-भारी बस्ते होंगे,
आँसू सबसे सस्ते होंगे।
बच्चे बौने हो जायेंगे,
स्वयं खिलौने हो जायेंगे।
मारकाट का बोल मिलेगा।

राम नाम का जाप न होगा, आने वाली पीढ़ी में।
ढोल के भीतर पोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी में।।

कृष्ण राज रंजन

नवम 'ग'

बेटी की व्यथा

जिन्दा जली दहेज में बाबुल तेरी निशानी
मैय्यत सुना रही है बेमौत की कहानी।
गैरों को अपना कहकर जब उनके घर चली मैं
कहने लगी तभी से क्या लेके तू चली है।
रुन-सुन के उनके ताने, हो जाती पानी-पानी।
जिन्दा जली दहेज में बाबुल तेरी निशानी
मैय्यत सुना रही है बेमौत की कहानी।
मैं चीख-चीख कर रोई और याद आये भाई
गलियों से तेरी गुजरी और लौट भी न पाई।
अपना करम कहूँ या कहूँ उनकी मेहरबानी
जिन्दा जली दहेज में बाबुल तेरी निशानी
मैय्यत सुना रही है बेमौत की कहानी।
माँ-बाप तड़फड़ाये कहने लगे - ये क्या है?
आँखों में आँसू आये, देने लगे दुहाई
जिसने गोद में खिलाया उसी की जानी
जिन्दा जली दहेज में बाबुल तेरी निशानी
मैय्यत सुना रही है बेमौत की कहानी।

रोहित सिंह

नवम 'ग'

गणतन्त्र दिवस

उस दिन गणतन्त्र दिवस था मैं बाजार जा रहा था,
दिमाग में बार-बार देश की हालत का विचार आ रहा था।
जातिवाद, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद,
और विलुप्त होता राष्ट्रवाद।
क्या सोचते अगर होते आज,
गाँधी, सुभाष, भगत सिंह या आजाद।
भुखमरी से हारकर आत्महत्या करता किसान,
साहित्य और संस्कृति का पतन,
सिद्धान्तों का मिट गया नामोनिशान।
एक ओर लूट और बेईमानी, भ्रष्टाचार, व्यभिचार,
दूसरी ओर निरीह मानवता कर रही चीत्कार।
रोज हो रहे घोटालें, बँठ जाती जाँच,
पर मजाल जो आ जाए आरोपियों पर आँच।
राज और नीति में हो गया अलगाव,
भद्दा सा मजाक बन गया चुनाव।
नेता और अपराधी का अटूट गठबन्धन,
लाचार जनता कर रही करुण क्रन्दन।

सुभाष यादव

नवम 'ग'

जीवन का लक्ष्य

हर मनुष्य इस धरती पर आता है तभी उसके वापस जाने की तिथि भी तय हो जाती है। ईश्वर ने आखिर क्या सोच कर हम सबको बनाया, यह कोई नहीं समझ पाता। ईश्वर ने हमें इतना ज्ञान दिया है कि उसकी तुलना हो ही नहीं सकती। पर, कुछ ही मनुष्य इस ज्ञान का सदुपयोग करते हैं और बाकी व्यर्थ की बात सोचने में अपनी पूरी जिन्दगी व्यतीत कर देते हैं। हर मनुष्य की ज्ञानेन्द्रियाँ उसे संकेत भेजती हैं कि क्या सही है और क्या गलत जो मनुष्य इस संकेत को समझ लेता है वह अपनी जिन्दगी के असली लक्ष्य को प्राप्त करता है और जो नहीं समझ पाता है, जो बुरे रास्तों पर चलता है और किसी की नहीं सुनता पर अन्त में उसे अपने कर्मों की सजा भुगतनी ही पड़ती है। जो मनुष्य जैसे कर्म करता है। उसे वैसा ही फल मिलता है। कहते हैं, गंगा में स्नान करने से आदमी स्वच्छ हो जाता है। आदमी स्वच्छ तो हो जाता है, पर उसका मन नहीं स्वच्छ होता, उसके द्वारा किए गए बुरे कर्म नहीं धुलते उसे अपने कर्मों का फल जरूर मिलता है। कोई भी मनुष्य दण्ड से नहीं बच पाता है अगर उसने बुरा काम किया है तो उसे दण्ड जरूर मिलता है चाहे देर से ही सही, पर मिलता जरूर है।

हम अपनी पूरी जिन्दगी व्यर्थ की बातें सोचने में व्यतीत कर देते हैं, पर क्या कभी किसी ने सोचा है कि ईश्वर ने हमें किस मकसद से यहाँ भेजा है? कुछ ज्ञानी लोग इस मकसद को समझ लेते हैं और दूसरों को भी अपने आप को समझने की प्रेरणा देते हैं।

गुरु नानक देव :- गुरु नानक देव जी के विषय में कहा जाता है कि वह एक इन्सान के रूप में स्वयं भगवान थे। वह जानते थे कि किस मकसद से यहाँ आए हैं। उनका सिर्फ एक ही लक्ष्य था शान्ति और प्रेम बाँटना।

ईसा मसीह :- ईसा मसीह भी एक साधारण व्यक्ति थे मगर वह प्रभु यीशु कहे जाने लगे। यह सब कोई चमत्कार नहीं था, यह तो प्रभु ईशु के कर्म थे जिसने उन्हें कई सदियों के लिए अमर बना दिया।

गौतम बुद्ध :- गौतम बुद्ध ने हमें कुछ त्याग कर बहुत कुछ पाना सिखाया है। गौतम जी ने अपने राजकीय जीवन का त्याग कर मोक्ष प्राप्त किया था। उन्होंने हमें शांति का पाठ पढ़ाया। जाने कितने ऐसे बुद्धिवीर होंगे जो अपनी विद्या का प्रयोग करके लोगों को पढ़ा तो सकते ही हैं। हम सब अच्छे और बड़े विद्यालयों में पढ़ते हैं, पर जो बच्चे गरीब हैं और जो कुछ पढ़ना चाहते हैं, उन्हें हम पढ़ा सकते हैं। हम सब पुरानी किताबों को 5-6 रूपयों के लिए कबाड़ में बेच देते हैं, पर अगर हम वही किताबें गरीब बच्चों को पढ़ने के लिए दें तो हम छोटे होते हुए भी समाज की कुछ तो भलाई करेंगे।

“वह विद्या किस काम की जिसे बाँटा ही न जाए, विद्या बाँटने से बढ़ती है न कि कम होती है।” मरने के बाद इन्सान की विद्या उसके साथ नहीं जाती। इससे अच्छा है कि मरने से पहले हमने जो अच्छी बातें इस समाज से पायी है वह सब हम दूसरों में बाँट दें।

पीयूष दीक्षित

नवम 'ग'

मूरख हृदय न चेत

किसी वन में एक शमी का वृक्ष था। उसकी लम्बी शाखाओं में चटक नामक चिड़िया ने अपना घोंसला बना रखा था। हेमन्त ऋतु में वहाँ वर्षा शुरू हुई। ठंडी हवा के झोंकों से सर्दी बढ़ गई। तभी ठंड से काँपता हुआ एक बन्दर शमी वृक्ष की छाया में आकर बैठ गया।

चटक चिड़िया ने उससे कहा – ‘अरे भाई, तुम्हारी आकृति तो पुरुष के समान है। पुरुषों की तरह तुम्हारे हाथ-पैर भी हैं, फिर ठंड से क्यों काँप रहे हो? अपने रहने के लिए घर क्यों नहीं बना लेते?’

यह सुनकर बंदर को क्रोध आ गया और बोला – ‘अरी ओ चूँ-चूँ की बच्ची तू खामोश क्यों नहीं रहती? मजाक उड़ाती है मेरा, चुपचाप पड़ी रह।

जब चटक चिड़िया फिर भी नहीं मानी और अपनी बात दोहरायी, तो बंदर ने चिढ़कर शमी वृक्ष पर बने घोंसले को नष्ट कर दिया।

कहानी की मुख्य प्रेरणादायक बात यह है कि – ‘मूर्खों को उपदेश देने से कोई लाभ नहीं।’ दुष्ट व्यक्ति दूसरों के सुखों को देखकर बहुत कष्ट से युक्त हो जाता है। यह मूर्खों का स्वाभाविक गुण है।

शुभम गुप्त

नवम 'क'

बढ़े गरीबी सुरसा की काया जैसी,
भ्रष्टाचार जलधि का शोषण बाकी है।
हुआ न लंका दहन न रावण मरा अभी,
अभी सिया का प्रत्यावर्तन बाकी है।
किसके-किसके आँसू पोंछे राम यहाँ
गली-गली घूमती शबरियाँ भिखमंगी
गौतम से अभिशप्त सुरों से छली गयी
कोठों पर हो रही अहिल्याएँ नंगी।

आप कौन सी पुतली के साथी हैं?

राजा भोज की सभा में एक कारीगर सोने की तीन पुतलियाँ बनाकर लाया। राजा के सामने रखते हुए बोला - "राजन मेरे विचार से इन तीनों के मूल्य में अन्तर है। मैं चाहता हूँ कि इनका सही मूल्यांकन यहाँ पर हो जाए।" सभी ने उन्हें तोला परखा पर किसी की समझ में अन्तर नहीं आया। अन्त में राजा ने कालिदास से मूल्यांकन करने को कहा। कालिदास ने तीनों पुतलियों को ध्यान पूर्वक देखा, और एक सलाई मँगाकर उन तीनों के कान में अलग-अलग डाली। एक सलाई पुतली के एक कान से दूसरे कान में निकल गयी। दूसरी पुतली के कान में सलाई डालने से वह मुँह से बाहर निकल गयी। तीसरी पुतली के कान में डालने पर सलाई पेट में चली गयी। कालिदास ने कहा - यह पुतलियाँ हमें संकेत देती हैं - कुछ श्रोता प्रथम पुतली के समान होते हैं, जो एक कान से सुनते हैं और दूसरे कान से निकाल देते हैं। उसकी कीमत सवा कौड़ी है। कुछ व्यक्ति बात सुनकर मुँह से निकाल देते हैं। अपना तो भला नहीं कर सकते पर वक्ता की प्रशंसा कर देते हैं। उनकी कीमत सवा रूपये की है। कुछ व्यक्ति कानों से सुनकर अपने मन में बसा लेते हैं और उसी पर चलते हैं अतः उसकी कीमत सवा लाख रूपये की है।

राजा और सभासद इस निर्णय से प्रसन्न हुए और कारीगर को भी उसकी पुतलियों का उचित मूल्य मिल गया।

अनिरुद्ध कुमार

नवम 'ग'

जमाना हँस पड़े जिस दम कलम हँसने पै आती है।
ये दुनिया रो उठे जिस दम कलम आँसू बहाती है।।
उनींदी जब हुई कलम जमाना सो गया गाफिल।
कलम जब भैरवी गाती तो दुनियाँ जाग जाती है।।

विचित्र संसार

दूध देने वाला वृक्ष—दक्षिणी अमेरिका के घने जंगलों में उगने वाले काऊ ट्री के तनों में छेद करने से दूध के समान सफेद पदार्थ निकलता है जो गाय के दूध के स्थान पर प्रयुक्त होता है। इसे नायलैस मिल्क कहते हैं। यह दूध बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है।

अग्नि उगलने वाला वृक्ष — जापान के घने जंगलों में पाया जाने वाला वृक्ष फायर बर्सटिंग ट्री के नाम से पुकारा जाता है। सूर्यास्त के समय यह अपनी चोटी से एक विचित्र प्रकार का जहरीला व प्रदूषित धुँआ छोड़ता है जिसके फलस्वरूप उसके चारों ओर आग जैसी दिखाई देती है।

जलवर्षक वृक्ष — यह वृक्ष इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में पाया जाता है। यह दिन में अपनी कलियों में जल एकत्रित कर लेता है और शाम को घनी वर्षा के रूप में उसे छोड़ देता है।

हँसने वाला वृक्ष — यह अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता है, यदि इसके फलों पर आटा डाला जाये तो इससे हँसने की आवाज उत्पन्न होती है। दक्षिणी अमेरिका में भी ऐसा ही वृक्ष पाया जाता है जिसे हिलाने पर उससे हँसने की आवाज उत्पन्न होती है।

दाढ़ी बनाने में सहायक वृक्ष — सोप वाइन नामक बेल की सतहें ब्लेड की धार की तरह पैनी होती है। इसकी पत्तियाँ साबुन जैसा झाग उत्पन्न करती हैं, वही ब्लेड का कार्य भी करती है।

शशांक कुमार

नवम 'ग'

कलम दे कीर्ति का आगार शिष्टाचार देती है।
कलम दे शौर्य भी ऐश्वर्य भी शृंगार देती है।।
मगर होता वतन की शान पर जब आँच का खटका
करे शृंगार वर्जन कलम अंगार देती है।।

विज्ञान की शाखाएँ

विज्ञान में विभिन्न विषयों के अध्ययन की भिन्न-भिन्न शाखाएँ हैं, मगर सबसे रोचक बात यह है कि सभी के अंत में 'ओलॉजी' शब्द जुड़ा होता है। यहाँ विज्ञान से संबंधित विभिन्न शाखाओं के विषय दिए गए हैं -

1. ऐल्गोलॉजी	समुद्री खरपतवार
2. स्पर्मलॉजी	बीज विज्ञान
3. नेफ्रोलॉजी	गुर्दा विज्ञान
4. पेडोलॉजी	मृदा विज्ञान
5. पोमोलॉजी	फल विज्ञान
6. टेरीडोलॉजी	फर्न्स (घास) विज्ञान
7. टोकोलॉजी	प्रसूति विज्ञान
8. इकोलॉजी	परिस्थिति विज्ञान
9. सीस्मोलॉजी	भूकंप विज्ञान
10. जियोलॉजी	भूगर्भ विज्ञान
11. एम्ब्रियोलॉजी	भ्रूण विज्ञान
12. एथनोलॉजी	मानव वंश विज्ञान
13. मीट्रियोलॉजी	मौसम विज्ञान
14. एन्टोमोलॉजी	कीट विज्ञान
15. ऑरिनिथोलॉजी	पक्षी विज्ञान
16. ऑस्टियोलॉजी	हड्डी विज्ञान
17. पैलियोन्टोलॉजी	फॉसिल्स विज्ञान
18. हिस्टोलॉजी	ऊतक विज्ञान
19. मारफोलॉजी	आकृति विज्ञान
20. माइकोलॉजी	पेशी विज्ञान
21. गाइनेकोलॉजी	रोग विज्ञान
22. फिजियोलॉजी	शरीर विज्ञान
23. साइटोलॉजी	कोशिका विज्ञान
24. वायरोलॉजी	विषाणु विज्ञान
25. बैक्टीरियोलॉजी	बैक्टीरिया विज्ञान
26. डेन्ड्रोलॉजी	वृक्ष विज्ञान
27. टोक्सिकोलॉजी	विष विज्ञान
28. ऑबोन्टोलॉजी	दन्त विज्ञान
29. जूलॉजी	प्राणि विज्ञान

गणेश जी ओमर
नवम 'क'

कम्प्यूटर - महिमा

कंप्यूटर जी, कंप्यूटर जी,
ज्ञानी कौन आपसे बढ़कर?

बिना आपके क्या कर सकता
है कोई कितना भी पढ़कर?

आप डाकिया बन जाते हैं
दुनिया का कोई कोना हो,
और रूबरू बातें करता
करते ज्यों जादू-टोना हो।

जाना है जो कहीं घूमने
पता होटलों का दे दे,
कैसे जाना होगा, इसका
नक्शा आप बात ही देंगे।

और किसी को कुछ भी पढ़ना
तो आपसे पढ़ ले आकर,
थक जाएगा पढ़ता-पढ़ता
आप थकेंगे नहीं पढ़ाकर।

अब तो दुनिया आप चलाते,
आप अखिल ज्ञान की खान,
अब तो निर्भर हुए आप पर,
लगता है सारे इनसान।

आप सभी तालों को चाबी,
यही सोंच मैं खाता चक्कर,
कम्प्यूटर जी, कम्प्यूटर जी,
ज्ञानी कौन आपसे बढ़कर?

संजय सिंह राठौर
सप्तम 'ख'

‘क्रिकेट का जुनून’

चूहे राजा क्रिकेट टीम के चुने गए कप्तान,
अपनी बल्लेबाजी का था उनको बड़ा गुमान।

पैड बाँध, दस्ताने पहने, हेलमेट एक लगाए,
टॉस जीतकर खुद ही, पहले बैटिंग करने आए।

उधर दूसरी क्रिकेट टीम का बन्दर था कप्तान,
उसे क्रिकेट के दाव पेंच की थी पूरी पहचार।

पहला ही ओवर उसने बिल्ली से फिंकवाया,
उसको आउट करने का एक नया ढंग अपनाया।

चली गेंद लेकर जब बिल्ली काँपे डर के मारे,
क्रीज छोड़कर पीछे हट गए धीरे से बेचारे।

लगी गेंद स्टंप उड़ गया मचा जोर से हल्ला,
आउट होकर चूहे राजा भागे लेकर बल्ला।

पवन सिंह राठौर

सप्तम ‘क’

‘आने वाले दिन बदलेंगे’

नया सवेरा नए साल का भूलें बात पुरानी,
नए सिरे से आओ बाँचे खुशियों भरी कहानी।
ना रखेंगे भेदभाव हम नहीं दिलों में दूरी,
सदा चलेंगे सच्चे पथ पर कुछ भी हो मजबूरी।
नई प्रगति के नए सुरों को ले जायेंगे गांवों में,
सहलाएंगे उनके मस्तक छाले जिनके पाँवों में।
आने वाले दिन बदलेंगे, बदलेगी संपूर्ण धरा,
कोई बड़ा न छोटा होगा, जीवन होगा सम्मान भरा।

अनुज सिंह राठौर

अष्टम ‘क’

दो और दो पाँच

इंस्पेक्टर स्कूल में करने आये जाँच ।
दो और दो कितने हुए, लड़का बोला पाँच ।
लड़का बोला पाँच, मास्टर आगे आये ।
पीठ थपथपाकर, विद्यार्थी को बैठाये ।।
इंस्पेक्टर ने कहा, अरे हे सत्यानाशी ।
गलत गणित, पर बच्चे को देता शाबासी ।
मास्टर बतलाने लगे, क्यों होते नाराज ।
बतलाता हूँ आपको, इस लड़के का राज ।।
इस लड़के का राज, कल आप नहीं आये थे ।
तब इस छात्र ने दो और दो छः बतलाये थे ।
आज बतलाया पाँच प्रगति करता जायेगा ।
कल हुजूर स्वतः चार पर आ जायेगा ।

आकाश सचान

नवम 'ग'

पर्यावरण

बच्चों देखो पेड़ लगाना,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाना ।
पर्यावरण हो हरा भरा,
बहती पावन जरा-जरा ।
हों वृक्ष हमारे चारों ओर,
रह न पाए कोई भी छोर ।
कोई न वृक्ष को काटने पाये ।
जो काटेगा व दुख पायेगा ।
प्रकृति ने जो दिया अमूल्य वरदान,
नष्ट न कर इसको इनसान ।
प्रकृति रूठ गई जो तुमसे,
जीवन धन पायेगा किससे ।
पर्यावरण है जन-जन का रक्षक,
मानव मत बन तू इसका भक्षक ।
पर्यावरण का अमूल्य उपहार,
सुखी करे सारा संसार ।

देखो हँस न जाना

पिताजी	— (अविनाश से) तुम्हारे स्कूल से शिकायत आयी है।
अविनाश	— पिताजी कैसी शिकायत? मैं तो पन्द्रह दिन से विद्यालय नहीं गया।
लड़का	— (दोस्त से) भाई ट्रक से बचने के बाद क्यों कांप रहे हो।
दोस्त	— पीछे लिखा था फिर मिलेंगे।
शिक्षक	— चोर किसे कहते हैं?
छात्र	— जिसकी दाढ़ी में तिनका हो।
न्यायाधीश	— (चोर से) तुम्हें बार-बार यहाँ आकर शर्म नहीं आती।
चोर	— आती है, लेकिन बार-बार यहाँ आपको देखकर।
अध्यापक	— राजन, बताओं, स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?
राजन	— सर स्वर मुँह से बाहर निकाला जाता है जबकि व्यंजन मुँह के अन्दर डाला जाता है।

आकाश सचान

नवम 'ग'

अचरज

1. विश्व की सबसे छोटी चिड़िया कौन सी है? कहाँ पाई जाती है?
विश्व की सबसे छोटी चिड़िया हर्मिंग है, यह क्यूबा में पायी जाती है।
2. विश्व की सबसे लम्बी बस कहाँ है?
अमेरिका में 76 फुट लम्बी, 11 टन भारी, 121 यात्री बैठ सकते हैं।
3. विश्व की कौन सी पहाड़ी है जो प्रतिदिन अपना रंग बदला करती है।
दक्षिणी आस्ट्रेलिया में आर्यस राक।
4. विश्व में कौन सा पौधा है जिसकी शक्ल आदमी से मिलती जुलती है। और उसे उखाड़ने पर उसमें से बच्चे के रोने की आवाज आती है वह पौधा कहाँ पाया जाता है।
पैङ्गक (अफ्रीका)
5. विश्व की कौन सी मछली है जो बच्चों को जन्म देती है तथा दूध पिलाती है।
शील व्हेल मछली
6. विश्व की सबसे बड़ी घड़ी?
बिगवेल (लन्दन)

7. विश्व की सबसे बड़ी लाइब्रेरी?
लेनिन लाइब्रेरी (रूस)
8. सबसे बड़ा संग्रहालय?
एलबर्ट संग्रहालय (लन्दन)
9. सबसे ऊँची इमारत ?
सिल्वर टावर (अमेरिका)
10. विश्व का सबसे तेज चलने वाली ट्रेन का नाम और रफ्तार क्या है?
जापान की बुलेट ट्रेन 480 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्तार से चलती है।
11. विश्व में सबसे बड़ा प्लेटफार्म
स्टोर विकर (स्वीडन) 2470 फीट।
12. एक मच्छर के मुँह में कितने दाँत है
22 दाँत
13. मकड़ी बिना खाये पिये कितने दिन जिन्दा रह सकती है?
10 वर्ष
14. सबसे बड़ा बन्दर कहाँ पाया जाता है और उसका क्या नाम है।
मैड्रिल (पश्चिमी अफ्रीका के भू-मध्य रेखीय क्षेत्र में)
15. वह कौन सा कीट है जो विश्व में सर्वाधिक तेज गति से उड़ता है, उसकी गति क्या है?
डिपर फलाई नामक कीट, 800 मील प्रतिघण्टा।
16. 750 ग्राम का बन्दर कहाँ पाया जाता है।
विमी गर्मी सेट का बन्दर अमेजन नदी के तट पर
17. वह कौन-सी मछली है जो पानी में तैरती है, जमीन पर चलती है और हवा में उड़ती है?
गरनाई मछली
18. खट्टा शहद कहाँ मिलता है?
ब्राजील के जंगलों में
19. ऐसा कौन सा जानवर है जो दुःख में आदमियों की भाँति रोता है।
भोला
20. विश्व की सबसे लम्बी औरत कौन रही है?
चीनी महिला सान सांन चुगलिंग जिसका कद 8 फुट 1 इंच है।
21. संसार में एक ऐसा व्यक्ति है जो सांप का ही भोजन करता है क्या आप उसका नाम जानते हैं?
योगेन अली (आस्ट्रेलिया)

गोविन्द कुमार सिंह
षष्ठ 'ख'

वृक्ष के उद्गार

मैं पेड़ हूँ, मुझे मत काटो।
मेरी तरह जग में खुशियाँ बाँटो।।
मेरी पत्ती-डाली, मेरे फल फूल।
काम ही आयेंगे, आज नहीं तो कल।।
परहित ही होता है जग में जीवन मेरा।
मेरे ही फलों से शोभित उपवन तेरा।
मैं निस्वार्थ जगत को देता रहता जीवन।
मेरा ही कृतज्ञ धरती का कण-कण।।
देता हूँ मानव को सुख शांति की छाया।
सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हमारी ही माया।।
पर्यावरण प्रदूषण से आज सब परेशान।
खतरे में है दुनिया, खतरे में सबकी जान।।

रवि कुमार कुँवर
षष्ठ 'क'

काश! हवा में हम भी उड़ते

पंख पसारे नील गगन में,
सपनों का आकाश नयन में।
जाकर चाँद सितारे छूते,
काश! हवा में हम भी उड़ते।
आँधी तूफानों से लड़ते
विध्वनों की घातों को सहते
यश के शिखर सभी हम छूते
काश हवा में हम भी उड़ते।।

देवव्रत सिंह
षष्ठ 'क'

जनता नेता की गुलाम

सच्चाई पर चलने वाला,

बेबस है, लाचार है।

आज देश की न्याय-व्यवस्था,

फँसी हुई मँझधार है।

अंधकार से लड़ने वाली,

जनता नेता की गुलाम है।

कर्मनिष्ठ सब हुए उपेक्षित,

चमचों का ही बड़ा नाम है।।

जाने क्या है हुआ देश को,

हर ओर अँधेरा छाया है।

थके हुए हैं राम और

छायी रावण की माया है।।

द्वारपर, त्रेता गुजर गए,

कलियुग का प्रादुर्भाव हुआ।

इसीलिये हर मन में देखो

छल-छन्दों का भाव हुआ।

अमित कुमार

षष्ठ 'क'

मेरी लेखनी

तलवारों की तेजधार,

करुणा की तीखी पुकार,

गीता का अमरत्व ज्ञान

दानवता हित पंचास्य नाद

बन जाए लेखनी मेरी!

दुष्ट हेतु बन जाए पाश,

अज्ञान अंधकार का करे नाश,

शोणित की लाली करे वास,

नवविहान का पहला प्रकाश!

गंगा का जैसा हो प्रवाह,

सोने की जैसी चमक रहे,

पुष्पों का सौरभ वास करे,

संघर्ष हेतु युद्ध नाद,

बन जाए लेखनी मेरी।

शूरवीर सिंह

नवम 'क'

“कुछ जानवरों की आँखें रात में क्यों चमकती हैं?”

जिन जानवरों की आँखें रात में चमकती हैं, उनकी आँखों में एक विशेष प्रकार की मणिभीय पदार्थ की पतली सी परत होती है जो आँख से प्रकाश को परावर्तित करके एक चमक उत्पन्न करती है। यह परावर्तित प्रकाश ही चमक का कारण होता है। रात्रि का कम से कम प्रकाश भी जब इन मणिभीय परत पर पड़ता है तो वह भी परावर्तित हो जाता है। इस कारण हमें रात के समय उन जानवरों की आँखें चमकती दिखाई पड़ती हैं, यह उसी प्रकार है जिस प्रकार एक दर्पण पर प्रकाश पड़ने के बाद वह चमकता है। बिल्ली की आँखों पर किए गए अध्ययन तथा प्रयोगों से यह ज्ञात हुआ है कि उसकी आँख की रेटिना के पीछे एक चमकदार पदार्थ की परत होती है जिसे ‘ल्यूमिनियस टेपेटम’ कहते हैं। यह पदार्थ प्रकाश को परावर्तित कर देता है। इस परत के कारण ही बिल्लियों को कम प्रकाश में भी दिखाई देता है।

ऐसा भी देखा गया है कि जिन जानवरों की आँखें चमकती हैं उन सब की चमक का रंग एक जैसा नहीं होता है। इसका प्रमुख कारण उनकी आँखों में पायी जाने वाली रक्त नलिकाएँ हैं।

“आलोक कुमार कुशवाहा”

नवम ‘ग’

हिन्दी-महिमा

दर्पण ही नहीं देश की तस्वीर है हिन्दी।

हर भारती के ख्वाब की ताबीर है हिन्दी।।

खुसरो, कबीर, तुलसी पीकर अमर हुए,

साहित्य को नवशक्ति दे वो क्षीर है हिन्दी।।

हिन्दू या मुसलमां में ये फर्क न जाने,

रसखान, नूर की लिखी तहरीर है हिन्दी।।

पराजित हुए अंग्रेज विचारों के युद्ध में,

आजादी के उस जंग की शमशीर है हिन्दी।।

छन्द, गीत या अगीत की नई था।

बहती हुई मन्दाकिनी का नीर है हिन्दी।।

तेलगू, तमिल का साथ जो बहनों को बाँधती,

वह सकता और प्यार की जंजीर है हिन्दी।।

हम योग्य वंशजों की तरह इसको बढ़ायें,

पुरखों की बसाई हुई जागीर है हिन्दी।।

आओ कलम उठाकर इसको हम सँवारे,

मेरे वतन की तकदीर है हिन्दी।।

मोहित मिश्र

एकादश, ‘ख’

‘रात के अंधेरे में कैसे उड़ते हैं पक्षी’?

यह सच है कि अधिकतर पक्षी शाम होते ही अपने-अपने घोंसलों में चले जाते हैं, मगर कुछ ऐसे पक्षी भी हैं, जो रात के अंधेरे में भी आसानी से उड़ते रहते हैं। ऐसे पक्षी कुछ अलग तरह की तकनीक अपनाते हैं। अब उल्लू की ही बात करें, तो इनकी आँखों में एक्स्ट्रा लार्ज रेटिना मौजूद होता है। बड़ा रेटिना होने के कारण अधिक प्रकाश को आँखों के अंदर समाया जा सकता है। यही वजह है कि उल्लू को बहुत कम रोशनी में भी दिखाई देता रहता है एक दूसरा तरीका भी है, जिसमें प्रकाश पर निर्भरता नहीं है। वास्तव में, ऐसे पक्षियों के आन्तरिक कान में ऐसी व्यवस्था होती है, जिसे ये न केवल आगे बढ़ने में, बल्कि संतुलन बनाए रखने में भी इस्तेमाल में लाते हैं। ऐसे पक्षी ध्वनि-प्रतिध्वनि का सहारा लेकर रात को आसानी से उड़ते हैं, ऐसा ही एक पक्षी चमगादड़ है जो कीटों की ध्वनि-प्रतिध्वनि से उड़ता है। पृथ्वी में एक ऐसा पक्षी भी है, जो सोते हुए भी उड़ता है। उस पक्षी का नाम है — ‘लेसैन अल्बेट्रास’ जन्म लेने के बाद से अल्बेट्रास सागर में ही अपना जीवन गुजारता है। इसी कारण इसका नाम लेसैन अल्बेट्रास रखा गया है। कभी-कभी इन्हें पानी पर भी सोते हुए देखा जा सकता है। हालांकि कहीं क्ले इनका शिकार न कर ले, इसलिए इस डर से ये अधिकतर आसमान में उड़ते हुए ही सोते रहते हैं।

अविनाश कुमार

नवम ‘ग’

यमराज से मुलाकात

एक दिन हम रास्ते से जा रहे थे

एक गीत भी गुनगुना रहे थे,

गीत के बोल ऐसे थे कि —

“राह में उनसे मुलाकात हो गई,

जिससे डरते थे वही बात हो गई।

यह गीत उस समय हकीकत बनकर सामने आया,

जब मैंने अपने सामने यमराज को खड़ा पाया,

मैंने आइडिया लगाया

कही ऊपर से अपना संदेश तो नहीं आया,

तभी यमराज ने फरमाया

और अपना भयानक चेहरा मेरे सामने लाया,

यमराज बोले —

तुम्हें मेरे साथ चलना है,

मैंने भी सोंचा कि इन्हें सावित्री की तरह छलना है,

मैंने कहा —

यमराज जी मैं आप के साथ चलता हूँ

पर क्या एक बात बतलायेंगे,
जिन्दगी और मौत क्या है? यह मुझे समझायेंगे।

यमराज बोले -

बस इतनी सी बात है, मैं तुझे बतलाता हूँ,
एक निश्चित आयु तक हर इन्सान जीता है,
फिर मर जाता है और मेरे पास आ जाता है,

मैं बोला -

महाराज यह तो अन्याय है,
भला आप मेरे प्राण क्यों हरने आये हैं,
मैं तो वैसे ही आ जाता
जिन्दगी और मौत की हकीकत आपको समझा जाता,

यमराज बोले -

नादान क्या बकते हो,
मेरे जैसे मृत्यु के देवता से भी मजाक करते हो,
क्या तुम्हें मृत्यु का डर नहीं लगता है,
पृथ्वी का तो हर प्राणी मृत्यु से डरता है,

मैंने कहा -

क्षमा करो महाराज, मैं मृत्यु से नहीं डरता,
क्योंकि मृत्यु तो एक संसार का नियम है
जिन्दगी क्षणिक है जिसमें बेवफाई है,
फिर मैंने तो बस जिन्दगी में नफरत ही पाई है,
वैसे भी मुझे जिन्दगी से नहीं लगाव है
क्योंकि हर रिश्ता हर नाते में छलाव है,
जिन्दगी तो मौत से भी बड़ी सजा है,
फिर मौत का तो अपना ही अलग मजा है,
चलिए मैं आपके साथ चलता हूँ,
मैं मृत्यु से नहीं डरता हूँ,
मेरी बातों को सुनकर, यमराज जी भी घबराये,
और इनकी आँखों में आँसू भर आये,

वे बोले-

तुम जिन्दगी और मौत के रहस्य को जानते हो,
तुम जिन्दगी की हर हकीकत को जानते हो,
तुम मुझे ऐसे ही ऊपर भी समझाओगे
फिर कहीं न कहीं जरूर फँसाओगे,
इसीलिए अभी मैं चलता हूँ,
अब लम्बे समय बाद ही तुमसे मिलता हूँ।

शिवम अग्रवाल

एकादश 'ख'

“मैं स्वाति बूँद हूँ।”

स्वाति बूँद की तरह
मैं हर स्थिति में ढलूँ
कभी मोती, कभी कपूर,
जरूरत पड़ने पर विष भी बनूँ।
चातक पक्षी की तरह
मेरा कोई शुभचिंतक हो।
कहने पर जिसके मैं कभी,
बंजर को उपजाऊ करूँ।
मेरी वाणी भी अमृत बूँद बन,
कई लोगों को जीवन दे।
जिस भी तरु पर गिरे,
वह झूम उठे खुशी से।
मैं अपने अश्रु से ही,
पाषाण हृदय को पिघलाऊँ।
नवकल्प तरु बन,
वसुधा पर प्रेम रस बरसाऊँ।
उसकी वीणा के साथ मैं,
अपने सुरों का मेल करूँ।
जीर्ण-शीर्णों को तोड़ कर,
एक नया इतिहास रचूँ।

‘आलोक कुमार कुशावाहा’

नवम ‘ग’

दैनिक जीवन में हमें नाना प्रकार की चिन्ताएँ करनी पड़ती हैं। हम चिन्ता से कितना प्रभावित होते हैं, ग्रस्त और दुखी होते हैं यह हमारी प्रकृति और सहनशीलता पर निर्भर करता है। एक व्यक्ति बड़ी चिन्ता की परवाह नहीं करता तो दूसरा जरा-जरा सी बातों पर चिन्तित और अधीर हो उठता है, जो भी हो हम सभी चिन्ता का कारण उसे ही समझौते हैं जिसके विषय में चिन्तित होते हैं। लेकिन यह हमारी भूल है, नासमझी है क्योंकि यदि हम जरा गहरा सोच विचार करें तो चिन्ता का मूल कारण दूसरा ही पायेंगे।

दरअसल चिन्ता का कारण होता है आत्म विश्वास और प्रभु विश्वास का न होना हम जो भी काम चिन्ता के साथ करेंगे वह एक तो आत्मविश्वास के अभाव में दुविधापूर्ण स्थिति में किया जायेगा कि मालूम नहीं काम हो पायेगा या नहीं। हमसे हमारी कार्यक्षमता और कार्यपद्धति त्रुटिपूर्ण हो जायेगी। दूसरे, प्रभु विश्वास के अभाव में जो कुछ भी चिन्ताजनक हो रहा होता है या होने की सम्भावना होती है उससे हम खुद को जुड़ा मानकर चिन्तित व दुःखी हुआ करते हैं। जबकि हमारे वश में सिर्फ कर्म करना ही होता है। कर्म का फल हमारी इच्छा के अनुसार ही मिले यह हमारे हाथ में नहीं होता अन्यथा सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार ही फल प्राप्त कर लिया करते। जो हृदय में अखण्ड, अटूट और सन्देह-रहित प्रभु विश्वास रखते हैं वे हर स्थिति को प्रभु की इच्छा मानकर राजी हो जाते हैं।

जो स्वयं चिन्ता नहीं करता उसकी चिन्ता सर्वशक्तिमान प्रभु करते हैं। जैसे अबोध और माता-पिता पर निर्भर रहने वाले बच्चे की चिन्ता माँ-बाप किया करते हैं। परन्तु वह बच्चा बड़े होने पर अपनी चिन्ता स्वयं करने लगता है, तब माता-पिता उसकी चिन्ता नहीं करते हैं।

अतिन पाण्डेय
नवम 'क'

आधुनिक राजनीति

लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्री जी को मेवा।
कुर्सी के खेल में,
बेचैन हुए नेता।
वादों की नाव को,
कोई नहीं खेता।
मांझी के तेवर अब हुए जानलेवा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
एक नहीं, दो नहीं
सभी भ्रष्टाचारी।
जुल्म इनके सह रही,
जनता ये बेचारी।
निर्धन का रक्त चूस ये करें कलेवा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
प्यासों के हैण्डपाइप सूखे,
भूखों की थाली खाली।
चुनावों के अवसर पर करें देश सेवा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
हम तो पांच वर्षों में इन्हें एक बार चुनते,
लेकिन पांच वर्षों में खूब हमे धुनते।
सोर्स व सिफारिश बिन,
किसी की न सुनते।
कुर्सी के कारण देश को है बेचा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
'फीलगुड', 'इण्डिया शाइनिंग'
के देते हैं नारें।
फिर भी देश की नैया,
लगती नहीं किनारे।
होगा क्या स्वप्न पूरा बापू ने जो देखा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
जीवन के सुनहरे स्वप्न,
फँसे हैं अधर में।
भारत का स्वर्णिम भविष्य,
घिरा है भँवर में।
बलिदानियों की कर दी व्यर्थ सारी सेवा।
लोकतंत्र शासन में कुर्सी की सेवा।
जनता रहे भूखी प्यासी मंत्रियों को मेवा।

पीयूष दीक्षित

नवम 'ग'

हाईस्कूल परीक्षा - 2007 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

S.No. Roll No. Name

1. 1167149 AAayush Tiwari
2. 1167150 Abhay Chaturvedi
3. 1167151 Abhay Kumar Pandey
4. 1167152 Abhay Singh
5. 1167153 Abhijeet Mishra
6. 1167154 Abhimanu Shukla
7. 1167155 Abhinav Agnihotri
8. 1167156 Abhinav Ratna
9. 1167157 Abhinav Shukla
10. 1167158 Abhishek Agrawal
11. 1167159 Abhishek Kumar
12. 1167160 Abhishek Mishra
13. 1167161 Abhishek Sharma
14. 1167162 Abhishek Shukla
15. 1167163 Adarsh Kumar
16. 1167164 Ajay Anand Yadav
17. 1167165 Ajeet Sachan
18. 1167166 Alaukik
19. 1167167 Alok Kumar Shukla
20. 1167168 Alok Ranjan
21. 1167169 Alok Shukla
22. 1167170 Amit Sharma
23. 1167171 Amit Tiwari
24. 1167172 Amit Yadav
25. 1167173 Ankit Agrawal
26. 1167174 Ankit Kumar
27. 1167175 Ankit Kumar Singh
28. 1167176 Ankit Patel
29. 1167177 Ankit Singh Chauhan
30. 1167178 Ankur Dwivedi

S.No. Roll No. Name

31. 1167179 Ankur Srivastava
32. 1167180 Anoop Shukla
33. 1167181 Anupam AdarshMishra
34. 1167182 Aporva Tripathi
35. 1167183 Arpit Porwal
36. 1167184 Arun Kumar Verma
37. 1167185 Ashish Kumar Dixit
38. 1167186 Ashish Pandey
39. 1167187 Ashish Sachan
40. 1167188 Ashish Tiwari
41. 1167189 Ashish Kumar Verma
42. 1167190 Avinash Awasthi
43. 1167191 Avinash Mishra
44. 1167192 Deependra Singh
45. 1167193 Devendra Singh
46. 1167194 Dheeraj KumarPandey
47. 1167195 Dinesh Singh Bundela
48. 1167196 Gaurav Agnihotri
49. 1167197 Gaurav Jha
50. 1167198 Gaurav Varshney
51. 1167199 Hariom Gupta
52. 1167200 Himanshu Rajput
53. 1167201 Kanhiya Mishra
54. 1167202 Kaustubh Shukla
55. 1167203 Keshav Dev Mishra
56. 1167204 Kshitij Mishra
57. 1167205 Kuldeep Kumar Pal
58. 1167206 Manas Bhardwaj
59. 1167207 Manish Chaturvedi
60. 1167208 Mayank Kumar

S.No.	Roll No.	Name	S.No.	Roll No.	Name
61.	1167209	Mohit Bhatia	87.	1167235	S. M. Gaurav
62.	1167210	Mohit Tiwari	88.	1167236	Sajaq Mehrotra
63.	1167211	Mridul Bajpai	89.	1167237	Saransh Agrawal
64.	1167212	Nandraj	90.	1167238	Satwik
65.	1167213	Nishank Dwivedi	91.	1167239	Saurabh Dubey
66.	1167214	Nishant Dwivedi	92.	1167240	Saurabh Dwivedi
67.	1167215	Nishant Singh	93.	1167241	Shailesh Kumar Shukla
68.	1167216	Nitesh Kumar Singh	94.	1167242	Shailesh Trivedi
69.	1167217	Nitin Kumar	95.	1167243	Shashank Pandey
70.	1167218	Nitin Bajpai	96.	1167244	Shishir Mohan Dubey
71.	1167219	Om Sharan Mishra	97.	1167245	Shivam Sharma
72.	1167220	Pankaj Singh	98.	1167246	Shivam Yadav
73.	1167221	Piyush Kushwaha	99.	1167247	Shivendra Gaurav Mishra
74.	1167222	Prashant Kumar	100.	1167248	Shubham Kamal
75.	1167223	Prashant Singh	101.	1167249	Shubham Mishra
76.	1167224	Rahul Singh	102.	1167250	Somesh Rai
77.	1167225	Rahul Singh	103.	1167251	Sudhanshu Srivastava
78.	1167226	Ranjan Mishra	104.	1167252	Sumit Kumar Sharma
79.	1167227	Ranvijay	105.	1167253	Sumit Yadav
80.	1167228	Raviraj verma	106.	1167254	Suyash Madhur Dixit
81.	1167229	Ravi Ranjan	107.	1167255	Tushar Garg
82.	1167230	Ritesh Katiyar	108.	1167256	Utkarsh Gupta
83.	1167231	Rohit Kumar	109.	1167257	Vaibhav Sharma
84.	1167232	Rohit Kumar Prajapati	110.	1167258	Vaibhav Shukla
85.	1167233	Rohit Singh	111.	1167259	Vaibhav Singh
86.	1167234	Roopak Mishra	112.	1167260	Vaibhav Srivastava
113.	1167261	Vabhas Mishra	114.	1167262	Vibhu Pandey

इण्टरमीडिएट परीक्षा - 2007 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

S.No.	Roll No.	Name	S.No.	Roll No.	Name
1.	0623636	Abhinav Niranjan	31.	0623666	Ankur Katiyar
2.	0623637	Abhinav Vashistha	32.	0623667	Anuj Sharma
3.	0623638	Abhinay Dixit	33.	0623668	Anurag Singh Sengar
4.	0623639	Abhishek Chaturvedi	34.	0623669	Ashish Kumar Tiwari
5.	0623640	Abhishek Kumar Singh Yadav	35.	0623670	Ashutosh Singh
6.	0623641	Abhishek Kumar Verma	36.	0623671	Ashutosh Singh Yadav
7.	0623642	Abhishek Shukla	37.	0623672	Avnish Kumar Yadav
8.	0623643	Abhishek Singh	38.	0623673	Ayush Katiyar
9.	0623644	Abhishek Singh Bhadouria	39.	0623674	Deepak Dixit
10.	0623645	Abhishek Yadav	40.	0623675	Deepak Pal
11.	0623646	Abhishek Yadav	41.	0623676	Delip Kumar Gupta
12.	0623647	Aditya Pratap Singh	42.	0623677	Gaurav Mishra
13.	0623648	Akash Agnihotri	43.	0623678	Gaurav Sachan
14.	0623649	Aakash Gupta	44.	0623679	Harsh Tewari
15.	0623650	Aakash Gupta	45.	0623680	Harshit Kumar Mishra
16.	0623651	Akshay Mishra	46.	0623681	Kaushlendra Prakash
17.	0623652	Akshay Yadav	47.	0623682	Mayank Katiyar
18.	0623653	Alok Yadav	48.	0623683	Mohit Bajpai
19.	0623654	Amit Singh Vishen	49.	0623684	Mukesh Patel
20.	0623655	Amiy Anand Pandey	50.	0623685	Nishant Anand
21.	0623656	Amol Agnihotri	51.	0623686	Nishant Chandra
22.	0623657	Amrish Kumar	52.	0623687	Nishant Mishra
23.	0623658	Anil Kumar	53.	0623688	Nishit Kumar
24.	0623659	Animesh Dwivedi	54.	0623689	Nitin Kumar
25.	0623660	Ankit Gupta	55.	0623690	Prafulla Shukla
26.	0623661	Ankit Gupta	56.	0623691	Pramod Kumar
27.	0623662	Ankit Katiyar	57.	0623692	Prashant Kumar Singh
28.	0623663	Ankit Singh	58.	0623693	Prashant Pandey
29.	0623664	Ankit Srivastava	59.	0623694	Prateek Bhardwaj
30.	0623665	Ankur Agnihotri	60.	0623695	Prateek Pandey

S.No.	Roll No.	Name	S.No.	Roll No.	Name
61.	0623696	Praveen Awasthi	91.	0623726	Shivnath Singh
62.	0623697	Praveen Kumar Omar	92.	0623727	Shobhit Vinayak
63.	0623698	Praveen Singh	93.	0623728	Shreyansh Purwar
64.	0623699	Priyan Sachan	94.	0623729	Shubham Dixit
65.	0623700	Rachit Shrivastava	95.	0623730	Shubham Shukla
66.	0623701	Ravi Kumar	96.	0623731	Snehashish Mukherjee
67.	0623702	Ravi Kumar	97.	0623732	Sudhanshu Shukla
68.	0623703	Ravindra Singh Sachan	98.	0623733	Sumit Singhal
69.	0623704	Rishabh Gupta	99.	0623734	Suraj Patel
70.	0623705	Rishabh Raman	100.	0623735	Tushar Srivastava
71.	0623706	Rohit Omar	101.	0623736	Udit Agnihotri
72.	0623707	Rupansh Sachan	102.	0623737	Upendra Nath Tripathi
73.	0623708	Sameer Dubey	103.	0623738	Vibhendra Singh
74.	0623709	Sanjeev Kumar	104.	0623739	Vibhor Kumar Srivastava
75.	0623710	Satyam Gupta	105.	0623740	Vidhu Nath Trivedi
76.	0623711	Saurabh Dubey	106.	0623741	Vijayendra
77.	0623712	Saurabh Mishra	107.	0623742	Vishnu Pratap Singh
78.	0623713	Saurabh Pandey	108.	0623743	Vivek Joshi
79.	0623714	Saurabh Verma	109.	0623744	Vivek Kumar Singh
80.	0623715	Shailendra Kumar Debey	110.	0623745	Yogesh Kumar Verma
81.	0623716	Shailesh Singh			
82.	0623717	Shashank Dixit			
83.	0623718	Shashank Shekhar Yadav			
84.	0623719	Shashank Yadav			
85.	0623720	Shitanshu Gupta			
86.	0623721	Shivam Dixit			
87.	0623722	Shivam Dwivedi			
88.	0623723	Shivam Katiyar			
89.	0623724	Shivam Tripathi			
90.	0623725	Shivanshu Rajput			

विद्यालय परिवार

आचार्य कुल

1. श्री ओमशंकर त्रिपाठी (प्रधानाचार्य) एम0ए0 (हिन्दी), बी0एड0
2. श्री प्रकाश नारायण वाजपेयी एम0एस-सी0 (जन्तु विज्ञान), बी0एड0
3. श्री राजेश कुमार शुक्ल एम0एस-सी0 (रसायन विज्ञान), बी0एड0
4. श्री रामतीर्थ मिश्र एम0ए0 (हिन्दी), बी0एड0
5. श्री हेमन्त शुक्ल एम0एस-सी0 (भौतिकी), बी0एड0
6. श्री कैलाश जोशी एम0एस-सी(गणित), एम0एड0
7. श्री बिहारी लाल मिश्र एम0ए0(अंग्रेजी, अर्थशास्त्र), एल0टी0
8. श्रीमती शारदा राव एम0ए0 (अंग्रेजी), बी0एड0, एल0एल0बी0
9. श्री आनन्द प्रसाद वर्मा (कला-आचार्य) आई0जी0डी0 बॉम्बे
10. श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव एम0ए0 (गणित, समाजशास्त्र), एल0टी0
11. श्री दीपक राजे बी0ए0, बी0एड0
12. श्री सुभाष चन्द्र शर्मा एम0ए0 (भूगोल), डी0पीएड0,
13. श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय एम0ए0 (समाजशास्त्र), बी0एड0
14. श्री गणेश शंकर बाजपेयी एम0ए0 (संस्कृत), शिक्षाशास्त्री
15. श्री गया प्रसाद वर्मा एम0ए0 (अंग्रेजी), सी0टी
16. श्री सतीश चन्द्र गुप्त एम0ए0 (इतिहास, राजनीति विज्ञान), एम0एड0
17. श्री जगपाल सिंह एम0ए0 (भूगोल), बी0एड0
18. श्री दिनेश सिंह भदौरिया एम0एस-सी0 (रसायन विज्ञान), बी0एड0
19. श्री श्रीप्रकाश ओझा एम0एस-सी0 (भौतिकी), बी0एड0
20. श्री सुधीर अवस्थी एम0एस-सी0 (रसायन विज्ञान), बी0एड0
21. डॉ0 मनोज कुमार शुक्ल एम0ए0 (संस्कृत, हिन्दी) साहित्याचार्य,
पी0एच0डी0
22. श्री दुर्गेश बाजपेयी एम0ए0 (हिन्दी साहित्य, संस्कृत)
पत्रकारिता परास्नातक; IIMC, बी0एड0
23. श्री मंजीत सिंह एम0एस-सी0 (गणित), बी0एड0
24. श्रीमती रेखा निगम एम0ए0 (अंग्रेजी), बी0एड0
25. श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव एम0एस-सी0 (भौतिकी), बी0एड0

- | | | |
|-----|---------------------------|------------------|
| 26. | श्रीमती सीमा अग्रवाल | कम्प्यूटर शिक्षक |
| 27. | श्रीमती अर्चना विद्यार्थी | कम्प्यूटर शिक्षक |

कार्यालय

1. श्री राजेन्द्र गुप्ता (अधीक्षक)
2. श्री ओंकार नाथ (कार्यालय-सहायक)
3. श्री अरविन्द कुमार त्रिवेदी (कार्यालय-सहायक)
4. श्री मयंक मणि (कार्यालय-सहायक)

छात्रावास

1. श्री सुरेश चन्द्र अग्निहोत्री (छात्रावास-अधीक्षक)
2. श्री शैलेश दीक्षित (छात्रावास-सह अधीक्षक)

कर्मचारी-गण

1. श्री श्याम लाल
2. श्री रामभजन
3. श्री रामलाल
4. श्री सुरेश नारायण
5. श्री रमेश

अंग्रेजी वर्ग



Editorial

Dear Readers,

With great pleasure we present before you our budding talents with their thought provoking articles; soul-stirring compositions and inspiring poems. Our young writers have expressed their views openly on the matters of national importance; they have voiced their opinions about the rampant corruption but they are not discouraged. They are full of hope that they are the nation builders and shall succeed in building a strong and prosperous nation. In the selection of these articles we have tried to ensure that that they are genuine and original. The articles may not be of a high literary standard nevertheless they embody the precious creative talent of our young students. It is a divine feeling to create. Writers and poets have a touch of the supreme power of god. We salute the literary genius of our young children because they have a mighty role to play in future as "the pen is mightier than the sword."

- Sharda Rao

Year 2006 :- A saga of events

2006-2007

My school Pt. Deen Dayal Upadhyay Sanatan Dharma Vidyalay completed one more successful year in all aspects be it curricular or extra curricular. This year proved to be quite different from last few years in some aspects. A few special programmes as 'Vande Matram Divas' etc were celebrated students took part in all these programmes with even more interest.

It was the month of July when the students came again to the school after long vacation of two months. Three units of students Bal Bharti, Kishore Bharti & Tarun Bharti, were organized to make the machinery of school run properly and smoothly. These organisations help to encourage the participation of all students in each programme and activity. As a convention, the first programme of the session was the celebration of Tulsi Das Jayanti with a "Bal Kavi Gosthi" under the of auspices of Kishore Bharati. The 60th Independence day was celebrated containing at least 50 beautiful presentations in form of patriotic songs.

Just after two days of this celebration we faced the storm of first monthly examination fortunately and with some extra efforts, the overall result was good enough. These two months passed in studies mainly. Then came, the month of september, when the entire school prepares itself with all the strength to proclaim the motto of the foundation of this institute or the birth anniversary of the visionary Pt. Deen Dayal Ji's whose cruel assassination proved to be the inspiration for the founders of this institution, to cultivate several Deen Dayal Upadhyas to recover the irrevocable loss of one. In the main programme, the chief Guest was Sri Govindacharya, who brought light to Deen Dayal Ji philosophy of Integral Humanism. Ekam Manav Vad. In this way the school celebrated the most important festival of the year.

But the blow of second monthly exams was waiting to welcome us and also all the students were as courageous through out the exams as in the Annual function. The next month was the month of october which is supposed to be the month of festivals and naturally we were hoping to have at least 15 holidays for Dewali and Vijaya dashmi also. But it proved to be a "dream of MungeriLal" as all the vacations of Vijaya Dashmi were cancelled.

The death anniversary of the founder of the institution, Barrister Narendrajeet Singh Ji, was celebrated with the organisation of interschool Geeta Gayan competition and again we were the winner.

During next two months.....the school was buried in the mines of text books as the rehearsal of final exams, the half yearly exams were round the corner. But were we still and quiet?

No! when some unscrupulous tendencies of a particular group of the society tried to humiliate our National Anthem "Vande Matram" we expressed our deep patriotic feelings and determination of making those disruptive tendencies unsuccessful by celebrating. The entire day of 7 November as "Vande Matram Divas" though the blind & corrupted were totally in different to this important issue.

In spite of all these events, students concentrated on regular studies also.

The cool month of january became hit and happening when annual sports functions were organised. This event was most interactive event of the year in which at least 350 students took part as athletes and remaining were encouraging them all the time. Some students were rewarded with medals but each participant was a winner.

This month, the month of February is the final and most important month of the session when all the students irrespective of their class standards, are preparing for their final exams and all of them are busy in giving the final touch to the preparation of entire year. I pray to God to bless us all.

When we the senior most students of the school entered this college we hardly understood what the immense influence of this school is, but as we grew up, we began to realise that such institute as the empower the child with spiritual & moral strength. The entire period of last 7 years has passed in few moments the moral strength & self confidence, the school has developed in us will surely help us in keeping faith and confidence in ourselves in the most difficult situations of life.

Actually I fear to dream even of being the student of any other institute for these last 7 years. It was my good luck that I got a chance to get educated in this college

Finally my best wishes that the younger brothers will certainly get success in each field of student life where we could not success in the mirror of futurity I can clearly visualise the matchless success of my younger brothers.

Though we will be deprived of the parental treatment of our honourable teachers we have attained the immense love and blessings of our god like teachers. No power of this world can deprive us of this possession.

Prafulla Shukla

XII - A

Is Honesty The Best Policy?

The belief, Honesty is the best policy is true or not ?

I know 'True' escapes from your tongue but if we consider the present times perhaps your answer will be different.

Think, our country is being ruined Bribery, Dishonesty, Evil is rampant everywhere. If today, We return any fallen thing or rupee to the person, people laugh at us. Another example is, In present time some students have no money, Another student who doesn't work hard has money; still the second type student will be selected for any service because "Bribery is rampant every-where."

Thinking this, Tell me what is the correct way?

If you choose 'honesty' you will meet with anti-social elements and if you choose 'dishonesty' you are anti-social element. Now decision is in your hand. Either you choose honesty or dishonesty.

Shivam Tripathi

8th 'A'

The Place of Women in Modern India

*"Give us good women, we will have a
great civilization
give us good mothers,
we will have a great nation."*

such is the importance of women in our society, so it is said correctly.

*"The hand that rocks the cradle,
rules the world."*

In the ancient time women had an honourable position in the society. They were equal partners of men in every field of life. Sita, Savitri, Gargi and Anusuya are the pillars of Indian womanhood. During the Muslim rules they lost their position of equality. They were kept within four walls of the house. During the British rule their position remained unchanged.

Modern women are playing an important part in shaping our country. A cart has two wheels. A cart cannot work unless both the wheels work well. President Lincoln has said that

He became great due to the supervision of his mother, Thackeray had said

Mother is the name of God in the heart of little children" Plato wrote "

God could not be every where and therefore he made mother."

Such is the important part played by women. A great change has come in the position of women after Indian Independence our constitution has given equal rights to them in all fields of life. They now enjoy a place of honour in society. Today they are playing their role as teachers, doctors, engineers, lawyers, administrators, politicians and social workers. In the political field women are playing their role successfully. A few years ago *late Indira Gandhi* was the Prime-Minister of India.

Mrs. Vijaya Raje Sindhia was the vice president of Bhartiya Janta Party and *Miss Mayawati* is the chief minister of U.P. Now there are so many women who are members of parliament. In all fields they have proved their ability, skill and proficiency. *Mrs. Kiran Bedi* is a successful police officer and first I.P.S. lady. We can never forget the name of *Kalpna Chawala*. An American astronaut of Indian origin. She was the first woman who was selected in N.A.S.A. She died in Columbia space shuttle disaster in 2003.

So people should realise that women too have desires and feelings hence they should be provided time and resource to fulfill their ambitions.

Vikas Mishra
9 'C'

Swami Vivekananda's Mission to India with the Global Message

On the holy day of Maker Sankranti an angel took birth in the family of Mr. Dutta at Mukarjee street in Calcutta. Mother Bhuvaneshwari became very happy to see the divine face of her son. She was feeling that she had got all the pleasures of the world.

The loving child of mother Bhuvaneshwari and the dearest son of Babu Vishwanath, Narendra became famous as Swami Vivekananda not only in India but also in the whole world. He preached the gospel of "The greatest good of the greatest people."

"Bahujan Hitay, Bahujan Sukhay" to whole world. He unfurled the flag of 'Hindu Dharma' in the foreign countries. He was famous in the whole world for his knowledge and unique personality and became 'jagatguru'. The kings, the rich, the natives and foreigners also used to bow their heads to his feet. How this sun of our ancient Indian culture established the glory of Hinduism in the world and his name will be written in golden letters in our history.

Child Narendra got his primary and secondary education at home by a teacher. After this he went to Metropolitan Institute for higher studies. At the age of 14 yrs. due to some disease he was away from his studies for 2 years and started making his body fit. Restarting his studies after 2 years he completed his whole syllabus of 2 yrs. in only one year and as result there was only one student in first division. That student was Narendra. he was brilliant not only in studies but also in many fields. He achieved name and fame in singing, boxing, playing cricket, playing veena etc. He was good at singing when he was in boxing ring it seemed that he were a boxer by birth. In a few days his name was listed among famous cricketers. He was busy in these hobbies but as the night fell he was absorbed in his studies.

Narendra was a thoughtful young man. He was worried about the matters related to God. he was not a blind follower of anything. Due to his sharp mind he used to ask teachers before accepting things. He was wandering to and fro in search of God but he did not find any solution. He became disappointed in the matter of the existence of God and began to think that God is only the imagination of fools. Fortunately his luck brought him to Swami Ramkrishana Paramhans at this critical situation. Narendra asked Swamiji, "Have you seen God?" With a smile Swamiji replied "Yes, I have. You can also see him.

After this incident Narendra continued to live under the shelter of Swami RamKrishna Paramhans for 5 years. Swami Ramkrishna Paramhans preached and trained him for his work. Narendra Nath gained the divine knowledge in a little time with his hard work. He became his messenger. Narendra became famous as Swami Vivekananda after the demise of Swami Ram Krishna Paramhans. He visited his motherland from Himalaya to Kanyakumari. He saw and experienced the sufferings of the poor and disabled people of his country. After this he went abroad for the preaching of 'Hindu Dharma'.

In 1893 there was an all religions' conference at Chicago in America. Swami Vivekananda

boarded a ship on 31st May 1893 for Chicago. When Swamiji reached Chicago people saw him strangely and children followed him clapping because of his strange dress. He stayed there in a hotel. After some days Swamiji got information that the meeting for which he came from India will not be held before September. One day Swamiji met Mr. White the erudite of Greek language. Mr. White knew the director of conference. He made an identity card and gave a railway ticket to Swamiji to reach in meeting.

Day of 11 September 1893 will be memorable for each and every citizen of India. The task of addressing a large and learned audience was not only difficult but also sensitive but the first sentence of Swamiji fascinated the whole audience.

Swamiji started his speech with a heart touching line. That line was, "To the sisters and brothers of America." Americans gave him a huge round of applause. When they stopped clapping Swamiji gave an effective speech on ideal sentence of Indian culture. "Vasudhaiva Kutumbkam" by his loving and effective voice. When he returned after the speech it seemed that listeners were thirsty, they wanted to hear him more but time was fixed so he returned smiling and sat on his seat and closed his eyes. Then he recalled the word.

“मूकं करोति वाचालं”

Means a dumb can become talkative by the grace of God.

On 25th September 1893 Swamiji asked the audience, "the people who know about Hindu religion in this audience raise their hands." only 3-4 hands went up from the gathering of 7000-8000 people. Swamiji said further, "Still some people are criticising the Hindu religion about which they do not know anything. Do they not feel the shame? How dare they do this?" Swamiji said like the thunder of cloud, "Some people think that only their religion leads the people towards God. Such people are ignorant and pitiable". Explaining the sentence full of generosity of his guru Ramkrishana Paramhans Swamiji said, "Each caste, each religion will take something and will give something to another religion and will lead on the path of religion with its own power. If any religion outrages other religion, it falls from the place of religion. Today it should be written on the flag of every religion.

युद्ध नहीं, सहयोग ।

ध्वंस नहीं, एकात्मता

भेद नहीं, सहयोग

After Chicago Dharma Mahasabha Swami Vivekananda became centre of attraction for others. He was called as the Chief Guest in almost every public meeting. In a meeting he said that the ladies of that country were much cultured and civilised. They were kind hearted and frank. After this Swamiji left for England.

When his ship reached the sea coast of England he began to think -

This is the country that is ruling over our country crossing the seas. The citizen of this country are fools in their royal forms. They should be taught that the power they feel pride in is inferior to

intellectual power.

After hearing the first speech of Swamiji the leading newspapers of England named him cyclonic Hindu. One day Margret E. Nobel met Swamiji at the end of his speech. This Margret became famous as sister Nivedita later. She became a disciple of Swamiji often people asked awkward questions in the meetings and sometimes Swamiji answered them in piercing words. Once a man asked, "What did the Hindus do in India till now? They did not win any country yet." Swamiji replied, "They were not robbers. They never looted anybody. They did not snatch the freedom of any other country. Really they never comitted such sin."

In another meeting somebody asked, "You call your country 'jagadguru' in matter of religion but no prophet of your country came here before." Swamiji replied, "Why should they come here? When the prophets of my country came here the people of this country lived in forests without clothes. In this situation where would they go to find your forefathers?"

On 13th December Swamiji departed for India from London and reached Madras station on 6th February. At the station he was greeted with garlands - When his carriage proceeded the young men released the horses and began to pull the carriage themselves. Swamiji stayed in Madras for 9 days and influenced the people with his speeches and the people supported him with clapping. He was receiving many letters from Calcutta. The citizen of Calcutta wanted to see him. Seeing the curiosity of citizens of Calcutta he thought to visit Calcutta soon. He reached Bidirpur by sea route. He caught the train to go to sialdah from there. The train reached Sialdah at 7 O' clock . The people were gathered in a large number to see Swamiji. Swamiji saluted everybody at the gate of the train and people welcomed him touching his feet. He established Ramkrishana Mission in Calcutta for the rescue and propaganda of vedic culture. He helped the people during famine. He established dispensaries and education centres. Branches of Ramkrishana Mission had been established at many places. The colleagues and disciples of Swamiji were serving at all centres.

On the fateful morning of 4 June 1902. Swamiji did not come in prayer. Swamiji used to take food alone but that day Swamiji took food with his disciples and colleagues. After taking food Swamiji went to his room with a disciple and took samadhi' at about 9 O' clock.

As it is not possible to add or subtract anything in truth, it was not possible to add or subtract anything from the character of Swami Vivekananda. Swamiji believed "Each creature is Divine". So he looked at the God inside the body of every creature. That was the reason that one could see a familiar face in him.

Today the condition of our country is not so good. A question arises in the mind as to where is that frame in which the soft and hard characters like Swami Vivekananda are framed. Todays there is a need of a revolution which can mould great men like Swami Vivekananda.

Madhukar Tiwari

VIII-A

Grammar Family

Grammar family lives in a large area called Part of speech. Head of the family is Mr. Noun. His wife's name is Mrs. Verb. She has three children one son and two daughters. Son's name is Pronoun. He loves his father very much and he has to do all the work in absence of his father (Noun). The first daughter is Adjective. She loves her father and brother and always praises them. Second daughter is Adverb. She loves her father and mother very much and praises her. Mr. Preposition, always Joins the family in the time of sorrow and happiness. A member always comes to their house and Joins. People when they are in need. Childrer. call him uncle conjunction. All the people living in the area of part of speech are happy in their circle.

Ganesh Jee Omar

IX 'A'

Brain Drain

A novel phenomenon that has taken place after independence is that of brain drain. It means that our best brains are emigrating to other countries with the hope of a better future there. An aspiring young man naturally gets attracted by good salaries and better opportunities which he hopes to get in the countries like America. It cannot be denied that India is losing her gems. To brighten up their future, the talented and highly skilled persons prefer to go abroad to earn name and fame. Had they served in India, our country would have developed to an appreciable extent. This is undoubtedly a serious problem to be tackled.

Brain drain is more common in the technical professions like engineering, medical sciences, computer and management. The annual emigration of qualified persons from India. to other countries is some where between 10,000 to 25,000. During 1977-78 alone nearly 25,000 graduates and past graduates settled down in other countries due to the lack of proper infrastructure here and on the pretext of getting better jobs and salaries there. A current study reveals that a great number of scientists, engineers and doctors in the U.S.A. are from India and other developing countries. This number has continued to swell over all these years creating an alarming situation.

It is a sad comment upon the inability on the part of our government which has failed to provide facilities in India and consequently to recognize talents in the country. More often it is only when the western world puts its stamp of recognition on an Indian, his countrymen hail him. This is certainly a negative attitude which should be curbed.

Whatever are the reasons behind 'brain drain' and whoever are the responsible persons, it is a matter of great concern because the sons of India are indebted to her and they should work for her only. But the million dollar question is what can be done to use the best brains for the betterment

of India only. The young men are the pillars of nation. It is, therefore, essential to create such an atmosphere where the talented persons feel comfortable and satisfied so that they can use their potential only for their country. The government should take the necessary steps to provide them with the better infrastructure and better job opportunities. On the other hand, it is also the duty of the youths to contribute to the progress of their motherland even if they have to undergo some hardships. They should not forget that if the old and experienced people are eyes and ears of a nation, the youths are her limbs and so they should use their 'winged days' in the service of their natieland. 'Inspiration and genius - are one and the same.'

Abhay Pratap Singh.

9 th 'C'

May I

May I be the first one to call,
when you are stressed;
May I be the first one to call,
when you are in distress;
May I be the first one,
To cheer you up again.
May I be the first one,
To increase your happiness;
May I be the first one,
With whom your guilts you can confess,
May I be your best friend forever,
May we never fight as we live together,
May I be your comfort,
In tensions and sorrows;
May I be the first one,
You remember tomorrow,
May I be among the ones,
With you in the time flying so fast,
May I be the only one
With whom you breathe your last.
May our friendship on stones be cast,
We shall die but our friendship,
Shall never be past!

Raj Gaurav Katiyar

XI 'B'

Laloo Prasad Joins Microsoft !

Once Laloo Prasad yadav sent his bio-data to apply for a post in Microsoft corporation, U.S.A. A few days later he got his reply :

"Dear Mr. Laloo Prasad,

We are sorry to intimate you that you do not meet our requirements, please do not send any further correspondence No phone call shall be entertained. Thanks."

Laloo jumped with joy on receiving the reply. he arranged a party and when all guests had come, he said : "Bhaiyon our Behno, aap Ko jaan kar khushi hogi ki hum amereca mein naukri pa gaya hoon."

Everyone was delighted, Laloo Prasad continued....."Ab hum aap sab ko apnaa appointment letterva padkar sunaongaa. Par letter angreji mein hai, isliye saath-saath hindi mein translate bhi karoonga.

Dear Mr. Laloo Prasad

Pyare Laloo Prasad Bhaiya

We are Sorry.....

Humse galti ho gayi

to intimate you.....

Aapko e batana hai ki

you do not meet

aap to milte nahin no

Our requirement.....

Humko to zaroorat hai

Please do not send any further correspondence

Ab letter vetter bhejne ka kauno

zaroorat nahin hai.

No phone call.....

Pardonwa ka bhee zaroorat nahin hai

Shall be entertained.....

Thanks.....

Aapka bahut bahut dhanyawaad."

Raj Gaurav Katiyar

XI 'B'

Never look down upon others

To God, we are all alike, for He created us all. To please Him, we must love our fellow-beings. Our father will never be happy, if we kill or quarrel with our fellow brothers. God, as the Father of all of us, can never be happy, if we hate any human being or any living creature. This is not enough to say that we believe in God, we love Him, we respect Him or worship Him. We have to prove it by our actions. The best proof can be our love for all the living beings of the world. We should never think that we are superior to others or that we are different from others. "I am what they are and they are what I am" must be our motto. Caste, creed or colour should never influence our behaviour. We should give all our attention to please our creator by performing our duties and loving all. The hand is always ready to help all the other parts of the body. When our feet are in pain or any other part is hurt, our hand without delay comes to free us from our pain, without thinking that the feet are lower than the hand or that the mouth, nose, ears or eyes may contain impurities. Likewise, we should never look down upon others.

Avnish Yadav

12th 'A'

God Can Do Everything

While everything around me is everchanging
Ever-dying there is underlying all that changes,
a living power that is changeless, holds all together
that creates, dissolves and recreates,
That informing power of spirit is God
In the midst of death, life persists :
in the midst of untruth, truth persists :
Hence. I gather that God is life. Truth. light,
He is love, He is the supreme God
I know that I can do nothing
God can do everything.
O God, make me your instrument and
Use me as your will.

Ankur Katiyar

XI 'B'

Failure is the Pillar of success

There is no doubt about it that failure leads to pain but bears a sweet fruit in the long run. It infuses a new hope energy and vigour in man's life it makes a man optimist and leads him to the path of patience and perseverance. It affords encouragement and crowns his efforts with success a famous urdu poet has drawn a vivid picture of its meaning in his following couplet :-

“गिरते है राह सवार ही मैदाने जंग में,
वे तिफल क्या कर गिरेंगे जो घुटनों के बल चलें।”

It is a symbol of cowardice to be discouraged and feel pessimistic on failure one should not be disheartened. We should continue our struggle till the goal is achieved. The following story will explain the meaning :-

Robert Bruce was the king of scotland. His country fell in the hands of Britishers. He wanted to free his country from the English. He was defeated many times in the battle field. He ran away in the forest and hid himself in a cave.

One day he was sitting in a pensive mood. All of a sudden his attention was attracted by a spider who had fallen from his cobweb. He decided to see what the spider would do. He wanted to know whether the spider would continue its efforts or give it up. It was hanging with a thread and trying to go up. It had tried many times but failed. Robert Bruce thought that the poor spider would try no more. It was to his surprise that the spider did not lose heart and made nine attempts and succeeded at last. Seeing this a ray of hope shone on his face. he thought that if spider could reach its cobweb after many failures why could not he achieve his goal. He gathered his army and challenged the Britishers once again, fought a decisive battle, defeated them and won the cherished freedom for his country.

Ankur Katiyar
XI 'B'

Build Self - Confidence

Self confidence is a virtue, like over confidence is a vice. There are many people who have real talent in them, but lack self-confidence.

They never achieve anything only because they do not possess this virtue. They are afraid of making the first move. In this way, many good and useful things are lost in the world.

A lot of talent that people have in many lines goes unused and it is thus wasted. Nothing big can be achieved if there is lack of self-confidence. Mary Kay ask is right in saying.

“If you think you can, you can. And if your think you can't, you are right.” If a person has no confidence in self, he is twice defeated in the race of life. So we should develop this virtue in ourselves.

“To be trusted is a greater compliment than to be loved.”

Shubham Gupta
9th 'A'

Dreams come true!

Dreams come true
This is my view
If you work hard
with one guard
Then you will achieve success;
And will be selected
In every competition.
If you utilize your vacation,
If you march forward with an aim,
You will bring glory to country's name.
I wish to be an engineer
or a great player.
And I want you to do the same dear
For our future will be decided next year.

Raj Gaurav Katiyar
XI 'B'

Those, who do not know how to fight —— worries; die young. ——

Worry is the worst form of mental activity, a stupid waste of time in unpleasantness. It has never led and will never lead a man victoriously in any phase of life.

Worries do not have solutions; worrying about things you cannot control then, It creates biochemical reactions that affect the nervous system, the heart and also causes psychological disorders.

Worries whatever its sources be; weakens the body, takes away courage and shortens life. So, do not waste time and energy worrying. As most of our problems are not a matter of life and death.

So, tame your worries and energize your health.

Nishant
Xlth 'B'

Aesthetics

Aesthetics is a branch of philosophy dealing with beauty and taste. The term "aesthetics" was introduced in 1753 by the German philosopher Alexander Gottlieb. It defines what is beautiful. It is a personal belief about how to live or how to deal with a situation. It is rational investigation of questions about existence and knowledge and ethics. It is motivation based on ideas of right and wrong. It is the principles of right and wrong that are accepted by an individual or a social group. It defines the beauty and ugliness in our views. It also deals with the question of whether such qualities are objectively present in the things they appear to qualify, or whether they exist only in the mind of individual.

The first aesthetic theory was given by Plato. Plato, one of the most famous philosophers of ancient Greece, was the first to use the term "Philosophy", which means love of knowledge. According to him objects in the physical world merely resemble or participate in the perfect forms can be the objects of true knowledge. The aim of the philosopher according to the great philosopher is to know the perfect forms and to instruct others in that knowledge. Motivation derived Logically from ethical or moral principles that govern a person's thought and action.

Aristotle also spoke of art as imitation but not in the Platonic sense. For Aristotle it was a study of the soul. Through the functioning of the soul, the moral and intellectual aspects of humanity are developed.

Sameer Dubey
12th 'B'

The legacy of my school

One day when I was in the class. Our english teacher Mrs. Sharda Rao gave us some topics for speaking. Among those one topic was "The legacy of you school". On hearing this topic I become so excited because this was the topic on which I had many things to say. On that day there was lack of time so I thought of writing it down.

I came here in class sixth. I can't say that I was well mannered because some initial experiences were very bad for me. Today I can realize that they were for my welfare. The punishments and scoldings from my seniors made me adjust in the atmosphere of hostel life. The thing which was most close to my heart was family like behaviour from everybody, not a bit of sense of strangeness was there and how can, forget the spiritual atmosphere in this school. It affects everybody who is a new comer in this school. Lectures in 'Sadachar Vela' purified my mind and created respect towards my teachers. I want to tell you, the school where I completed my primary education was the best school in the city. That was an english medium school run by Christian missionaries. Every thing was good there but I never liked to go there because there teacher had no time to get attached to the students. According to my view here students get the attention from the teachers and this brings them closer and closer.

This is the only school where sentiments are not ignored. The thing which is in the base of this school are sentiments empowered by thoughts. Here I got encouragement to express my sentiments. I wrote some poetry also. These were my sentiments. Sentiments make a man when he is guided by thoughts without this, man is not a man he is a living machine. At present man has become so professional that sentiments have no standing in his life.

Second thing I got here is recognition. In my view a man who is unknown can remain alive but he will never be developed. Recognition gives man confidence everyone wants that some people come to know him.

This is one of the wishes of man but this doesnot mean that a man should do anything to be famous. According to our principal sir "A man can become famous only by doing his work in the best manner and should keep open his eyes in the society for saving himself from evils.

Third thing is character. Being on high posts, creating positions are small things what I can say firmly that my school grooms good human beings and provides them to society when they are needed most.

I am not using hyperbole for describing the place of school in my life. It is true. I can express it because. I felt this difference. Therefore I am so obliged to my school.

Nishit Kumar
12th 'B'

Tips for charismatic Communication

Change your focus -

Observe your interaction with people during the next few days. As you talk to others, determine how much of your conversation is concentrated on yourself. Determine to tip the balance in favour of focusing on others.

Play the first impression game :

Try an experiment. The next time you meet someone first time, impression. Learn the person's name focus on his interests. Be positive. If you can do this for a day. You can do it every day. And that will increase your charisma.

Share yourself :-

Make it your long term goal to share your resources with others. Think about how you can add value to five people in your life this year. They can be family memberes, colleagues, co-workers, or friends. Provide resources to help them personally and professionally.

Secret of success -

Perle Mesta, the greatest washington hostess since Dolley madison was asked the secret of the success in getting so many rich and famous people to attend her parties.

She replied "It's all in greeting and good-byes". When a guest arived she greeted him warmly and said. At last you are here!" and as each left, she said, "I am sorry you have to leave so soon!" Her agenda was to focus on others, not herself. That is charisma.

Piyush Trivedi
11th 'A'

My Best Friend

Friendship is the best relation between two people because a good friend tells us the right path. Choice of a good friend is a difficult work, as I think because a bad friend can push us on a wrong path.

We should not choose a friend who is adamant with us rather we should choose a friend who accepts our decision with some discretion.

So, I can say that It is a difficult work to choose a good-friend who could guide us in an accurate way.

At last, I reach this decision that only God can be my best friend.

Shivam Tripathi
8th 'A'

Companionship of Books

Really, our books are the best companions for us. Books give us knowledge. They tell us about the historical & geographical facts. From books, we can also entertain us like Jungle Book, Alice In wonderland, Gulliver Travels and ordinary comics like Chandamama. By books, we can know about the life-style of greatmen & get a lot of courage and inspiration from them.

"A house without books is like a room without a window".

In school, we can not gain knowledge without books. As Bacon said : "Some books are to be tasted. Some are to be swallowed & some others to be chewed and digested." Throughout our life books guide us. They give us comfort when we are happy when we are sad they give us consolation. Books inspire us very much. So we can say that "Books are never-failing friend."

Some popular and inspirational books are Geeta, Ramayana and Mahabharata. The spiritual book Geeta gives us the message that work hard. In this mystical book, there is the eloquence of lord Krishana that "Do the work; reward is not thy concern."

Pranav Tripathi
VIII-A

The Problem of Unemployment in India

“True test of democracy is full employment and social security”- **Dr. Radha Krishnana**

The Problem of unemployment is the most serious problem facing our country. A large number of educated and uneducated people loiter about in search of some job. They are willing to work but they can not get it. There is unemployment in cities; towns and even in villages. An empty mind is the devil's workshop. An unemployed person is a nuisance to the society. A hungry man can do any wrong. Therefore, it is the duty of the government to solve the problem of unemployment as early as possible.

There are many causes of unemployment in India. The greatest cause of unemployment is the overpopulation of the country. The population of the country is increasing fast but the jobs can not be increased in that proportion. So, a large number of people remain unemployed.

Another cause of unemployment is our defective system of education. The present education is bookish. It should be job-oriented. It does not prepare students for life. Every young man of today is suitable only for a white collar job.

Machines are also responsible for the problem of unemployment. The machines are labour-saving devices. These machines throw thousands of persons out of work. People rush to cities in search of employment. the result is that the cottage industries which provide employment to many, are impaired. Gandhi ji warned the people against industrialization “India needs not mass production but production by the masses.”

There should be a check on the rapid growth of population. The programme of family planning should be more popular in rural areas. All efforts should be made in this direction.

The system of education should be changed. Importance should be given to technical and vocational education. Education should be sound and practical. Government should create more jobs for the educated Unemployed.

Cottage and small-scale industries should be developed we should lessen the use of labour-saving machines. Banks should advance loans to the youths to set up small industries.

Luckily our government is fully alive to solve this problem. Technical and vocational colleges are being opened. Cottage and handloom industries are being encouraged. Efforts to control population are being made. Irrigation and other multipurpose projects are increasing. These steps will help a lot in solving the problem of unemployment.

Shobhit Awasthi

11th 'B'

“The Moon”

The moon is the nearest to the earth. It has no light of its own. It shines with the reflected light of the sun. The people in the past thought that the moon was a goddess and they worshiped it as such. It is a huge globe similar to the earth, but much smaller than it.

It shines at night when the sun is off duty. It sheds light which is cool and refreshing. The moonlit nights after dark ones have a soothing effect on the mind and the body. The travellers like the moon and children enjoy playing in its light. Now-a-days matches are held in moonlit nights. The play of light and shades among trees is at once pleasant. The running water in a river appears to be silvery. The reflection falling on the surface of water through the foliage of trees presents a beautiful sight to look at. The budding twigs, the flowers tossing their heads in sprightly dances, the green fields, the murmuring brooks, the tender creepers and the plants all seem to wear silver robes when the white beams of the moon shine upon them. There is little difference between days and nights when the moon is full. A moonlit night gives a strange beauty to nature. The trees, the hills, the rivers, the sand and everything else that is there looks bright and pleasing. Even towns and hamlets look charming on a moonlit night. Some buildings like the Taj have a special attraction on moonlit nights. The entire sky is lighted up by the cool and soothing beams of the moon. Every object seems to glow with a radiant light.

A poet says The sight of the moon makes one forget the worries and anxieties of the world where 'men are anxious even in their sleep.' The moon beams enrich the juice in fruits and makes it sweet. A poet compares a beautiful face to the moon.

Men on a full moonlit night look like a lake of silver. The moon exercises a peculiar fascination on our hearts and heads. The entire outlook of a man undergoes a transformation. A moonlit night is a wonderful time to move out and enjoy nature in its purity. On a moonlit night, the charm of nature thrills everybody. The peacocks whistle wonderfully. Their whistles can be heard many furlongs away. The dogs are smarter, the jackals are less hoarse in their howls. The frogs leap up with joy. Only the owls and the bats are a bit sullen.

Moonlight brings a special charm in a railway journey as trees flit by like sentinels on duty. The lake and mountains glisten in the distance. The fields have a fairyland appearance. Everything dull and drab becomes beautiful in the light of the moon. The moon has fascinated poets down the centuries.

A poet says :-

“How like a queen comes forth the lovely moon. From the slow opening curtains of the clouds walking, in beauty to her midnight throne.”

Padam Ji Omar

XI 'A'

My memories

When I was in sixth
I was in a fix
but slowly the days passed;
and I learnt a lot
which I could never forget
till the life's last.

The spiritual knowledge I gained
In the seven years of life
will help me in main
part of my life

I got tremendous knowledge
and learnt the psalm of life;
which every student needs
in this world wide;

I got the proper aim
with support of my school
The confidence that generated
will never get cool.

This is all due to
the teaching of my teachers
who made us realize that
we are great creatures

And now the final time
of my school life; to it
How much I grateful am
Can not be described.

Priyam Sachan
XII - 'A'

The role of youth in shaping India

India the world's largest democracy, is advancing on every front be it educational front or infra structural front.

But the role of youth in keeping its pace and to accelerate it on various fronts is not as clear as it should be. The Gen-next is ready to take the responsibilities in placing our country on the top of the world.

The young are committed to achieve the goals set in President Kalam's Mission - 2020. They need only to be shown faith by the elders and to be backed by the community.

India with enormous youth power is only at the dawn of 21st century renaissance to be started by the sector of society, not considered to be reliable till now. There is all ready to go, it needs the clicking of the seniors.

The future of the country is promising & it is certain that India will regain it's top position in the world. The youth of India are invincible so it is impossible to check India in the journey from the teacher of the world to the master of the world in every aspect of life either art, science, literature or politics, religion, and spirituality.

* Come on India, the globe is waiting*

Alok Yadav
XII 'A'

Peace

Peace, Peace
where is peace
In the world today
Bombs are dropped
In the name of peace
why do we fight?
I asked
to maintain peace
was the reply
Peace for what
To live or to die.

Yash Awasthi
8th 'A'

Parents : God's Most Wonderful Gift.

Once a wise man asked me, name the most influential people and I answered "My parents" Parents - the people who always stand by you who watch you grow and develop, and become too big for your books. They know your deepest fears : your greatest assets, in fact, they know you better than they know themselves. They are always forgotten, always uncared for, because they are simply always there. Ready to cushion our fall. By life's relentless barricade when they are not there, we think and feel that we do not need them, but we are wrong, oh so wrong. They suck you thumb when you cut it, and lovingly apply first aid to it. You may love them. or hate them, it really doesn't matter because you are what you care from those feeling it self. But whenever, you need love, go to your parents and everything will seem like heaven.

Meaning of Teacher

T = Is for marvelous treatment H = is for high thinking

E = Is for easy way of teaching E = Is for creation of "Enthusiasm" in us

A = for "All round knowledge. Is for being reputable. R = is for being respectable

C = Is for great caliber.

Abhishek Ranjan

Sixth 'B'

The value of sports

It is said that - " The battle of waterloo was won at the play fields of Eton and Harrow". It means that young lads acquire on the play ground not only physical efficiency but also discipline, habit of obedience and will to win these virtues makes them good soldiers. Thus sports besides giving pleasure, educated youth in virtues which helps them to win the battle of life. On the playground the youths learns the lesson of discipline. Obedience and tenacity voluntarily while enjoying games they develop character. They develop the sense of discipline. They obey the rules of games as well as the orders of the captain. A sports man is never lawless. He knows the value of the proverb. He who knows how to obey knows how to command sports teach the value of team spirit and unity of action. Unity of action inspired by unity of purpose always brings success. The selfish desire of a single individual to shine at the cost of others brings disaster In every play we often see this happening. In the hard battle of life we do not always get justice. But we should not be disheartened. We have to make further efforts. Thus sports of all kinds are good not only for the body. They are good for the mind and the character also. They make us well equipped to face any adversity in life.

Abhishek Ranjan

Sixth 'B'

As you dream it

It is a proven fact that success is always conceived in the womb of dream, cradled in the determination and crowned with the glory by devotion. Therefore success is not accidental but achieved by bringing 3 ds into the life until and unless you don't dream to achieve some thing in life, you can never be an achiever. That is why Abraham Lincoln has said, "As you dream so you become". But dreaming is not enough, you have to make a determination to convert your dream into a reality and then you have to devote you wholeself to make it happen. If you adorn yourself with these three jewels the whole world is yours my friend you will sail beyond the horizon.

Sujeet Ranjan
8th 'B'

The Biological Effect of Music

The effect of music on growth of plants, lactation of cows and the calming effect on the patients has been studied experimentally in various labs.

Classical music of certain Ragas has a lot of effect in curing patients as claimed by many persons. An aesthetic play of light and colours which are just photons of different wavelengths, intensities, distributions have a known effect on making a person happy - This is the effect of Natural beauty.

The mind has been the subject of study since long. However, unless the scientists are able to identify quantitatively the effect of various senses on the mind, the science of psychology may not be in a position to help medical science. Whatever may be mind. The brain Activity of the brain as measured by metabolism of glucose is found to be associated with concentration of 18F. The scanning photographs given by Krane (Plate 3, John Wiley, 1998) show a surprising result. The activities for language and music are on different parts of brain although both are caused by some sensory organ.

If one studies the effect of the food on mind as seriously as the effect of food on body, one can come up with a lot of scientific facts which could be surprising and this could be very useful for unleashing the potentialities of man.

Suraj Patel
12th 'B'

India : In The Past And Present

Everyone is running in an endless loop of life and death. Attaining 'Salvation' or 'Moksha' is the only way to get rid of it. Today the whole world is undergoing transformation. Corruption and 'Corruption'. We are quite familiar with this word. Corruption is everywhere. Corruption is in politics, education and almost every dimension of life.

In the past India was known as 'Vishwa Guru'. It was a unique country in whole world. At present also it is so but.... but the soul of mother India.... her children they are corrupt and are very very self-centered.

It was told in India that the whole world is our family or 'Vasudhaiva Kutumbkam'; We want everyone's welfare, all must be happy, or "Sarve Bhawantu Sukhinah", but what is going on now a days. India is not shining India is fading.

India was known everywhere for its art, sculpture, science and spirituality but now India is dead. 'The mother of daring and courage' India now needs thunder in the blood of her children to again establish her at the pinnacle of glory. Our past was prestigious but our present and future must also be so. India is called 'Bharat' in hindi. It consists of two words 'Bha' means 'light' and 'Rat' means indulged : so one who is in light is India.

India the land of valour and courage will surely glow with new spirit and holy soul. India the land of exemplary devotion will again lead the world. India the land of sacrifices will be India the land of blood and thunder will overcome all temptations and will establish honesty at the most glorious position.

So come lets pledge that we will guide our country towards success and success, victory and victory, glory and glory.

Arpan Shrivastav

IX 'B'

"Tulsi Jayanti Celebration In My School"

On 1 Aug 2006 Tulsi Jayanti was celebrated in my school. Regarding Tulsi Jayanti, Shri Prem Bhushan Ji told us the story of God Ram. he also sang some melodius songs related to lord Ram. After singing songs, he told us about Goswami Tulsi Das Ji because that day was his birthday. he told us that in district Banda, Village Rajapur is the birth place of tulsi Ji after a few days of his birth, his mother and father died. Then he went to Kashi for education. In 1631, he began to wirtre his most famous religious book 'Shri Ram Charit Manas in Ayodhyaya. It has seven cantos, he told us the short meaning of all cantos.

Contos

1. Bal canto
2. Ayodhya canto
3. Aranya canto
4. Kishkindha canto
5. Lanka canto
6. Sundar canto
7. Uttar canto

Short Meanings

- Sacrament canto
- Meditation canto
- A mind free from evil
- Doing work with in life
- End of Darness
- Heart of love
- Canto

He wrote other compositions besides 'Ram Charit Manos' they are - Hanuman Chalisa, Vinay Patrika, Gitavali, Kavtavali, Dohavali, Ram Lala neha chu, Hanuman Bahu, Vishnu Katha, Ram Katha, Hanuman Ashtak.

After heaing the story of Shri Ram, We came to the class and resumed our studies.

Shivam Tripathi

8th 'A'

The Only Option

Napoleon - Bonaparte had long wished to capture the British. He sailed to the British Isles, quietly unloaded his troops and supplies and gave the order to burn the ships. "Now it is to win or Perish. We have no other option." With that single order, he guaranteed the success of his campaign. He knew that people have no other alternative, or will accept no other - always win. when we are dispirited and down, this narration might serve as a tonic.

People willing to go the extra mile with faith and hope on their side always manage to make the apparently impossible, a reality. As Napoleon Hill observed, "Misfortune seldom tangles with those, whose bodyguards are hope and faith."

Some people lead a charmed life and everything always works for them. A closer look at their lives will reveal that they face as many problems, setbacks, failures as any one else, but the difference is that they deal with it differently - with the never give up attitude, instead of worrying.

Worry is perhaps the most useless of all human activities as Humorist William Roger once observed, "Worry is like a rocking chair. It keeps us busy but takes us no where."

By - Suraj Patel
12th 'B'

Money

The term 'money' possesses a lot of importance in the present scenario. It has become a pivot on which the whole world seems to run. Now every body is running after money. It is impossible to think about the life with out money? So every one needs money. Today every body is busy in earning money with the help of money we can get food, clothes and house to live we can also get modern gad gets - computer, mobile, T.V., Car, Inverter etc.

But some times money makes a man blind. Some people adopt wrong means to earn more and more money which goes to wrong hands, it spoils the career, so we should try to make the wisest use of money. Every one needs money very much for the money people do crimes.

Excess of everything is bad.

"Money is the thing which gives man anything."

Shubham Singh
7th 'A'

Importance of Books

I like companionship of book very much because the books contains a lot of knowledge. They are very important for the students.

"A house without book is a room without window."

"some books are to be tasted, some are to be swallowed some others to be chewed and digested."

Books are our friends when we are happy they give us comfort when we are sad they gives are relief.

"Books are our never failing friends."

I am very fond of reading books. I spent a lot of time among them. My favourite book is Geeta. This is an inspiring books. It gives us the message.

"Do the work reward is not they concerh."

Vishad Pandey
Seventh 'A'

The New Microsoft Vista

Microsoft vista is the latest operating system developed for us to do such tasks easier which we were not be able to do in the previous Microsoft Operating system Versions i.e., Professional XP, 98, 2000 etc.

Why Vista?

When we start using Windows Vista, we will recognize familiar elements such as the Start Menu, which is now faster, more streamlined, and more helpful than in the previous versions of Windows. The start menu features integrated desktop search through a new feature called Instant Search which can help us find and launch amost anything on our PC. Just type in a word, a name, or a phase, and Instant Search can find the right file for us. But more than that, the new start menu makes it very easy for us to navigate across all of the instaued application on our PC. Eliminating the slow performing, eascading" All programs" view, the new start menu can help us get something started more quickly than ever.

User Experience -

Windows vista introduces a break through uses experience and is designed to help us feel confident in our ability to view, find, and organize information and to control our computing experience. The visual sophistication of Windows Vista helps streamline our computing experince by reining common window element so use can better focus on the content on the screeu rather than on how to access it. The desktop experience is more informative, intuitive, and helpful. And new tools bring

better clarity to the information on our computer, so use can see what our files contain without opening them, find applications and files instantly, navigate efficiently among open windows, and use wizards and dialog boxes more confidently.

Windows Internet Explorer 7 -

Windows Vista enhances the Internet Explorer experience. The upcoming release of Internet Explorer 7 not only adds important new security and privacy features, but makes everyday tasks easier through features such as tabbed browsing, inline search, and shrink-to-fit printing. New Internet Explorer 7 features, live tabbed browsing, and live previews, make it easier for us to get to the websites we want to visit. It also provides new tools to give us direct access to information we want, with built-in support for web feeds known as Really Simple Syndication (RSS). RSS is a technology we can use to have information sent to us, so we don't have to look for it. Through RSS subscriptions, we can sign up for feeds (Lists) of headlines from Internet sites. Internet Explorer 7 discovers these feeds on sites and allows us to preview and subscribe to them. Once we subscribe, Internet Explorer 7 systematically consolidates headlines from each into one list. This lets us quickly browse new information from various sites without having to visit each site separately. Windows Vista also builds upon the user Account protection initiative - by default, limiting Internet Explorer 7 to just enough permissions to browse the web, but not enough to modify our files or settings - keeping our PC safer from web-based attacks. This Windows Vista-only feature, known as protected mode, means that even if a malicious site attacks a potential vulnerability in Internet Explorer 7, the site's code will not have enough privileges to install software, copy files to start up folder, hijack the settings for our browser's home page or search provider.

Windows Flip & Windows Flip 3D -

Windows Vista provides two entirely new features to manage windows: Windows Flip & Windows Flip 3D. Flip allows us to flip through open Windows [by using Alt + Tab], providing a live thumbnail of each window, rather than just a generic icon or file name. Live thumbnails make it easier to quickly identify the window we want, particularly when multiple windows of the same kind are open. With Flip 3D, we can use the scroll wheel on our mouse to flip through open windows in a stack, and quickly locate and select the one we want to work with.

Windows Explorer -

The new Explorers are powerful yet easy-to-use tools for working with files consistently across Windows Vista. Explorers give us more information and control while simplifying how we can work with our files. The experience is easy and consistent, whether we are browsing photos on documents or even using the new control panel. Key Elements of the Explorers in Windows Vista are designed to help us get to the information we need, when we need it. Instant Search is always available to help us find files instantly. The navigation pane contains the new search folders found in Windows Vista, as well as traditional folders that we have created on our computer. Command Bars display only the tasks that are most appropriate to the files being displayed. With new Live Icons (Scalable thumbnails) used throughout Windows Vista, we can see the first page of documents, the actual image of a photo, or the album art for individual songs in our music collection, making it easier to find exactly what we are looking for.

Abhay P.S. Sengar.
Eleventh 'B'

Extra Knowledge

i) What is 'intellipedia'?

Similar to the open source online encyclopaedia, wikipedia, intellipedia is a product for the espionage (the practice of employing spies) community, which was unveiled by John Negroponte, widely known as the US intelligence czar (king). It will allow officials and intelligence analysts to add and edit content, much like users do with wikipedia, on the the US governments interlink web. since its launch on April 17, 2006, intellipedia has about 3600 registered users.

ii) Where are files and websites on the internet stored?

The internet is the collection of a large number of client-server based systems. So, all files and other resources on it are stored on secondary storage devices of the respective servers. Servers of websites are termed as web servers. So when we type in a URL of a website in the address bar of our browser, it makes a connection to that web server which in turn fetches the data from the secondary storage device that they must be using and returns it to the respective browser. The same holds true for any other resources that we access on the internet.

iii) Why are there only 60 seconds in a minute?

A minute is a unit to measure both time and angles. A circle was divided into 360 degrees by ancient civilisations, probably Babylonians who figure everything in units of 10's and 60's instead of 10's and 100's as we do. The degree was divided into 60 parts and each of these parts was divided into 60 parts. The Romans called the first division of the degree "the partes minutae primal' or the first part. The second division they called 'the partes minutae secundaes' or second small parts. These terms were finally shortened to minutes and seconds.

Nishant

Xlth 'B'

|| How to call a winner from a loser ||

Winner

- A winner says "Let us find out"
- Where a winner makes a mistake, he says, "I was wrong"
- The winner says, "Let me do it for you."
- A winner makes a commitment
- A winner says, "I am good but not as good as I ought to be".
- Winner always has a programme.
- The winner says 'It may be difficult

Loser

- A loser says " No body knows"
- When a loser makes a mistake he says,"It was not my fault".
- The loser says, "That is not my job".
- A loser makes promise.
- A winner says, I am not bad as lot of other people
- Loser always has an excuse
- A loser says "It may be possible but it too difficult for me.

Rohan Kumar

7 'A'

Hanuman - The scholar

Hanuman, a minister of the monkey king sugriva in Valmiki Ramayana, accosted Rama and Lakshmana, assuming the guise of a bhikshu or mendicant. It is known what language or dialect he, as a monkey, employed while speaking with other members of his tribe. He was anyway well-versed in Sanskrit; his speech was at once gentle pleasing and propitious. Rama was greatly impressed by Hanuman's soft speech and has only praise for him. He tells Lakshmana that Hanuman has studied the vedic law thoroughly and extols him thus - "Hanuman is disciplined in Rigveda, has well memorised Yajurveda and is a scholar in Samaveda without a good training in all of which it is hardly possible for one to speak that way."

Hanuman was further complimented by Rama for being a good student of grammar. Rama says, "Indeed, Hanuman has studied the grammar in its entirety; We may recall Patanjali who, while listing the advantages of the study of grammar, says that it must be studied so that the use of corrupt forms is avoided. The use of the word *srutam* or heard here suggests that grammar was still handed down orally at the time of Ramayana.

Hanuman knew the *siksha* or phonetics which is evidenced by Rama's statement. He says, "No defect indicative of his inner feeling was seen either on his face, eyes, forehead or eyebrows."

Hanuman knew the best style of speech delivery. Rama tells Lakshmana thus : "There is in Hanuman's slowness no unnecessary speed; and he speaks in a level tone. Hanuman had acquired this proficiency through proper education and training. Slowness, speed, drawl, nasal twang are listed as defects in speech.

The use of the attributes *urastam* or residing in the heart and *Kanthagam* or going through the throat with reference to *vabyam* or speech suggests that whatever was in his heart was expressed by Hanuman, i.e. his inner feelings and outer expression were the same, not different, therefore, he is trustworthy, a level tone is known to be born of throat.

So we can say that Hanuman's speech was charming and all the three components, viz. bodily act, speech and mind's thought were in total harmony. His words would appease the mind of even an enemy with his sword drawn and with the intention of striking.

Shashank Tiwari
Eleventh 'B'

The Mango

Mango is well known and well liked fruit available all over india as well as various countries of the world.

There are many varieties found nationally and internationally. Mangoes are available mainly in the summer and rainy season. Nowadays due to horticulture, we can get mangoes in every season.

Raw Mangoes - Mangoes, when raw, are sour in taste. They are good appetite stimulants and also help in digestion of food. Juice obtained from boiled raw mangoes, mixed with required amount of sugar or sugar or jaggery and pinch of cardamom powder is useful as an appetizer and in sunstroke and nausea. it also proves useful in treating enlargement of spleen.

Powder of dried raw mangoes is commonly used to enhance the taste of food. A variety of pickles are made from raw mangoes. A sweet made from raw mangoes in sugar syrup is very tasty and is an appetite stimulant.

Ripe mangoes - the colour of mango changing from green to yellow or orange points to a ripened fruit. Ripe mangoes should be soaked in water for some time before using or keeping in refrigerator.

Some Uses of mango -

1. Mango with milk is very palatable. It stimulates the blood circulation. It also helps the nervous system and tones up the muscles.
2. Regular but limited use of mangoes helps in liver disorders, chronic stomach and intestinal disease, T.B. and piles.
3. Mango is rich in proteins and vitamins A and B, so it is a good tonic.
4. Mango taken with a little cardamom is useful for gaining weight and body development.
5. Mango applied in limited amounts, brightens the skin and makes the face smooth and fresh.

Excess use of Mangoes - This will lead to many ailments, namely indigestion, dull appetite, blood diseases, heaviness in abdomen, gastric trouble and heat disorders like boils. Those suffering from fever, cold, cough, asthma and diabetes should avoid use of mangoes.

It is advisable to eat small locally available, juicy mangoes as they are easily digestible and light on the stomach.

Mango seed - The seed obtained from inside the stone of mango when dried and powdered is useful in treating diarrhoea and dysentery in children. Mango seed when eaten after roasting keeps the intestines functioning normally.

So in essence we can point out that mangoes are very useful for health purpose. The mango tree is considered an auspicious tree and helps to keep the environment free from pollution.

Shashank Tiwari
Eleventh 'B'

Destruction of our nature and culture

Today in this modern world man has become selfish he has forgotten culture and nature. I think that after sometime man will probably lose his culture.

Today modern youth is running after money he never thinks that money will not be essential to live a perfect life. Modern generation is unable to choose his target. They want to join foreign companies because from there they get much money. Many people are attracted towards Western culture. If we lose our culture we will harm our future. Our culture has made our identity in world level. Many countries respect our culture we should try to save our culture.

Man is cutting trees for his own profit. Man never thinks that whatever work he does against nature totally destroys nature on one side we say that "Nature is our Heritage, It is a gift which is given by God." On another side we totally destroy nature. It is not good. so we should try to save our culture and protect our nature.

Ajay Singh Rawat

VIII 'A'

School

Some students go to school,
Just for a walk
while others go to,
Have a long talk
To use their head
while others go just to,
Eat their bread
Some go to the school,
to enjoy the games
While others go to,
Win the fame
Some go the school,
To create disturbance
While others go to,
Have full attendance
Some go to become,
The teacher's pet
While others go to,
Take rest
Some go to school to,
make friends
while others go to,
shake hands
some go to school,
Because of rules
While I go to,
Watch these fools.

Ankur Patel

8 'A'

Corruption : A great problem in India

Corruption is wide spread through out the world. No country can become ideal till corruption is there. The corruption has entered the Indian society too. It is destroying the indian society. We have lost our values for obtaining money by illegal means let us know what corruption is Corruption means engaging in illegal activities. Corruption is selfish exercise of powers by government officials. It is a selfish exercise of influence by politicians. Corruption has become one of the major problems in India.

Some one has truly said, "Corruption is mother of all evils." because of corruption the world has lost its idealism and It has become materialistic.

In a nutshell, people don't hesitate to adopt any way that leads to corruption but brings illegal money.

The Government must take serious steps in this regard. A person involved in corrupt practices should be punished with death sentence. Honest persons should be awarded. And above all, our politicians should present ideals before the common man.

May God bless our country !

Ankur Dixit
Eighth 'A'

A Little Knowledge Is Dangerous

Knowledge is necessary for a person. But a little knowledge is always dangerous. It has the tendency of turning the head of its owner. A poet says :

*Have a little,
It is no more a problem,
But little is always little
You can't draw more of it.*

A person with little knowledge lives in false world. A person with shallow attainments parades his knowledge. He thinks himself to be knowing all and he also develops the characteristics that no body knows more than what he knows. People say about him - An empty vessel makes much noise.

Example-suppose a person thinks that he is very good at business. But the results are contrary to it. He invests money and thus because of lack of knowledge to run a business he loses his invested money. In a nut shell, the fallacy of knowing in all the fields ruin him.

True knowledge is true power. It never deceives a person. Though little knowledge is not dangerous in itself, yet the results it may bring are really dangerous. It is not shameful to be with little knowledge but pretending for knowing more and acting likewise is always dangerous to a great extent.

Ankur Dixit
Eighth 'A'

Superstition

Superstition is not, as has been defined, an excess of religious feeling, but a misdirection of it is an irrational belief. If a European believes that he is superior to an Indian or a Chinese, he is irrational and so superstitious. If a pious Hindu thinks that a dip in the holy Ganges will wash off his sins (as if the sins are oozing from the pores of his body like beads of perspiration so that they will be washed off), he is superstitious and has no basis, whatsoever, in reason or common sense. It is often traditional - passed down to us by those who have gone before us to be transferred to those who will come after us.

Superstitions thrived in the past, primitive times, when mystery surrounded man on all sides and he could not rationally account for the various phenomena in nature he observed. In a mood of reverence, he invented numerous gods and goddesses and endowed them with super natural powers so that they might do or undo anything in their respective spheres. We, the children of this age of science, scoff at them, forgetting that we are not also immune from superstitions. It is, therefore, certain that wiser posterity may jeer at our practice and exclaim sorrow, what barbarians were our ancestors! Superstitious die hard, they are sent down the ages. Age is more fatalistic and superstitions than youth.

Every country has its own superstitions but it may be stated without fear of contradiction, that the east is more contemplative and, therefore, more superstitious than the west. Some superstitions, of course, are universally recognized. For instance, a shooting star is considered to be an extremely bad omen everywhere.

"When beggars die, there are no comets seen, Heavens themselves blaze forth the death of princes."

- Julius Caesar

By William Shakespeare,

"Both in England and India, the howling of the dog at night is supposed to indicate the presence of an evil spirit nearby."

Here are some of the more popular Indian superstitions. If one is about to start a journey and another person happens to sneeze once only, it is regarded as unfortunate. Strangely enough two, or three sneezes are harmless. So it is the logic (rather illogical logic) behind these superstitions. According to many Hindus, it is ominous to undertake a journey or commence a new task on Tuesday or Saturday. If a cat intercepts you when you start and rushes past you on the road you propose to take, it is believed that you must come to grief. The screech of an owl indicates dire calamity. This is how Coleridge's 'Christabel' begins,

"In the middle of the night by the castle clock and the owl has awakened the crowing cock, Tile-Whit! Tu-Whoo!"

If a man's right eye or right limbs throb, it is a sign of good luck, but if the left limb is throbbing, it is seen to bring misfortunes on him. Similarly itching in the right palm means more money for a male being. But if your whole body is itching, it is time to consult a good doctor.

The sight of a dead body or a full pitcher is deemed to be auspicious while one is travelling. If a crow or a vulture sits on a person's head, it is believed that the death of that person is imminent. There may be a reason (better say, fun) behind this superstition. As you know crows and vultures usually hover over dead bodies and, therefore, if a crow or a vulture happens to sit on one's head, some may conclude that the end of the man in question is near. It is also believed that the entry of iron in any form in the house on Saturdays is fraught with danger.

Certain superstitions are also prevalent in England. There are many in England who shun the number 13 as they shun a mad dog. They avoid, as best as they can, walking under a ladder which portends some sort of disaster. It seems that spilling of salt is considered bad both in England and India.

Then there are many superstitions based on ghosts and spirits. Some houses are not considered, fit for occupation because they are visited by ghosts. generally such houses are called haunted houses. Sometimes a traveller or an explorer may come across a haunted place or a haunted castle. The existence of such houses or places or castle is very doubtful.

What can be the sources of superstitions? Burke was right when he said, "Superstition is the religion of feeble minds. Indeed, as Hume tell us, "Weakness, fear, melanco'ly, together with ignorance, are the true souces of superstitions." The man in the street is the originator of superstitions.

Knowledge exposes its falseness and hypocrisy. But where as science has strangled the traditional superstitions, the 21st century is giving rise to so many other mistaken notions which may be called the modern superstitions.

Faith is Life, Doubt is Death.

Is the sea shore and the setting sun there close enough to witness the salty white waves washing the dark brown huge rocks on which stands a man? A man who is fed up of his life.

He is honest innocent and hard-working. His arms are stuffed with skill and dexterity and his brain is embedded with jewels of brilliant ideas.

Now the mist of despair and blur of tears have replaced the luster and shine of his eyes. Those tears rolling down his cheeks make the scene more pathetic But why has it happened this probably is the question to haunt the mind.

He is ashamed of himself, feels guilty, gives excuses but has still no faith, neither in the coming future nor in his biceps.

But is destiny everything again there is a doubt..... This situation can be termed as "Scylla and charybdis :

This is not a story. This is a fearsome and dreadful future of many of the precious jewels of the country. It is an alarm. It is a request to the present generation to blossom their heart with the feelings of faith puffed upto their lungs with an air of confidence.

Shivam Agrawal
XI - B

Contemplation : An occult Mystery.

"Success and failure is caused more by mental attitude than by mental capabilities."

- Walter Scott.

What, in real, life is. Perhaps a hypothesis. This hypothesis is not a newly discovered secret but has been supernatural gift from ancient eras.

After the dawn of civilization people started concentrating on the undisentangled mysteries of universe. The exploration of the secrets fired their animations. They become a keen observer with a razor edge mind. Their life was inspired by naturalism and they loved their environment. They gained enlightenment illimitably. They prepared armoured backgrounds for their progeny. They gifted expanded brain to their gennext.

After the time there were a lot of chances to make our earth beautiful and advanced to run with the race of developement. But the present generation has blunderly deviated from their way to run after materialism. Fall started from that time.

We have no time to think about nature and its mysteries because we have a burden of pressure. Students have no chance to grow thoughts and precepts of when we think about our brain we find that there are a lot of sites to be discovered till now. We can do this job clearly by SPECULATION, which is the real god gifted power of man. This is developed by the persons own thoughts and works. Eienstein once said-

"I have no particular talent, I am merely extremely inquisitive." And I think perhaps. no body in the world is unaware of his name. There is a clear reason for his success that he used to say -

"Imagination is more important than knowledge."

Newton was a keen observer. While taking breakfast in his garden he observed falling of an apple which led him to the top of success.

When we think about an incident we are on the way of developing our I.Q. and sharpening our mind.

Success is not dependent upon hard work only but also on smart manners and I.Q. The most successful persons in the world have high I.Q.

I.Q. gives a vision to our work and this assumption is the supermost powerful outcome of our brain. And then we will become the most successful personality in the world because -

"Every one is trying to accomplish something big not realizing that life is made up of little things."

- Frank K. Clark

So be a keen observer and taste the victory which is not the only thing but everything.

Sanjeev Kumar

XII 'B'

"A Motivation"

People who want to become best try their very best. If you try your best, you may not always come out on top but you will become close to it. On the other hand. If you think that you cannot do it, that you do not have the capabilities you will never accomplish anything of course what you are doing is important, but not as important as how you go about it your attitude should be one of becoming the best in whatever it is you are doing. Whatever you want to become a politician, a businessman artist or a scholar, try to become tops in your field. Do not become someone who is satisfied with just getting by set your aims at becoming No.1 and give it your everything for the harder you try, the better chances of success. I believe that everyone who is No.1 in his field got there because he aimed high and tried his best. Half hearted efforts never put anyone in a top position.

So I hope that all the youth brigade will strive to be the best in whatever we do. Do not even consider letting someone else top you. Conceding to someone else is not gracious, it is lowly, it is not sacrifice, it is inferiority in action. Do not settle for second best, and do not think that the top is too good for you. Make up your mind that the top spot is right fully yours, that it was made for you. Try your very, very best, & you will be rewarded.

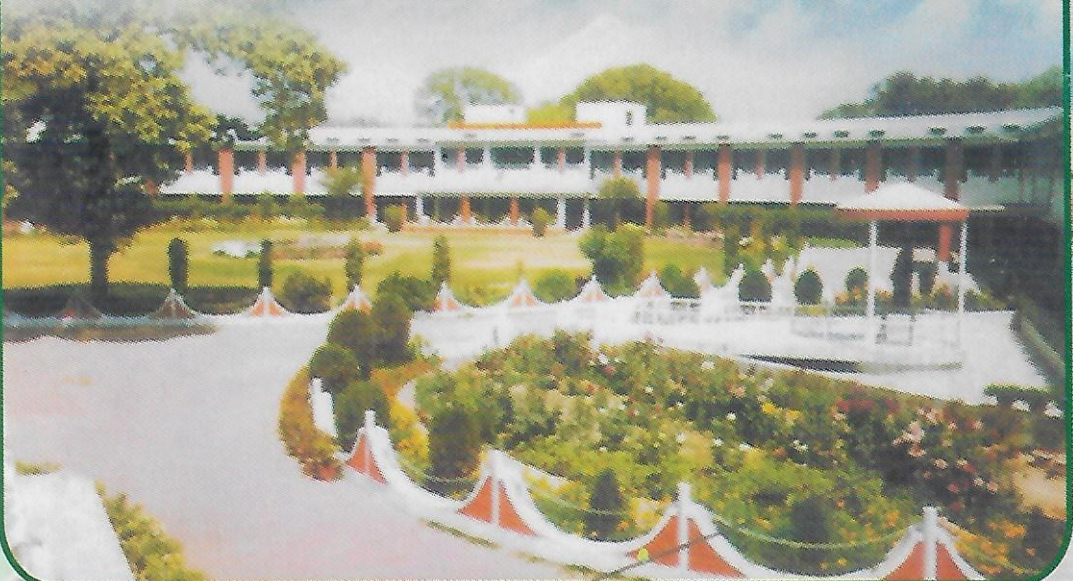
Vivek Joshi

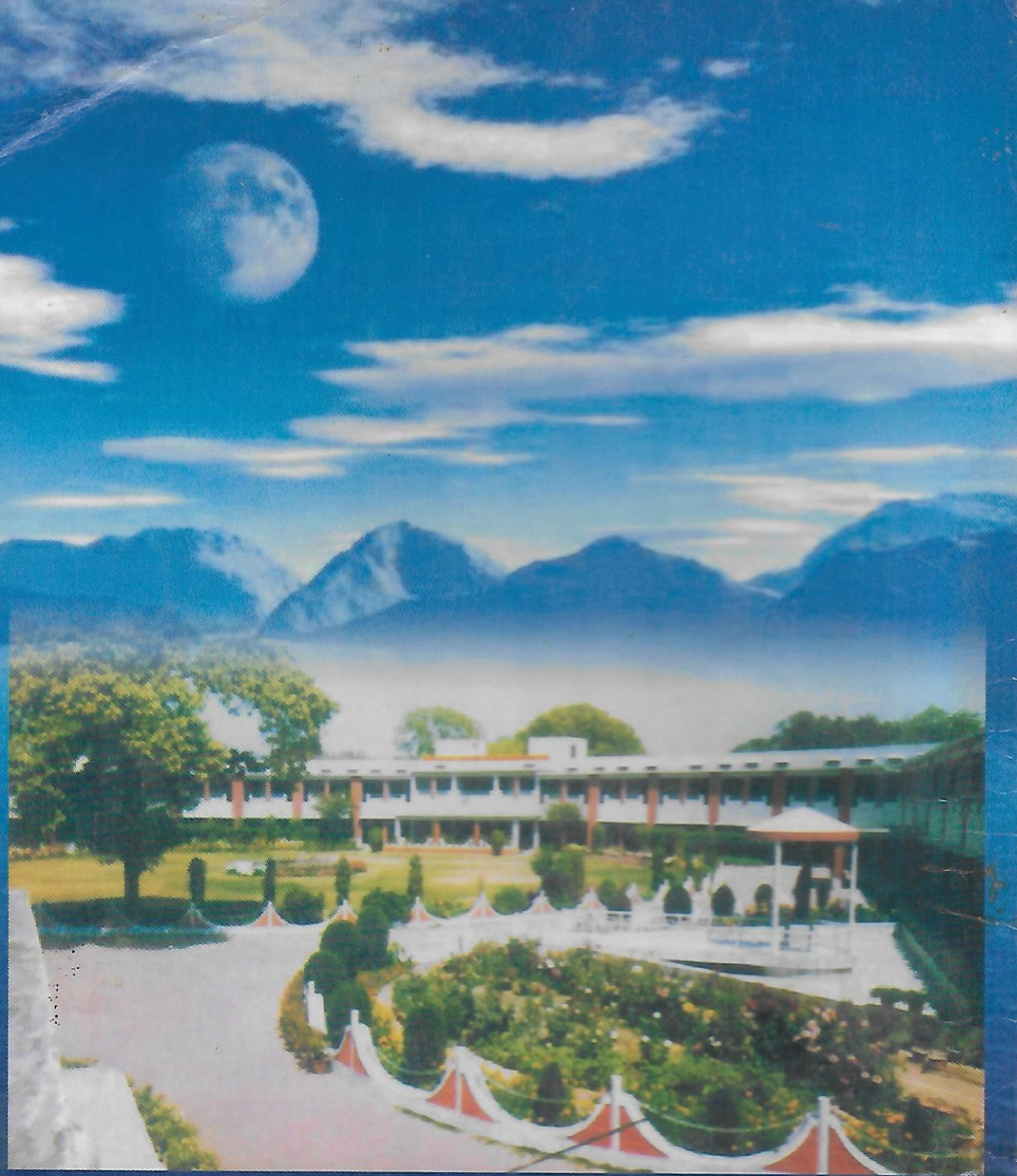
12th 'A';

Batch - 2006-2007

विद्यालय - प्रबन्ध - समिति

अध्यक्ष	डा० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल	अ० प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी	व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	श्री वीरेन्द्र जीत सिंह	चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट	कानपुर
सहमंत्री	श्री यतीन्द्र जीत सिंह	व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	पं० राम बालक मिश्र	अधिवक्ता	कानपुर
	डा० जग मोहन गर्ग	उद्योगपति	गाजियाबाद
	श्री ओम प्रकाश भार्गव	व्यवसायी	कानपुर
	श्री प्रेम चन्द्र गुप्त	व्यवसायी	कानपुर
	डा० देवेन्दु बहादुर सिंह	अ० प्रा० कर्नल	कानपुर
	डा० शंकर शरण श्रीवास्तव	शिक्षाविद्	जयपुर
	डा० योगेन्द्र भार्गव	अ. प्रा० अभियन्ता	कानपुर
	श्री तरुण विजय	पत्रकार	नई दिल्ली
	श्री ओम शंकर त्रिपाठी	प्रधानाचार्य	कानपुर
	दो शिक्षक प्रतिनिधि		





पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर